क्या मनुष्य एक यंत्र है?

अनुक्रम

1. मनुष्य एक यंत्र है..2
2. यांत्रिकता को जानना क्रांति है..17
3. जागरण के सूत्र...32
4. जाग जाना धर्म है..48

क्या मनुष्य एक यंत्र है? पहला प्रवचन

मनुष्य एक यंत्र है

एक छोटी सी कहानी से मैं अपनी चर्चा शुरू करना चाहूंगा।
अंधेरी रात थी, और कोई आधी रात गए एक रेगिस्तानी सराय में सौ ऊंटों का
एक बड़ा काफिला आकर ठहरा। यात्री थके हुए थे और ऊंट भी थके हुए थे। काफिले के मालिक ने खूंटियां गड़वाईं और ऊंटों के लिए रस्सियां बंधवाईं, ताकि वे रात भर विश्राम कर सकें। लेकिन खूंटियां गाड़ते समय पता चला, ऊंट सौ थे, एक खूंटी कहीं खो गई थी। खूंटियां निन्यानबे थीं। एक ऊंट को खुला छोड़ना कठिन था। रात उसके भटक जाने की संभावना थी।
उन्होंने सराय के मालिक को जाकर कहा कि यदि एक खूंटी और रस्सी मिल जाए, तो बड़ी कृपा हो। हमारी एक खूंटी और रस्सी खो गई है। सराय के मालिक ने कहाः खूंटियां और रस्सियां तो हमारे पास नहीं हैं। लेकिन तुम ऐसा करो, खूंटी गाड़ दो और रस्सी बांध दो और ऊंट को कहो कि सो जाए।
वह काफिले का मालिक बहुत हैरान हुआ। उसने कहाः अगर खूंटी और रस्सी हमारे पास होती, तो हम खुद ही बांध देते। कौन सी खूंटी गाड़ दें और कौन सी रस्सी बांध दें?
उस मालिक ने कहाः जरूरी नहीं है कि असली खूंटी से ही ऊंट बांधा जाए; नकली खूंटी से भी ऊंट बांधा जा सकता है। तुम एक झूठी खूंटी ही ठोक दो और तुम एक झूठी रस्सी ही ऊंट के गले पर बांधो और उससे कहो कि वह सो जाए।
कोई रास्ता न था, उन्हें विश्वास तो न आया कि यह बात हो सकेगी। लेकिन उन्होंने झूठी खूंटी गाड़ी जो खूंटी नहीं थी, उसके ऊपर उन्होंने चोटें कीं। ऊंट ने चोटें सुनीं और समझा होगा कि खूंटी गाड़ी जा रही है। और जो रस्सी नहीं थी, उससे उन्होंने ऊंट के गले को बांधा और उसके गले पर हाथ फेरा। ऊंट ने समझा होगा कि रस्सी बांधी जा रही है। और फिर उन्होंने जैसे और सारे ऊंटों को कहा था कि सो जाओ, उसको भी कहा। ऊंट बैठ गया और सो गया। सुबह जब काफिला रवाना होने लगा उस सराय से, तो उन्होंने निन्यानबे ऊंटों की खूंटियां उखाड़ीं और रस्सियां खोलीं। सौवें ऊंट की तो कोई खूंटी थी नहीं, न कोई रस्सी थी। इसलिए न तो उन्होंने खूंटी उखाड़ी और न रस्सी खोली। निन्यानबे ऊंट तो उठ कर खड़े हो गए लेकिन सौवें ऊंट ने उठने से इनकार कर दिया।
वे बहुत परेशान हुए। उन्होंने जाकर फिर उस सराय के बूढ़े मालिक को कहा
कि तुमने कौन सा मंत्र किया है, हमारा ऊंट तो जमीन में बंधा रह गया, वह उठ नहीं रहा? सारे ऊंट उठ कर जाने को तैयार हो गए हैं, लेकिन सौवां ऊंट जमीन नहीं छोड़ता है, बैठा हुआ है।
उस बूढ़े मालिक ने कहा सराय के, पहले जाकर उसकी खूंटी उखाड़ो और उसकी रस्सी खोलो। उन्होंने कहाः लेकिन न तो कोई खूंटी है और न रस्सी है। उस मालिक ने कहाः तुम्हारे लिए नहीं होगी, लेकिन ऊंट के लिए है। जाओ, खूंटी उखाड़ो और रस्सी खोल दो।
वे गए, उन्होंने उस झूठी खूंटी को उखाड़ा, जो कि नहीं थी और वे रस्सियां खोलीं, जिनका कोई अस्तित्व न था। ऊंट उठ कर खड़ा हो गया और बाकी साथियों के साथ चलने को तैयार हो गया।
वे बहुत हैरान हुए! और उन्होंने उस मालिक को पूछा कि यह क्या रहस्य है
इस बात का? उसने कहाः न केवल ऊंट बल्कि आदमी भी ऐसी खूंटियों से बंधे होते हैं जिनका कोई अस्तित्व नहीं है और ऐसी रस्सियों से परतंत्र होते हैं जिनकी कोई सत्ता नहीं है।
इन आने वाले चार दिनों में मैं उन खूंटियों कि थोड़ी सी आपसे बात करूंगा जिनसे मनुष्य-जाति बंधी हुई है। और उन रस्सियों की थोड़ी सी चर्चा करूंगा जिनके द्वारा हम परतंत्र हैं। और बड़े मजे कि बात यह है कि वह ऊंट ही उस रात गलती में नहीं रहा था हजारों साल से पूरी मनुष्य-जाति उस तरह की गलती में है। तो उन खूंटियों की चर्चा करूंगा और उन रस्सियों की जिनकी कोई सत्ता नहीं है, लेकिन मनुष्य का जीवन जिनके कारण परतंत्र है। और जिनके

कारण मनुष्य परमात्मा तक पहुंचने के लिए यात्रा नहीं कर पाता है। और जिनके कारण उसका जीवन जो हो सकता है वह नहीं हो पाता है, और जिनके कारण उसे जमीन पर घसीटना पड़ता है और सरकना पड़ता है, और आकाश की उड़ान उसके लिए संभव नहीं रह जाती।
उन खूंटियों की चर्चा इसलिए करूंगा कि यदि हम उन खूंटियों को समझ लें,
और उस परतंत्रता को समझ लें, और उन रस्सियों को पहचान लें जो कि हमारी गर्दन में बंधी हैं, तो शायद उसे खोलने के लिए और उन खूंटियों को तोड़ने के लिए और कुछ भी करना जरूरी नहीं होगा। उन्हें जान लेना ही, उन्हें पहचान लेना ही, उन्हें समझ लेना ही उनकी मृत्यु बन जाती है। इसलिए इस छोटी सी कहानी से मैं अपनी इन चार दिनों की चर्चाओं को शुरू करता हूं।
वे कौन सी परतंत्रताएं हैं जो मनुष्य के जीवन को सब ओर से घेरे हुए हैं? वे कौन से बोझ और पत्थर हैं जो उसकी आत्मा को ऊंचाइयों तक नहीं उठने देते और नहीं छूने देते? कौन उन परतंत्रताओं को निर्मित करता है? कोई और या कि मनुष्य स्वयं? कौन उन्हें बांधता है? कोई और या कि हम स्वयं?
एक दोपहर में एक जंगल में एक बहेलिए के साथ थोड़ी देर को रुका। उससे मैंने यह बात पूछी थी कि जिन तोतों को तुम पकड़ते हो, उन्हें तुम पकड़ते हो या कि तोते खुद तुम्हारे जाल में फंस जाते हैं? उस बहेलिए ने कहा था, मेरे साथ आओ और तोतों को पकड़ने की मेरी तरकीब समझ लो। उसने एक रस्सी बांध रखी थी दो दरख्तों के बीच में और उस रस्सी पर कुछ लकड़ियां बांध रखी थीं। तोते उन लकड़ियों पर आकर बैठते, उनके वजन से लकड़ियां घूम जातीं, तोते उलटे लटक जाते। वे उन लकड़ियों को इतने जोर से पकड़ लेते कि कहीं गिर न जाएं। गिरने के भय के कारण वे उन लकड़ियों को पकड़ लेते। और उनको छोड़ने की सामर्थ्य और साहस उनमें न रह जाता। वे लकड़ियां जिनमें वे बंधे हुए नहीं थे और जिनको छोड़ने से वे गिरने वाले भी नहीं थे, क्योंकि सैकड़ों बार उन्होंने आकाश में उड़ कर देखा था। और जिसके पास पंख हैं उसे गिरने का कोई भय नहीं होना चाहिए। लेकिन उन तोतों को भय था गिरने का। और वे उन लकड़ियों से बंध जाते थे जिनसे बिल्कुल बंधे हुए नहीं थे, और बहेलिया उनको पकड़ लेता था।
उसने मुझसे कहा कि देखें, ये तोते अपने हाथ से चिल्ला रहे हैं, अपने हाथ से बंधे हुए हैं और छूटने की साहस और छूटने की सामर्थ्य उनमें खो गई।
उस बहेलिए ने जो बात मुझसे कही कि तोते खुद अपने हाथ से फंस जाते हैं। असल में तो जो फंसने को राजी नहीं है उसे कोई फांस नहीं सकता और जो परतंत्र नहीं होना चाहता इस जमीन पर कोई उसे परतंत्र करने में समर्थ नहीं हैं। कहीं न कहीं हम खुद परतंत्र होना चाहते हैं, इसलिए परतंत्रता हमें पकड़ लेती है। और फिर परतंत्रता दुख लाती है, पीड़ा लाती है। क्योंकि आत्मा स्वभावतः स्वतंत्र है। और उसकी स्वतंत्रता में ही उसका आनंद है। और उसकी स्वतंत्रता में ही उसका आलोक है। और उसकी स्वतंत्रता में ही उसका संगीत है। लेकिन कुछ कारण हैं जिनकी वजह से हम खुद परतंत्र होने को राजी हो जाते है और फिर शायद परतंत्रता के इतने आदि हो जाते हैं कि स्वतंत्र होने का साहस, सामर्थ्य और विचार भी खो देते हैं।
ऐसी हालत करीब-करीब अधिकतम मनुष्यों की है। और जब तक हम इस बात को ठीक
से न समझ लें कि हम किसी बहुत मानसिक जाल में परतंत्र हैं और उस जाल को तोड़ने में समर्थ न हो जाएं तब तक हमारी आंखें उस सत्य के प्रति नहीं उठ सकेंगी, उस स्वतंत्रता के प्रति नहीं उठ सकेंगी, उस आलोक के प्रति नहीं उठ सकेंगी जो हमारे जीवन से अंधकार को मिटा दे, जो हमारे जीवन से अज्ञान को मिटा दे, जो हमारे जीवन से दुख का विनाश बन जाए, दुख की समाप्ति बन जाए। मैं उन तोतों पर उस दोपहर में हंसा था कि वे कितने नासमझ हैं, लेकिन
आज मैं अपनी भूल को स्वीकार करता हूं। हंसा था इसलिए कि उस समय तक मैं मनुष्य के मन को ठीक से नहीं जानता था। और जब मैंने मनुष्य के मन को ठीक से जाना, तो मैंने समझा कि तोते जो नासमझी करते हैं वह तो आदमी भी करते हैं, इसलिए तोतों पर हंसने का कोई कारण नहीं रह गया।
मछलियां पकड़ते हुए मछुओं को कभी देखा हो, जिस जाल में उन मछलियों को खींच कर वे किनारे पर रखते हैं। अगर उन मछलियों को देखें, उनमें से बहुत सी मछलियां जाल के धागों को अपने मुंह में पकड़े हुए दिखाई पड़ेंगी। कोई उन

मछलियों से पूछें कि जाल के धागों को क्यों पकड़ा है? कोई इसकी खोज-बीन करे, तो शायद उसे पता चले कि मछलियां जैसे ही जाल में पड़ती हैं अपने बचाव के लिए धागों को जोर से पकड़ लेती हैं ताकि वे धागों के सहारे हो जाएं, उन्हें खींचा न जा सके। लेकिन जिन धागों को वे पकड़ती हैं वे धागे उसी जाल के होते हैं जो उन्हें ऊपर खींच लेता है और बांध लेता है और उनकी मृत्यु बन जाता है।
हम सारे लोग भी उन धागों को पकड़े हुए हैं शायद इस सुरक्षा के लिए कि हम
बच जाएं, शायद इस सुरक्षा के लिए कि वे धागे हमारे सहारे हो जाएं। लेकिन जो भूल मछलियां करतीं हैं वही भूल हमसे भी हो जाती हैं। हम उन्हीं धागों को पकड़े हुए हैं जो कि जाल के हैं और उनको पकड़े होने के कारण हम उस जाल से छूटने में असमर्थ हो जाते हैं। लेकिन मछलियों के जाल दिखाई पड़ते हैं और तोतों के जाल भी दिखाई पड़ते हैं, आदमी के मन का जाल और भी सूक्ष्म है और दिखाई नहीं पड़ता। और जब तक हम उस जाल को ठीक से न देख लें, और ठीक से देख लेना इसलिए भी जरूरी है कि हो सकता है कि हम उसे स्वयं जाल ही न समझ रहे हों, हम समझ रहे हों कि वहीं हमारी स्वतंत्रता है, वही हमारी सुरक्षा है। तब तो और कठिनाई हो जाती है, और मुश्किल हो जाती है। कौनसा जाल हमारे चित्त को बांधे हुए है और हम परतंत्र हैं?
कुछ तीन बातें आज की संध्या आपसे कहूंगा इस संबंध में। पहली बातः जो
एक बहुत जटिल जाल की तरह मनुष्य को घेर लेती है और जिसका हमें कभी खयाल भी पैदा नहीं होता, और जिसके संबंध में हमें कभी विचार भी पैदा नहीं होता, और जिसके संबंध में कोई हमें चेताए तो शायद हम नाराज होंगे, हम उससे प्रसन्न भी नहीं होंगे। वह एक बहुत अजीब बात है, बहुत सीधी और सरल। लेकिन बहुत अजीब और वह यह है कि हम साधारणतः यंत्र की भांति जीते हैं, मशीनों की भांति। लेकिन हमको यह भ्रम होता है कि हम मनुष्य हैं और हम स्वतंत्र है। साधारणतः मनुष्य एक यंत्र की भांति जीता है। लेकिन वह सोचता है कि मैं यंत्र नहीं हूं, मैं आत्मा हूं। साधारणतः वह सोचता है कि मैं जो कर रहा हूं मैं कर रहा हूं, लेकिन सच्चाई यह है कि हमसे कर्म होते हैं हम उन्हें करते नहीं। यदि हम कर्मों को करने में समर्थ हो जाएं तो हम स्वतंत्र हो जाएंगे। लेकिन हम कर्मों को करने में स्वतंत्र नहीं। हम करीब-करीब उसी तरह यंत्र चालित हैं जैसे कोई बटन को दबा दे और बिजली जल जाए, कोई मोटर को चला दे और मोटर चल जाए।
हमारा जीवन भी बाहर से अनुप्रेरित है, बाहर कुछ घटनाएं घटती हैं और हमारा जीवन भी उनके अनुसार ही उनकी प्रतिक्रिया में, रिएक्शन में संचालित हो जाता है। एक आदमी आपको धक्का दे देता है आप कहते हैं कि धक्का उसने मुझे दिया तो मुझे क्रोध आ गया, लेकिन क्या कभी आपने सोचा है ये क्रोध के करने वाले आप हैं या क्रोध उसी तरह यंत्र की भांति पैदा होता है जैसे बटन के दबाने से बिजली जल जाती है। धक्का देने पर क्रोध का पैदा होना बिल्कुल मैकेनिकल, बिल्कुल यांत्रिक है। उसमें आपने कुछ किया नहीं है। यह कहना भूल है कि मैंने क्रोध किया, यही कहना उचित है कि मुझमें क्रोध जागा है, करने का भ्रम बहुत खतरनाक है। आप कहते हैं, मुझे फलां व्यक्ति से प्रेम है। लेकिन शायद ही कभी आपने सोचा होगा कि प्रेम आप कर रहे हैं या कि प्रेम हो गया है? आप प्रेम के करने वाले हैं या कि एक मशीन की भांति संचालित हो गए हैं? और आपके द्वारा प्रेम हो रहा है।
बुद्ध एक गांव के पास से निकलते थे, कुछ लोगों ने उनके ऊपर पत्थर फेंके और उन्हें गालियां दीं और अपमानित किया। बुद्ध ने उन मित्रों से कहा, मुझे दूसरे गांव जल्दी जाना है, अगर तुम्हारी बात पूरी हो गई हो, तो मैं जाऊं? या तुम्हारे पत्थर अगर तुम्हें और फेंकने बाकी हों तो मैं थोड़ा और रुकूं। लेकिन ज्यादा देर मैं न रुक सकूंगा, दूसरे गांव मुझे जल्दी पहुंचना है। उन लोगों ने कहाः हमने न तो कोई बातें कहीं हमने तो स्पष्ट ही अपमान किया है और गालियां दी हैं और हमने पत्थर फेंके हैं, लेकिन क्या आपको यह दिखाई नहीं पड़ता कि ये गालियां हैं, अपमान है? और आपकी आंखों में कोई क्रोध दिखाई नहीं पड़ रहा है।

बुद्ध ने कहाः अगर दस वर्ष पहले तुम आए होते, तो तुम मुझे क्रोधित करने में समर्थ हो जाते, क्योंकि तब मैं था ही नहीं, तब मेरे भीतर सारी क्रियाएं यांत्रिक थीं। मुझे कोई गुदगुदा देता तो मुझे हंसी आती, और मेरा कोई आदर करता तो मैं प्रसन्न होता, और मुझे कोई गालियां देता तो मैं अपमानित होता। ये सारी क्रियाएं बिल्कुल यंत्र की भांति होती हैं, मैं इनका मालिक नहीं। लेकिन तुम थोड़ी देर करके आए हो, अब मैं अपना मालिक हो गया हूं। अब कुछ भी मेरे भीतर होता नहीं, जो मैं करना चाहता हूं वही होता है। जो मैं करना चाहता हूं वही होता है। जो मैं नहीं करना चाहता अगर वह मेरे भीतर होता हो तो उसे कर्म नहीं कहा जा सकता, वह एक्शन नहीं है, वह रिएक्शन है, वह प्रतिक्रिया है, प्रतिकर्म है।
हमारे जीवन में सब प्रतिक्रियाएं हैं, हमारे जीवन में कोई कर्म नहीं है। और जिसके जीवन में प्रतिक्रियाएं हैं कर्म नहीं है उसके जीवन में कोई स्वतंत्रता संभव नहीं हो सकती, वह एक मशीन की भांति है, वह अभी मनुष्य नहीं है। क्या आपको कोई स्मरण आता है कि आपने कभी कोई कर्म किया हो, कोई एक्शन कभी किया हो जो आपके भीतर से जन्मा हो, जो बाहर की किसी घटना की प्रतिक्रिया हो, प्रतिध्वनि न हो? शायद ही आपको कोई ऐसी घटना याद आए जिसके आप करने वाले मालिक हो। और अगर आपके भीतर आपके जीवन में कोई ऐसी घटना नहीं है जिसके आप मालिक हैं, तो बड़े आश्चर्य की बात है, फिर बड़ी हैरानी की बात है। लेकिन हम सब सोचते इसी भांति हैं कि हम मालिक हैं, हम सोचते इसी भांति हैं कि हम कुछ कर रहे हैं, हम सोचते इसी भांति हैं कि हम अपने कर्मों के करने में स्वतंत्र हैं। जब कि हमारा सारा जीवन एक यंत्रवत, एक मशीन की भांति चलता है। हमारा प्रेम, हमारी घृणा, हमारा क्रोध, हमारी मित्रता, हमारी शत्रुता, सब यांत्रिक है, मैकेनिकल है, उसमें कहीं कोई कांशसनेस, कहीं कोई चेतना का कोई अस्तित्व नहीं। लेकिन इन सारे कर्मों को करके हम सोचते हैं कि हम कर्ता हैं।
मैं कुछ कर रहा हूं और यह करने का भ्रम हमारी सबसे बड़ी परतंत्रता बन जाती है। यही वह खूंटी बन जाती है जिसके द्वारा फिर हम कभी जीवन में स्वतंत्र होने में समर्थ नहीं हो पाते। और यही वह वजह बन जाती है कि जिसके द्वारा कभी हम अपने मालिक नहीं हो पाते। शायद आप सोचते हों कि जो विचार आप सोचते हैं उनको आप सोच रहे हैं, तो आप गलती में हैं। एकाध विचार को अलग करने कि कोशिश करें, तो आपको पता चल जाएगा कि आप विचारों के भी मालिक नहीं हैं। वे भी आ रहे हैं और जा रहे हैं जैसे समुद्र में लहरें उठ रहीं हैं और गिर रही हैं। जैसे आकाश में बादल घिर रहे हैं और मिट रहे हैं। जैसे दरख्तों में पत्ते लग रहे हैं और झड़ रहे हैं। वैसे ही विचार भी आ रहे हैं और जा रहे हैं, आप उनके मालिक नहीं हैं।
इसलिए विचारक होने का केवल भ्रम है आपको, आप विचारक हैं नहीं। विचारक
तो आप तभी हो सकते हैं जब आप अपने विचारों के मालिक हों। लेकिन एक विचार को भी अलग करने की कोशिश करें तब आपको पता चलेगा कि वह अलग होने से इनकार कर देगा। और तब आपको अपनी असमर्थता और कमजोरी का बोध होगा। और तब शायद आप समझेंगे। जैसे सांझ पक्षी वृक्ष पर आकर डेरा ले लेते हैं वैसे ही चारों तरफ उड़ते हुए विचार भी आपके मन पर बसेरा कर लेते हैं। लेकिन आप उनके मालिक नहीं हैं। और क्या कभी आपको खयाल आया कि एकाध विचार आपके भीतर भी पैदा हुआ हो, कोई एकाध विचार आपका भी है, या कि सब विचार दूसरों के हैं और उधार हैं? अगर आपके भीतर कभी भी एक विचार का जन्म न हुआ हो जिसको आप कह सकें यह मेरा है, तो आप निश्चित जान लें, ये विचार जो आपको अपने मालूम होते हैं आपके नहीं हैं सब उधार हैं और सब बाहर से आए हुए हैं।
न तो कर्म हमारे हैं, वे यांत्रिक हैं। और न विचार हमारे हैं, वे संगृहीत हैं। और इन्हीं कर्मों और इन्हीं विचारों के कारण हम अपने को कर्ता और विचारक समझ लेते हैं। और जो ऐसा समझ लेता है वह यहीं रुक जाता है और उसकी आगे की यात्रा बंद हो जाती है।
ये दो बातें पहले सूत्र में जान लेनी जरूरी हैं, कि न तो कर्म और न विचार हमारी मालकियत है, हमारी ताकत उस पर जरा भी नहीं हैं।

एक रात एक होटल में एक नया मेहमान आकर ठहरा, ठहरते समय होटल के मालिक
ने उसको कहा, मित्र, कहीं और ठहर जाएं, इस होटल में एक ही कमरा केवल खाली है वह हम आपको दे सकते हैं, लेकिन उसमें थोड़ी कठिनाई और अड़चन है। उसके नीचे जो मेहमान ठहरा हुआ है अगर आप थोड़े ऊपर हिले-डुले भी, थोड़ी आवाज भी हो गई, तो उससे झगड़ा हो जाने की संभावना है। पहले भी जो लोग उस कमरे में ठहराए गए हैं उनसे नीचे के मेहमान का झगड़ा हो गया। और इसलिए जब तक नीचे का मेहमान ठहरा हुआ है हमने तय किया है कि ऊपर के कमरे को खाली रखें। उस नये अतिथि ने कहाः कोई संभावना नहीं है कि मेरा उनसे झगड़ा हो जाएं, दिन भर मैं काम में व्यस्त रहूंगा रात लौटूंगा, दो-चार घंटे सोकर सुबह ही मुझे अपनी यात्रा पर आगे निकल जाना है। इसलिए कमरा दे दें, कोई चिंता झगड़े की न करें।
कमरा दे दिया गया। वह मेहमान दिन भर गांव में काम करके रात लौटा, कोई बारह बज गए होंगे, वह थका-मांदा आया, उसे नीचे के मेहमान का कोई खयाल भी नहीं रहा, वह आकर बिस्तर पर बैठा, उसने अपना जूता खोल कर जूता नीचे पटका। जूते की आवाज जैसे ही फर्श पर हुई, उसे खयाल आया, कहीं नीचे के व्यक्ति की नींद न खुल जाए। उसने दूसरा जूता आहिस्ता से खोल कर चुपचाप रख दिया और सो गया। कोई दो घंटे बाद नीचे के आदमी ने आकर उसका दरवाजा भड़भड़ाया। वह नींद से उठा, परेशान हुआ कि सोते में मुझसे क्या भूल हो गई होगी? उसने दरवाजा खोला। नीचे के मेहमान ने कहाः महानुभाव, आपका एक जूता तो गिरा तो मैंने समझा कि आप आ गए हैं, लेकिन दूसरे जूते का क्या हुआ? मेरी नींद खराब कर दी। मैंने बहुत कोशिश की कि मुझे किसी के जूते से क्या लेना-देना? मैंने इस विचार को निकालने की बहुत कोशिश की कि मुझे क्या मतलब है कि किसी के दूसरे के जूते का क्या हुआ, क्या नहीं हुआ? कुछ भी हुआ हो। लेकिन जितना ही मैं इस विचार को निकालने की कोशिश करने लगा उतनी ही मुसीबत में पड़ गया। मेरी सारी नींद धीरे-धीरे उड़ गई और मुझे आपका दूसरा जूता हवा में लटका हुआ दिखाई पड़ने लगा, क्योंकि वह गिरा नहीं! मैंने उस जूते को हटाने की बहुत कोशिश की अपने मन से, लेकिन मैं आंख बंद करता और आपका जूता मुझे लटका हुआ दिखाई पड़ता। और मेरे मन में खयाल आता उस दूसरे जूते का क्या हुआ? आखिर कोई रास्ता न देख कर मैं आया हूं आपसे पूछने, क्षमा करें, क्योंकि नींद आपकी मैंने तोड़ी, लेकिन सिवाय इसके कोई रास्ता नहीं था कि दूसरे जूते के संबंध में मेरी जिज्ञासा समाप्त हो जाए, तो मैं जाकर निश्चिंतता से सो सकूं। उसने कहा कि मैंने बहुत कोशिश की उस दूसरे जूते के विचार को छोड़ने की, लेकिन उस विचार को हटाना संभव नहीं हुआ।
आप भी ऐसे बहुत से विचारों से परिचित होंगे जिनको हटाना संभव नही हुआ होगा। जिनको हटाने में आप समर्थ नहीं हो सकेंगे। तो क्या कारण है कि उन विचारों के मालिक होने का भ्रम हम अपने भीतर पैदा करें? कौन सी वजह है कि मैं समझूं कि वे विचार मेरे हैं और मैं उनका मालिक हूं? यदि मैं विचारों का मालिक हूं तो मैं जब चाहूं तब विचार बंद हो जाने चाहिए और जब चाहूं तब वे चलने चाहिए। और अगर मैं न चाहूं कि विचार चलें, तो मेरा मन शांत और पूर्ण मौन हो जाना चाहिए। कोशिश करके देखें, तो एक क्षण भी मौन होना संभव नहीं होगा। एक क्षण भी विचारों की धारा को रोकना आसान नहीं है। एक विचार को भी बाहर फेंक देना आसान नहीं है। सच्चाई तो यह है कि जिस विचार को आप बाहर फेंकना चाहेंगे उसी विचार से आपकी शत्रुता खड़ी हो जाएगी। और आप पाएंगे कि वह विचार बलपूर्वक आपके भीतर प्रवेश कर रहा है। और आप पाएंगे कि आप हार गए हैं और वह विचार जीत गया है। जिन विचारों को हम हटाना चाहते हैं वे लौट-लौट कर आ जाते हैं और इस बात की घोषणा करते हैं कि आप मालिक नहीं हो। लेकिन जिंदगी भर इस बात को सुनने और समझने के बाद भी हमको यह भ्रम बना रहता है कि अपने विचारों के हम मालिक हैं।
एक फकीर हुआ, नसरुद्दीन। वह एक सांझ अपने घर के बाहर निकल रहा था और
तभी उसने देखा कि जलाल नाम का उसका एक दूसरे गांव का मित्र उसके द्वार पर आकर खड़ा हो गया। नसरुद्दीन ने कहा कि जलाल, बहुत दिनों बाद तुम आए हो, तुम ठहरो घर पर मैं कुछ मित्रों से जरूरी मिलने जा रहा हूं। उनसे मिल कर मैं कोई तीन घंटे बाद वापस लौटूंगा। तब तुमसे मिल सकूंगा। या तुम्हारी मर्जी हो तो तुम भी मेरे साथ चले चलो, कुछ मित्रों से मिलना हो जाएगा और रास्ते

में तुमसे बातचीत भी होती रहेगी। जलाल ने कहा कि मेरे कपड़े धूल भरे हो गए हैं, रास्ते भर पसीने से मैं डूब गया हूं, इन कपड़ों को पहन कर किसी के घर जाना उचित न होगा। अगर तुम दूसरे कपड़े मुझे दे सको तो मैं उनको पहन लूं और तुम्हारे साथ चलूं। नसरुद्दीन ने अपने पास... उसके पास जो सबसे अच्छा कोट था, अच्छे कपड़े थे, वे अपने मित्र को पहना दिए और उनको पहना कर वह अपने गांव में जहां मिलने जाने को था वहां गया।
वह पहले घर में पहुंचा। उसने जाकर उस भवन के मालिक को कहा कि ये हैं मेरे मित्र, मैं इनसे परिचय करा दूं, ये हैं जलाल, मेरे बहुत पुराने मित्र हैं। और यह जो कोट और कपड़े पहने हुए हैं, ये मेरे हैं।
जलाल को बहुत परेशानी हुई होगी। बाहर निकलने पर उसने कहा कि तुम आदमी कैसे हो, इस बात को कहने कि क्या जरूरत थी कि कपड़े किसके हैं। इतना ही काफी था कि तुम मेरे बाबत बता देते, मेरे कपड़ों के संबंध में बताने कि कोई जरूरत न थी। और अब दूसरे घर में खयाल रखना, मेरे कपड़ों के बाबत कुछ भी कहने कि आवश्यकता नहीं।
नसरुद्दीन दूसरे मकान में पहुंचा, उसने जाकर कहाः ये हैं मेरे मित्र जलाल, इनसे मिलिए, रही कपड़ों की बात, सो कपड़े इनके ही हैं, मेरे नहीं हैं। जलाल तो बहुत परेशान हो गया। बाहर निकल कर उसने कहा कि तुम पागल तो नहीं हो, इस बात को बताने कि क्या जरूरत थी कि कपड़े मेरे हैं?
नसरुद्दीन ने कहा कि मैंने तो बहुत रोकने की कोशिश की, लेकिन यह विचार एकदम से मेरे भीतर घूमने लगा कि पहली दफे मैंने गलती कर दी है कह कर कि कपड़े मेरे हैं, तो भूल सुधार कर लूं और कह दूं के ये कपड़े इन्हीं के हैं। जलाल ने कहा कि देखो, बस अगले घर में इसकी कोई भी चर्चा उठानी उचित नहीं हैं। बिल्कुल कोई बात उठानी उचित नहीं हैं। न तुम्हारे, न मेरे। इनकी बात ही मत उठाना।
वे तीसरे घर में गए। नसरुद्दीन ने कहा कि ये रहे मेरे पुराने मित्र जलाल, रही कपड़ों की बात, सो उठाना बिल्कुल उचित ही नहीं है कि किसके हैं? बाहर निकल कर जलाल ने कहा कि अब मुझे तुमसे कुछ भी नहीं कहना है। लेकिन तुम आदमी कैसे हो? कपड़ों कि बात क्यों उठाई?
उसने कहाः मैंने तो बहुत अपने को रोका, लेकिन कठिनाई यह हो गई कि यह रोकने की कोशिश से ही सारी मुसीबत हो गई। रोकते-रोकते यह बात मेरे मुंह से निकल गई कि कपड़ों की बात उठानी उचित नहीं है, किसी के भी हों। और इसका एक ही कारण मुझे दिखाई पड़ता है और वह यह है कि मैं इस बात को रोकने की कोशिश कर रहा था।
जिस विचार को आप रोकने की कोशिश करेंगे आप पाएंगे कि वह बड़ी ताकत से उठना शुरू हो गया है। देखें और करें और पता चल जाएगा, जिन विचारों को हम निषेध करते हैं वे विचार बड़ा आकर्षण ले लेते हैं, उनमें बड़े प्राण आ जाते हैं, और वे बड़े बलपूर्वक हमारे भीतर उठना शुरू हो जाते हैं। लेकिन एक बात हमें इस घटना से जो खयाल आनी चाहिए वह नहीं आती, वह यह है कि विचारों के हम मालिक नहीं हैं। अगर हम मालिक होते तो हम कहते रुक जाओ और विचार रुक जाते और हम कहते चलो तो विचार चलते। लेकिन हम सभी को यह खयाल है कि मैं विचारक हूं, मैं सोचता हूं। हममें से कोई भी सोचता नहीं है, क्योंकि जो सोचेगा उसके जीवन में तो एक क्रांति घटित हो जाएगी। जो सोचेगा उसका तो जीवन बदल जाएगा। जो विचार करने में समर्थ हो जाएगा वह तो स्वतंत्र हो जाएगा। क्योंकि स्वतंत्रता और विचार करने की सामर्थ्य एक ही चीज के दो नाम हैं। यह भ्रम छोड़ दें कि आप विचार करते हैं। यह भ्रम बिल्कुल छोड़ दें कि आप विचार करते हैं, क्योंकि विचार अगर आप करते होते तो आपके जीवन में दुख और चिंता और तनाव खोजे से भी नहीं मिल सकते थे। कौन चाहता है कि दुखी हो? लेकिन वे विचार जो दुख देते हैं उनके ऊपर हमारी कोई मालकियत नहीं है। इसलिए उन्हें हम दूर करने में असमर्थ हैं। कौन चाहता है कि चिंतित हो? लेकिन चिंताएं हमें घेरती हैं और हम उन्हें दूर करने में असमर्थ हैं। कौन चाहता है कि तनाव से भरा रहे, अशांत रहे, पीड़ित रहे? कोई भी नहीं चाहता। अगर हम मालिक होते विचार के तो हम इन सारी बातों को कभी का विदा कर देते।
लेकिन हम मालिक नहीं हैं। और भ्रम हमें यह है कि हम मालिक हैं। ये भ्रम की

खूंटी हमारे जीवन को बहुत नीचे जमीन से बांध रखती हैं, ऊपर नहीं उठने देती। ये खूंटी बिल्कुल झूठी हैं, ये कहीं भी नहीं हैं। विचारक आप नहीं हैं और न हीं आप कर्ता हैं। लेकिन हमें यह भी खयाल है कि मैं कर रहा हूं। मैं यह कर रहा हूं, मैं वह कर रहा हूं। हमें न मालूम कितनी-कितनी बातों के करने के भ्रम हैं।
हमारी जिंदगी में जिन चीजों के हमारे करने का कोई भी संबंध नहीं है उनको भी हम कहते हैं।। मैं किसी से कहता हूं, मैं तुम्हें प्रेम करता हूं। क्या कोई आदमी कभी किसी को प्रेम कर सकता है? क्या आपके बस में है कि आप किसी को प्रेम कर सकें? और अगर आपसे कहा जाए कि फलां व्यक्ति को प्रेम करो, तब आपको पता चलेगा कि यह आपके बस में नहीं है कि आप प्रेम कर सकें। आप मुश्किल में पड़ जाएंगे अगर आपको किसी से प्रेम करने का आदेश दे दिया जाए। आप अपनी सारी ताकत लगा कर हार जाएंगे। और आप हैरान होंगे, जितनी आप कोशिश करते हैं प्रेम करने की उतना ही प्रेम दूर होता चला जाएगा। आपको पता चलेगा आपके हाथों में प्रेम बंध नहीं पाता है, आपकी बाहों में प्रेम बंध नहीं पाता है। आप प्रेम नहीं कर सकते हैं। अगर आपसे कहा जाए कि किसी पर क्रोध करो, तो क्या आप कोशिश करके क्रोध कर सकते हैं? अगर आप कोशिश करके क्रोध नहीं कर सकते हैं, तो फिर आपको यह भ्रम ही होगा कि मैं क्रोध करता हूं। अगर आपको मैं कहूं कि यह व्यक्ति सामने खड़ा है, इस पर क्रोध करिए, तो आप सारी कोशिश करके हाथ-पैर पटक कर हार जाएंगे। आंखों को कितना ही बड़ा करिए, हाथ-पैर कितने ही जोर से पटकिए, मुठ्ठियां बांधिए, लेकिन आप भीतर पाएंगे क्रोध का कोई पता नहीं है। आप मालिक नहीं हैं।। न क्रोध के, न प्रेम के, न घृणा के। ये सारी घटनाएं घटती हैं। जैसे आकाश से पानी गिरता है और हवाएं बहती हैं उसी तरह और इन सबके हम करने वाले बन जाते हैं और कहने लगते हैं मैं करता हूं। और जब हमें यह भ्रम पैदा हो जाता है कि मैं इनका करने वाला हूं, तब एक बड़ी मुश्किल खड़ी हो जाती है। जो कि झूठे भ्रम बंधन का कारण हो जाते हैं। और झूठे भ्रम एक नई मुसीबत पैदा कर देते हैं।
अगर आपको यह खयाल पैदा हो जाए कि मैं क्रोध करता हूं, तो थोड़े-बहुत दिनों में आपको यह भी खयाल पैदा होना शुरू हो जाएगा कि मैं चाहूं तो क्रोध पर विजय भी पा सकता हूं। तो आप कोशिश में लग जाएंगे क्रोध को दबाने की, क्रोध को मिटाने की, क्रोध को हटाने की। जब कि बुनियादी रूप से आपने कभी क्रोध किया ही नहीं था, आप कभी मालिक ही नहीं थे क्रोध के करने के, तो आप क्रोध को हटाने के मालिक कैसे हो सकते है? अगर आप क्रोध करने वाले होते, तो आप क्रोध को हटा भी सकते थे। अगर आप प्रेम करने वाले होते, तो आप प्रेम को हटा भी सकते थे। लेकिन न तो आप क्रोध करने वाले थे और न प्रेम करने वाले थे। यह भ्रम था। इसलिए इनको हटाने की बात भी व्यर्थ है, इनको आप हटा नहीं सकेंगे। कर्म जो हमें लगता है कि मैं कर रहा हूं वह हम करते नहीं बल्कि हमसे करा लिया जाता है। अचेतन प्रकृति यांत्रिक रूप से काम करती है और हम कुछ करते चले जाते हैं।
एक बच्चा जवान होता है और जवान होते से उसके भीतर सेक्स और काम का जन्म होता है, लेकिन सोचता वह यही है कि जिस लड़की को वह प्रेम कर रहा है, वह प्रेम कर रहा है, सोचता वह यही है, खयाल उसको यही होता है कि यह मैं कर रहा हूं। लेकिन बड़ी अचेतन, बड़ी अनकांशस शक्तियां हमारे भीतर काम करती हैं और वे हमें ढकेलती हैं एक दिशा में, धक्के देती हैं, और हम उसके साथ में चले जाते हैं। और हम सोचतें हैं कि यह हम कर रहे हैं। श्वास आती है और जाती है, लेकिन हम सोचते हैं, मैं श्वास ले रहा हूं। हम सभी यही सोचते हैं कि मैं श्वास ले रहा हूं। अगर मैं श्वास ले रहा हूं तब तो मौत असंभव हो जाएगी। क्योंकि मैं श्वास लेता ही चला जाऊंगा, मौत सामने आकर खड़ी रहेगी। लेकिन मैं श्वास लेना बंद न करूंगा, तो फिर क्या होगा, मौत को लौट जाना पड़ेगा? लेकिन मौत आज तक नहीं लौटी। क्योंकि मौत जब आती है तब हमें पता चलता है कि श्वास हम ले नहीं रहे थे।। श्वास आ रही थी, जा रही थी। और यह हमारा भ्रम था कि हम ले रहे हैं। लेकिन यह भ्रम तभी टूटता है जब श्वास ही आनी बंद हो जाती है। यह श्वास के टूटने के साथ ही टूटता है।

जीवन भर हमें यही खयाल है कि मैं श्वास ले रहा हूं। यह खून जो आपकी नसों में बह रहा है, आप बहा रहे हैं? यह हृदय जो आपका धड़क रहा है, आप धड़का रहे हैं? यह जो नाड़ी में गति है, यह आप कर रहे हैं? नहीं, सब यंत्र की भांति हो रहा है, जिस पर हमारी कोई मालकियत नहीं है। यह हमारी स्थिति है कि न तो विचार हमारे हैं, न जीवन, न श्वास, न कर्म, लेकिन हम सभी को यह खयाल है कि ये हमारे हैं। और उस खयाल से बंध कर बड़ी कठिनाई हो जाती है। क्योंकि वह खयाल एकदम झूठा और मिथ्या है। लेकिन क्या मैं यह कहना चाहता हूं कि आपका कोई भी वश नहीं है? क्या मैं यह कहना चाहता हूं कि तब आप हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाएं और कुछ न करें? क्या मैं यह कहना चाहता हूं कि आप निराश हो जाएं? नहीं, बल्कि मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर आपको यह सारी बात दिखाई पड़नी शुरू हो जाए, अगर इस सारी बात की समझ, अंडरस्टैंडिंग, इस बात का होश आपमें पैदा हो जाए, तो आपके भीतर उस किरण का जन्म हो जाएगा जो विचार भी कर सकती है और कर्म भी कर सकती है। लेकिन इस बोध के द्वारा ही उस किरण का जन्म हो सकता है, जो आपको सचेतन जीवन दे सकती है, यांत्रिक जीवन से ऊपर उठा सकती हैं।
सबसे पहले... लेकिन इस यांत्रिक-स्थिति के प्रति जागरूक होना होगा।
इस यांत्रिक-स्थिति को पूरी तरह समझ लेना होगा, पहचान लेना होगा। इसका पूरा ऑब्जर्वेशन जरूरी है, इसका पूरा निरीक्षण जरूरी है। जीवन में निरीक्षण हमारे बिल्कुल भी नहीं है। हम शायद कभी आंख खोल कर भी नहीं देखते कि जीवन में क्या हो रहा है? और यह जीवन क्या है? शायद हम पुरानी कथाओं को और पुरानी मैथोलॉजी को और पुराने चलते हुए अंधविश्वासों को पकड़ लेते हैं और खुद के जीवन का कोई निरीक्षण नहीं करते हैं। बचपन से हमें कह दिया जाता हैं कि देखो क्रोध मत करो, तो बच्चा शायद सोच लेता है कि मैं क्रोध कर रहा हूं इसलिए मेरे मां-बाप मुझसे कहते हैं कि क्रोध मत करो। उसे क्रोध करने का भ्रम पैदा हो जाता है। बचपन से हमें सिखाया जाता है अच्छे विचार करो, बुरे विचार मत करो।
छोटे-छोटे बच्चों को यह खयाल पैदा हो जाता है कि विचारों के हम मालिक हैं। अच्छा विचार करना या बुरा विचार करना मेरी ताकत है, मेरे बस में है। और फिर इन्हीं बचपन में पाली गई अंध-धारणाओं को हम जीवन भर ढोते हैं। लेकिन मैं आपसे यह निवेदन करूं, साधारणतः जब तक मनुष्य की आत्मा सचेतन न हो, जब तक मनुष्य का बोध जागरूक न हो, तब तक न तो कर्म उसके होते हैं, न विचार उसके होते हैं। जो आदमी सोया हुआ है उस आदमी की कोई ताकत नहीं हैं, सोए हुए आदमी का कोई वश नहीं है, उसकी कोई शक्ति नहीं है। वह बिल्कुल अशक्त, बिल्कुल नपुंसक है, उसके भीतर कोई सत्व नहीं है। सोया हुआ आदमी जैसे अपने मन के सपने नहीं देख सकता, जो भी सपने आते हैं वही उसे देखने पड़ते हैं। क्या कभी आपने यह सोचा कि आप अपने मन के सपने देख सकते हैं? क्या कभी आपने यह कोशिश की कि मैं अपने मन के सपने देखूं? क्या कभी आपने जो सपने देखना चाहे वहीं देखे? नहीं, सपने आते हैं; और जो आते हैं वहीं हमें देखने पड़ते हैं। क्योंकि सोया हुआ आदमी कुछ भी नहीं कर सकता। जैसे सोया हुआ आदमी सपने देखने में समर्थ नहीं है वैसे ही साधारणतः हम भी जीवन में सोए हुए लोग हैं। जिनका निरीक्षण जागा हुआ नहीं है, जिनका बोध जागा हुआ नहीं है, हम भी जीवन में कुछ भी करने में समर्थ नहीं हैं। और यह सबसे बड़ी भ्रांति है कि हम सोचते हैं कि हम करने में समर्थ हैं। और इस भ्रांति के कारण फिर सारे जीवन, सारे जीवन हम एक ऐसी दीवाल से सिर टकराते रहते हैं जिसका कोई फल नहीं हो सकता।
तो सबसे पहली और बुनियादी बात जाननी जरूरी हैः मनुष्य एक यंत्र है, जैसा कि मनुष्य है, वह एक यंत्र है। और उसकी कोई सामर्थ्य नहीं है।। न विचार पर और न कर्म पर। लेकिन यदि यह बोध हमारे भीतर पैदा हो जाए, तो यह बोध ही हमें यंत्र के ऊपर उठने का मार्ग बन जाता है।
मनुष्य यंत्र है, लेकिन यंत्र ही होने को आबद्ध नहीं है; चाहे तो एक सचेतन आत्मा भी हो सकता है। लेकिन उस होने की यात्रा में पहला कदम यह होगा कि वह जान ले। क्या आपको यह कभी खयाल है कि नींद में जब आपका सपना चलता हो, अगर आपको यह पता चल जाए कि यह सपना है, तो इसका क्या मतलब होगा? इसका मतलब होगा कि नींद टूट गई। अगर आपको यह पता चल जाए कि जो मैं देख रहा हूं वह सपना

है, तो इसका मतलब यह हुआ कि नींद टूट गई। अगर आपको यह पता चल जाए कि मेरी जिंदगी जो मैं जी रहा हूं एक यांत्रिक जिंदगी है, एक मैकेनिकल लाइफ है, तो आप समझ लेना कि आपकी जिंदगी में यांत्रिकता का समाप्ति का क्षण आ गया, आपके भीतर एक नई किरण का जन्म हो गया।
नींद में पता नहीं चलता कि मैं सपना देख रहा हूं, यही पता चलता है कि
जो देख रहा हूं वह सत्य है। यही नींद का सबूत है। यह पता चलता है कि जो मैं देख रहा हूं वह सत्य है। और जिस क्षण यह पता चल जाए कि जो मैं देख रहा हूं वह सपना है, झूठा है, आप जान लेना आपके भीतर जागरण शुरू हो गया है, आपने जागना शुरू कर दिया है।
इसलिए आज की चर्चा में मैं आपसे यही कहना चाहता हूं कि हमारी जिंदगी
एक यांत्रिक जिंदगी है। जिसमें हम बाहर के धक्कों पर जीते हैं। जिसमें हम बाहर के द्वारा संचालित होते हैं। जिसमें बाहर से कोई हमारे धागे खींचता है और हमारे प्राण उसी भांति गति करने लगते हैं। लेकिन ऐसी जिंदगी परतंत्र जिंदगी है। स्वतंत्र जीवन तो वह है जो भीतर से जीआ जाता है बाहर से नहीं।
गुरजिएफ नाम का एक फकीर कॉकेसस के एक गांव में ठहरा हुआ था। एक आदमी
ने आकर उससे ऐसे अपशब्द कहे, जो प्राणों में कांटों की भांति छिद जाएं। जितनी तीखी गालियां हो सकती थीं उस भाषा में उसने उपयोग की। गुरजिएफ ने बैठ कर सारी बात सुनी, सुनने के बाद उससे कहा कि मित्र, एक दफा सारी बातें फिर से दोहरा दो, हो सकता है कोई बात मैं ठीक से सुन न पाया हूं। उस आदमी ने कहाः ये बातें, ये बातें भी कोई फिर से दोहरा कर सुनी जाने की हैं? गुरजिएफ ने कहाः बहुमूल्य बातें तुम लाए हो और उनको कहने में बड़ी मेहनत कर रहे हो। तुम्हारी आंखों में आग जल रही है, तुम्हारे हृदय में भी आग होगी। और तुम बड़ा कष्ट उठा रहे हो और मैं उनको शांति से भी न सुन सकूं, यह तो बड़ी अशिष्टता होगी। लेकिन हो सकता है, तुम इतने क्रोध में हो और इतनी जल्दी में कि कुछ बातें मैं न सुन पाया हूं, तो तुम उनको फिर एक दफा दोहरा दो, ताकि मैं उनको ठीक से सुन लूं। रही उत्तर की बात, तो उत्तर मैं तुम्हें कल दूंगा। कम से कम चौबीस घंटा तो मुझे सोचने का मौका दो। और अगर मैं न आऊं तो तुम समझ लेना कि तुमने जो बातें कहीं थीं वे सही थीं। और अगर कोई बात गलत होगी, तो मैं आकर तुमको निवेदन कर दूंगा।
वह आदमी तो हैरान हुआ होगा। क्रोध की बातों के लिए कोई एक क्षण भी रुक
कर कभी सोचता है? कोई गाली देता और हमारे भीतर आग लग जाती है। क्या उसके गाली देने में हमारे भीतर आग लगने में क्षण भर का भी अंतराल, इंटरवल होता है? नहीं होता, उसने वहां गाली दी, हमारे भीतर आग लगनी शुरू हो गई। वैसे जैसे किसी ने आग लगा दी हो और लकड़ी जलना शुरू हो जाए। क्या क्षण भर का भी मौका होता है सोच-विचार का? नहीं होता है। और इसलिए तो हमारा सारा जीवन यांत्रिक है।। उसमें विचार का, जागरण का, बोध का क्षण भी नहीं है। चीजें बाहर घटती हैं और हमारे भीतर काम शुरू हो जाता है।
लेकिन गुरजिएफ ने कहा कि मैं कल आकर उत्तर दे दूंगा। वह कल गया, लेकिन
इस बीच चौबीस घंटे में वह आदमी बदल गया था जिसने गालियां दी थीं। क्योंकि जिसने हमें गालियां दी हैं, अगर हम गालियों का उत्तर न दें, तो उस आदमी के क्रोध के जीने में और आगे जीते रहने में कठिनाई हो जाती है। हम उसके सहारे नहीं रह जाते। उसकी आग और आगे जले इसकी गुंजाइश नहीं रह जाती। गुरजिएफ जब दूसरे दिन उसके पास गया, तो वह आदमी रोने लगा और उसने कहाः मैंने बहुत गलत बातें कहीं। गुरजिएफ ने कहा कि तुमने कहीं हों, मुझे पता नहीं, लेकिन कई बातें तुमने बड़ी सही कहीं थीं, उनके लिए धन्यवाद देने आया हूं। और जो बातें मुझे लगता है तुमने गलत कहीं थीं, उन पर मैं अभी और सोचूंगा, इतनी जल्दी क्या है। हो सकता है उनमें से भी कोई बातें सही मिल जाएं। और तुमने मुझ पर इतनी कृपा की, उसके लिए धन्यवाद देने आया हूं। क्योंकि मित्र तो प्रशंसा करने वाले मिल जाते हैं, लेकिन कोई दोष देखने वाला मुश्किल से मिलता है। तुम्हारी कृपा है, आगे भी कृपा जारी रखना। और जब भी मुझमें तुम्हें कोई भूलें दिखाई पड़ें, तो जरूर मुझे चेता देना।

यह आदमी सोच रहा है। हम सोच रहे हैं? हम जरा भी नहीं सोच रहे हैं। और हमारा अंधा क्रम ऐसा है कि हमें यह भी दिखाई नहीं पड़ता। इस अंधे क्रम में, इस अंधे रास्ते पर यह भी हो सकता है कि मैं आपको गाली दूं, लेकिन आप मुझे उत्तर न दे सकें। तो आप किसी और को उत्तर दें और आपको यह खयाल में भी न आए कि आप यह क्या कर रहे हैं?
एक आदमी अगर दफ्तर में काम करता हो और उसका मालिक उसे गाली दे दे और अपमान कर दे, तो मालिक के क्रोध का उत्तर कैसे दिया जा सकता है? वह क्रोध को पी जाएगा। क्रोध तो उठ आएगा भीतर, क्योंकि क्रोध न मालिक को देखता है और न किसी को देखता है। क्रोध तो भीतर जलने लगेगा। लेकिन साहस, सुरक्षा और बहुत से खयाल उसे भीतर दबा देंगे। वह क्रोध भीतर उबलता रहेगा। वह आदमी घर जाएगा। मालिक तो ताकतवर है। और जैसे नदी ऊपर की तरफ नहीं चढ़ सकती नीचे की तरफ बहती है, वैसे ही क्रोध भी नीचे की तरफ बहेगा। घर जाएगा, कमजोर पत्नी मिल जाएगी घर पर उसे, और कोई भी बहाना निकाल लेगा और कमजोर पत्नी पर टूट पड़ेगा, और उसे यह खयाल भी न आएगा कि यह जो क्रोध है, यह अंधा क्रोध, पत्नी से उसका कोई संबंध भी नहीं है। वह पत्नी पर टूट पड़ेगा। हो सकता है पत्नी को मारे या गालियां दे या अपमान करे। और पत्नी तो पति से क्या कह सकती है, उसे तो हमेशा सिखाया गया है कि पति है परमात्मा, इसलिए वह जो कहे सो सुनना और सहना। वह उस क्रोध को पी लेगी, लेकिन क्रोध भीतर जग जाएगा। और जैसे नदी नीचे की तरफ बहती है... उसका बच्चा जब स्कूल से लौट आएगा, तो कोई भी बहाना मिल जाएगा, और वह बच्चे को पीटना शुरू कर देगी। कमजोर है। बच्चे पर पत्नी का क्रोध निकलना शुरू हो जाएगा। और बच्चा क्या कर सकता है? मां के लिए कुछ भी नहीं कर सकता। हो सकता है वह अपनी गुड़िया की टांग तोड़ डाले या अपने बस्ते को पटक दे और स्लेट फोड़ दे।
ऐसा क्रोध अंधे की तरह बहता रहेगा। ऐसे हमारे सारे जीवन के भाव और विचार और भावनाएं और कर्म एक अंधे चक्कर में घूम रहे हैं।
इसे हमें सुन कर हंसी आती है, लेकिन आपने एक कहानी जरूर सुनी होगी, और
आप उसमें हंसे भी होंगे। और आपको कभी खयाल न आया होगा कि यह कहानी आपके बाबत है। एक सुबह एक राजा का दरबार भरा था, और एक आदमी आया, और उसकी आंख से खून बह रहा था, उसकी एक आंख फूट गई थी। और उस आदमी ने आकर राजा के दरबार में कहा कि महाराज मुझ पर बड़ा अन्याय हो गया है। रात मैं एक घर में चोरी करने घुसा, लेकिन अंधेरा होने की वजह से मैं भूल से दूसरे घर में चला गया, वह दूसरा घर जुलाहे का था, और जुलाहे ने अपने कपास पीटने के यंत्र को खिड़की पर ही टांग रखा था, वह मेरी आंख में लग गया और मेरी आंख फूंट गई। अब मैं बड़ी मुश्किल में पड़ गया हूं। इस जुलाहे ने मेरी आंख फोड दी। आप जुलाहे को बुलाइए और उसको सजा दीजिए, ताकि न्याय पूरा हो सके।
राजा ने कहाः फौरन जुलाहे को पकड़ कर लाया जाए। यह तो हद्द बुरी बात है,
यह बेचारा चोर अब क्या करेगा? इसकी आंख फूट गई! एक तो रात का इसका काम हमेशा था और अब एक आंख फूट जाने पर इसका क्या होगा? फौरन उस जुलाहे को दो सिपाही पकड़ कर ले आए। उस जुलाहे ने कहाः मेरे मालिक, कसूर तो मुझसे हो गया कि मैंने खिड़की पर अपना, अपना यंत्र टांग दिया, लेकिन आप देखिए कि मुझे दोनों आंखों कि जरूरत पड़ती है, कपड़ा सीते वक्त या कपड़ा बुनते वक्त मुझे दोनों तरफ दाएं-बाएं देखना पड़ता है। अगर मेरी एक आंख फोड़ दी गई, तो फिर कपड़ा बुनना मुश्किल हो जाएगा। तो ज्यादा अच्छा हो... मेरे पड़ोस में एक चमार रहता है और उसका काम ऐसा है जूता सीने का, कि एक आंख से भी चल सकता है, दो आंखों की कोई खास जरूरत भी नहीं है, तो उसको बुलवा कर आप एक आंख फोड़ दें। न्याय भी पूरा हो जाएगा। किसी को असुविधा भी न होगी। उस महाराजा ने कहाः बिल्कुल ठीक! इससे उचित और क्या हो सकता है? उस चमार को बुलवा लो और उसकी आंख फोड़ दो। उस चमार को बुलवा लिया गया और उसकी आंख फोड़ दी गई। न्याय संतुष्ट हो गया।
यह कहानी आपने सुनी होगी। नहीं सुनी होगी, तो मैं आपसे कहता हूं। और
यह कहानी आपको एकदम एब्सर्ड मालूम होगी, एकदम मूर्खतापूर्ण मालूम होगी कि वह महाराजा न मालूम पागल था या क्या था? इस तरह कहीं न्याय होता है? लेकिन मैं आपसे कहता हूं, वह पागल महाराजा हम सबके भीतर बैठा हुआ है। हम सब यही

कर रहे हैं, रोज यही कर रहे हैं। जो क्रोध किसी पर उठता है वह किसी और पर निकलता है, और न्याय पूरा हो रहा है। जो घृणा किसी पर पैदा होती है, वह कहीं बही जा रही है। और हमारी जिंदगी इसी पागल बादशाह की तरह न्याय कर रही है। और यह न्याय इसीलिए हुआ जा रहा है कि हम सोए हुए हैं। और अपने जीवन के प्रति जागे हुए नहीं हैं कि यह क्या हो रहा है? ये विचार क्या कर रहे हैं? ये कर्म क्या कर रहे हैं? ये हमसे क्या हो रहा है? इसका हमें तो कोई बोध नहीं है, कोई होश नहीं है, कोई जागरूकता नहीं है।
यह जीवन की स्थिति है।। यांत्रिकता और इस यांत्रिकता में चाहे कोई मंदिर जाता हो, चाहे कोई मस्जिद जाता हो, और चाहे कोई कुरान पढ़ता हो, चाहे गीता पढ़ता हो; कुछ भी न होगा, क्योंकि जो आदमी अभी अपने विचारों और अपने कर्मों के ऊपर सचेत नहीं है उसकी गीता और कुरान का पढ़ना खतरनाक सिद्ध होगा। आज नहीं कल वह गीता और कुरान के नाम से भी लड़ेगा और हत्या करेगा, मस्जिद और मंदिर के नाम से लड़ेगा और हत्या करेगा। उसका हिंदू होना खतरनाक है, उसका मुसलमान होना खतरनाक है। क्योंकि जो आदमी अंधा है उसका कुछ भी होना खतरनाक है। और वह जो भी करेगा उससे जीवन को दुख पहुंचेगा, पीड़ा पहुंचेगी, अशांति बढ़ेगी, युद्ध होंगे और हिंसा होगी। यह सारी दुनिया में हो रहा है। यह जो सारी दुनिया में हो रहा है, यह हिंसा और युद्ध और यह परेशानी इसके लिए कोई राजनीतिज्ञ जिम्मेवार हो ऐसा मत सोचना, और ऐसा भी मत सोचना कि कम्युनिस्ट जिम्मेवार है, और ऐसा भी मत सोचना कि अमरीका जिम्मेवार है। क्योंकि जब अमरीका नहीं था, तब भी युद्ध हो रहे थे जमीन पर, और जब कम्युनिस्ट नहीं थे, तब भी युद्ध हो रहे थे। पांच हजार सालों में पंद्रह हजार युद्ध हुए। कौन ये युद्ध कर रहा है? यह सोया हुआ, यांत्रिक आदमी युद्ध की जड़ में है, यह जो भी करेगा उससे हिंसा पैदा होगी और युद्ध पैदा होगा। और यह सोया हुआ आदमी जो भी बनाएगा उससे विनाश होगा।
इधर तीन सौ, चार सौ वर्षों की निरंतर मेहनत के बाद हमने एटम की खोज की,
और खोज का परिणाम यह हुआ कि अब हम तैयारी कर रहे हैं कि किस भांति हम सारे मनुष्य को समाप्त कर दें, किस भांति हम सारी दुनिया को नष्ट कर दें, इसकी तैयारी कर रहे हैं। हमने तैयारी पूरी कर ली। और किसी भी दिन आज या कल किसी भी दिन सुबह उठ कर आप पा सकते हैं कि दुनिया अपनी मौत के कगार पर आ गई और हम अपनी हत्या करने को राजी हो गए।
सोया हुआ आदमी और उसके हाथ में इतनी बड़ी ताकत, बेहोश आदमी, यांत्रिक आदमी, उसके हाथ में इतनी बड़ी ताकत बड़ी खतरनाक है। और ताकत कितनी है, उसका शायद आपको अनुमान भी न होगा। उतनी बड़ी ताकत आज तक जमीन पर आदमी के हाथों में नहीं थी, शायद यह ताकत होगी तो हम कभी बहुत पहले दुनिया को खत्म कर लिए होते। लेकिन अब हमारे पास ताकत आ गई है। कोई पचास हजार उदजन बम हमने तैयार करके संगृहीत कर रखे हैं। ये इतने ज्यादा हैं जितने कि मारने को आदमी ही नहीं हैं हमारे पास। आदमी कुल साढ़े तीन अरब हैं। साढ़े तीन अरब बहुत थोड़े लोग हैं। पच्चीस अरब आदमी मारे जा सकें इतने उदजन बम हमने तैयार कर लिए। कई कारणों से ऐसा किया होगा। हो सकता है एक दफा मारने से कोई आदमी न मरे, तो दुबारा मारना पड़े, तीसरी बार मारना पड़े। हमने सात-सात बार एक-एक आदमी को मारने का इंतजाम कर लिया है ताकि कोई भूल-चूक न हो सके। यह जमीन बहुत छोटी है; इस तरह की सात जमीनें हम नष्ट कर सकतें हैं, इतना हमने इंतजाम कर रखा है।
शायद आपको खयाल भी न हो कि मनुष्य ने अपनी ही हत्या की योजना की होती
तो भी ठीक थी, उसका उसे हक था। आदमी अगर चाहे कि हम नहीं रहना चाहते, उसे रोकने के लिए कोई भी, कोई भी क्या कर सकता है। उसकी अपनी मौज है। लेकिन आदमी ने अपने साथ सारे कीड़े-मकोड़ों, पशु-पक्षियों, पौधों, सबके जीवन की समाप्ति का इंतजाम कर रखा है। आदमी के साथ सारा जीवन समाप्त होगा, सारा जीवन। वे छोटे-छोटे बैक्टिरिया भी समाप्त हो जाएंगे, जिनकी उम्र लाखों वर्ष होती, जिनको मारना बहुत कठिन होता, वे भी मर जाएंगे। क्योंकि आदमी ने जो ताकत इकट्ठी की उससे इतनी गर्मी पैदा होगी कि किसी तरह का जीवन संभव नहीं रह जाएगा। एक उद्जन बम के विस्फोट से कितनी गर्मी पैदा होती है आपको खयाल है? जमीन यहां से सूरज से कोई नौ करोड़ मील दूर है, लेकिन सूरज उतनी

दूर से हमको तपा देता है और परेशान कर देता है। और गर्मियों के दिनों में जरा सा करीब सरक आता है तो हमारी मुसीबत हो जाती है। उद्जन बम से जितनी गरमी सूरज पर है उतनी हम जमीन पर पैदा करने में समर्थ हो गए हैं। उतनी ही गरमी, नौ करोड़ मील दूर का सूरज हमें परेशान करता है, सूरज अगर आपके पड़ोस में आ जाएगा घर के बगल में तो क्या होगा? और आपके घर में आ जाएगा तो क्या होगा? शायद फिर भी आपको खयाल न पैदा हो कि यह गरमी कितनी है? सौ डिग्री हम गर्म करते हैं पानी को तो पानी भाप बन कर उड़ने लगता है। सौ डिग्री कोई गरमी नहीं है, बहुत कम गरमी है, लेकिन उबलते हुए पानी में आपको डाल दिया जाए तो क्या होगा? अगर हम पंद्रह सौ डिग्री तक गरमी पैदा करें, तो लोहा पिघल कर पानी हो जाएगा। लेकिन पंद्रह सौ डिग्री भी कोई गरमी नहीं है। अगर हम पच्चीस सौ डिग्री गरमी पैदा करें, तो लोहा भी भाप बन कर उड़ने लगता है। लेकिन पच्चीस सौ डिग्री भी कोई गरमी नहीं है। एक उदजन बम के विस्फोट से जो गरमी पैदा होती है वह होती है दस करोड़ डिग्री। और दस करोड़ डिग्री गरमी कोई छोटी-मोटी सीमा में पैदा नहीं होती, चालीस हजार वर्गमील में एक उदजन बम से चालीस हजार वर्गमील में दस करोड़ डिग्री गरमी पैदा हो जाती है। उस डिग्री में किसी तरह के जीवन की कोई संभावना नहीं है। यह किसने पैदा किया उदजन बम और किसलिए, यह पागल दौड़ किसलिए चल रही है?
पिछले महायुद्ध में हमने पांच करोड़ लोगों की हत्या की थी, अब हमने इंतजाम किया है सबकी हत्या का। यह कौन कर रहा है? यह आदमी कर रहा है। और आदमी कहता हैः हम विचारवान हैं। आदमी पर शक होता है, कैसा विचारवान है? यह आदमी कर रहा है और आदमी कहता है कि हम करने में समर्थ हैं, तो फिर युद्ध रोकने में समर्थ क्यों नहीं हो जाते हो? लेकिन हम जानते हैं कि हमारे बावजूद युद्ध करीब आता चला जाता है। पहला महायुद्ध खत्म हुआ और सारे दुनिया के विचारशील लोगों ने कहा थाः अब हम कभी युद्ध न करेंगे। लेकिन पंद्रह साल भी नहीं बीते थे कि दूसरे युद्ध की हवाएं उठनी शुरू हो गईं। दूसरा महायुद्ध हुआ, दोनों महायुद्धों में दस करोड़ लोगों की हत्या की। सारे दुनिया के विचारशील लोगों ने कहाः अब कभी हम युद्ध न करेंगे, यह बस अंतिम युद्ध है। लेकिन दूसरा महायुद्ध खत्म भी नहीं हो पाया था कि हमने तीसरे की तैयारियां शुरू कर दीं। यह आदमी विचारशील है? यह आदमी करने में समर्थ है? इसके अपने कर्मों पर इसका कोई वश है? बिल्कुल ऐसा नहीं मालूम होता।
आदमी बिल्कुल यंत्र की भांति चला जा रहा है। और अगर आगे भी दस-पंद्रह वर्षों तक यांत्रिकता की दौड़ यही रही तो यह भी हो सकता है सारी दुनिया समाप्त हो और मनुष्य के साथ जीवन भी समाप्त हो जाए। लेकिन इसे रोका जा सकता है। इसे रोकने के लिए सीधा कोई उपाय नहीं है, इसे रोकने का एक ही उपाय है और वह यह है कि मनुष्य अपनी यांत्रिक क्रियाओं में और विचारों में ज्यादा सचेत हो, ज्यादा कांशस, ज्यादा अवेयरनेस से भरा हुआ हो, ज्यादा बोधपूर्वक हो। अगर मनुष्य के भीतर बोध पैदा हो जाए, तो जीवन के जो भी रोग हैं उनके ठहरने की कोई जगह नहीं रह जाएगी, मनुष्य की बेहोशी में रोगों के ठहरने का स्थान। अगर आप होश से भर जाएं तो आप हिंदू नहीं रह जाएंगे, मुसलमान नहीं रह जाएंगे। अगर आप होश से भर जाएं, तो आप हिंदुस्तानी नहीं रह जाएंगे, पाकिस्तानी नहीं रह जाएंगे। अगर आप होश से भर जाएं, तो आप काले और गोरे के भेद को पकड़े हुए नहीं रह जाएंगे। अगर आप होश से भर जाएं, तो आपके जीवन में घृणा और क्रोध की कोई जगह न रह जाएगी। अगर आप होश से भर जाएं, तो आपके जीवन में प्रेम का जन्म होगा। एक परमात्मा का स्मरण होगा, एक धर्म का प्रारंभ होगा, एक प्रकाश पैदा होगा, वह न केवल आपको बदलेगा बल्कि उसकी रोशनी आपके आस-पास भी और घरों के अंधेरे को भी तोड़ने लगेगी। थोड़े से लोग भी अगर प्रकाश से भर जाएं और होश से भर जाएं, तो इस जमीन के भाग्य में एक नया सूर्योदय हो सकता है।
ये थोड़ी सी बातें मैंने आज आपसे कहीं, ज्यादा बात नहीं कही। मूलतः एक
ही बात कही कि मनुष्य यांत्रिक है और सोया हुआ है। और जो मनुष्य सोया हुआ है उसके जीवन में कोई आनंद नहीं हो सकता, दुख ही होगा। दुख स्वाभाविक है।

उसके जीवन में कोई शक्ति नहीं हो सकती, उसके जीवन में सत्य नहीं हो सकता, उसके जीवन में स्वतंत्रता नहीं हो सकती।
तो पहली खूंटी जो हम अपने बाबत बांधे हुए हैं।। विचार करने में हम समर्थ हैं? झूठ है यह बात। कर्म करने में हम मालिक हैं? झूठ है यह बात। ये दो झूठी खूंटियां और रस्सियां हमारे जीवन को घेरे हुए हैं। इनको तोड़ देना जरूरी है। ये कैसे टूटेंगी? ये निरीक्षण से और चित्त के प्रति जागरूक होने से टूट जाती हैं। उस जागरूकता के संबंध में मैं परसों रात की चर्चा में आपसे बात करूंगा। आज तो मैंने उस बीमारी की बात कही जिसमें हम हैं, परसों मैं उस संबंध में बात करूंगा जो हमें इस बीमारी के बाहर ले जा सकती है। आज तो मैंने उस स्वप्न के संबंध में कहा जिसमें हम हैं, परसों मैं उस सत्य के संबंध में कहूंगा जिसमें हम हो सकते हैं।
मनुष्य यंत्र है, लेकिन मनुष्य यंत्र ही नहीं है, यंत्र के ऊपर भी उसके भीतर कोई ताकत है। मनुष्य जड़ है अभी, लेकिन उसके भीतर आत्मा सोई हुई है वह जाग सकती है। और मनुष्य में अभी कोई विचार नहीं है, लेकिन उसके भीतर विचार का जन्म हो सकता है। वह कैसे हो सकता है? किस द्वार से और किस मार्ग से उसकी मैं परसों इस बारे में बात करूंगा।
आज की इस प्रारंभिक चर्चा को आपने बड़ी शांति और प्रेम से सुना उसके
लिए अनुगृहीत हूं। और अंत में एक प्रार्थना करता हूं, जो मैंने कहा उसे थोड़ा यहां से लौटने के बाद देखने की कोशिश करना कि मैंने क्या कहा।। अपने कर्मों के बाबत, अपने विचारों के बाबत।। उसे जरा सोचने की कोशिश करना कि मैंने क्या कहा? खुद के बाबत समझने की कोशिश करना कि कहीं यह सत्य तो नहीं है? और अगर यह सत्य दिखाई पड़ जाए, तो समझना कि आपके जीवन में क्रांति की शुरुआत आ गई, आपका जीवन बदलने का दिन आ गया। और अगर आपको दिखाई पड़े कि नहीं, यह सब गलत है और जैसा मैं जी रहा हूं बिल्कुल ठीक है, तो समझना कि आपने करवट ले ली और आप फिर सोने के लिए तैयार हो गए और फिर सपना देखने के लिए तैयार हो गए।
इस पर थोड़ा सोचना, इस पर थोड़ा विचारना। इस पर थोड़ा होश से भरने की कोशिश करना, मेरे कर्म, मेरे विचार कहीं यंत्र की भांति तो नहीं हो रहे हैं? अगर वे यंत्र की भांति हो रहे हैं, तो मुझे स्वयं को मनुष्य कहने का भी कोई अधिकार नहीं है। मनुष्य तो वही है जो सत्य को जानने में समर्थ है।

क्या मनुष्य एक यंत्र है? दूसरा प्रवचन

यांत्रिकता को जानना क्रांति है

मेरे प्रिय आत्मन्!
कल संध्या मनुष्य के संबंध में थोड़ी सी बातें मैंने आपसे कही। मैंने कहा कि मनुष्य एक यंत्र है, लेकिन इसका हमें कोई स्मरण नहीं है। मनुष्य का जीवन एक जाग्रत जीवन नहीं है, बल्कि सोया हुआ जीवन है, इसका भी हमें कोई स्मरण नहीं है। इस संबंध में कुछ प्रश्न पूछे गए हैं, उनकी मैं पहले चर्चा करूंगा, फिर कुछ और दूसरे प्रश्न हैं, उनकी आपसे बात करूंगा।
यह पूछा गया हैः मैं मनुष्य को यंत्र क्यों कह रहा हूं?
एक छोटी सी कहानी से आपको यह समझाना चाहूंगा।
एक सुबह एक गांव में बुद्ध का आगमन हुआ था। उन्होंने उस गांव के लोगों
को समझाना शुरू किया; सामने ही एक व्यक्ति बैठ कर अपने पैर का अंगूठा हिलाए जा रहा था, बुद्ध ने बोलना बंद करके उस व्यक्ति को कहाः मेरे मित्र, तुम्हारा अंगूठा क्यों हिलता है? तुम्हारा यह पैर क्यों हिलता है? जैसे ही बुद्ध ने यह कहा, यह पूछा कि तुम्हारा पैर क्यों हिलता है, उसके पैर का हिलना बंद हो गया। और उस व्यक्ति ने कहा, जहां तक मेरा सवाल है, मुझे इसका स्मरण भी नहीं था कि मेरा पैर हिल रहा है! आपने कहा, मुझे स्मरण आया और मेरा पैर रुक गया। मुझे खयाल भी नहीं था, बोध भी नहीं था कि मेरा पैर हिल रहा है। बुद्ध ने कहा, तुम्हारा पैर है, और हिलता है, और तुम्हें पता नहीं? तो तुम आदमी हो या यंत्र हो?
यंत्र हम उसे कहते हैं, जिसे अपनी गति का कोई बोध नहीं है। यंत्र हम उसे कहते हैं, जिसे अपनी गति का कोई बोध नहीं है। उसमें गति हो रही है, लेकिन उसे कुछ पता नहीं है। उसे कोई होश नहीं है, उस गति का। मनुष्य को मैंने यंत्र कहा इसलिए कि जो कुछ हममें हो रहा है न तो हमें उसका पता है कि वह क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है, और न ही हम उसके मालिक हैं कि हम चाहें तो वह हो, और हम चाहें तो वह न हो। कोई भी यंत्र अपना मालिक नहीं होता। आदमी भी अपना मालिक नहीं है। इसलिए उसे मैंने यंत्र कहा। आपके भीतर जब भय पैदा होता है, फीयर पैदा होता है, तब आप उसे पैदा करते हैं? या कि आप उसके मालिक होते हैं? या कि आप चाहें तो उसे पैदा न होने दें? या जब आप चाहें तब भय को पैदा कर लें? कुछ भी आपके हाथ में नहीं है। आप अपने ही हाथ में नहीं हैं। कितनी बार नहीं ऐसा मौका आता है कि हम कहते हैं, मेरे बावजूद यह हो गया, इंस्पाइट ऑफ मी। कितनी बार नहीं हम यह कहते हैं कि मैं तो नहीं चाहता था, फिर भी यह हो गया। अगर आप ही नहीं चाहते थे और आपके भीतर कुछ हो जाता है, इसका क्या अर्थ हुआ? इसका अर्थ हुआ आप अपने मालिक नहीं हैं। कोई यंत्र अपना मालिक नहीं होता। लेकिन मनुष्य तो अपना मालिक होगा। उसके जीवन में, उसके विचार में, उसके भाव में, वह स्वामी होगा, उसका अधिकार होगा। और यह स्वामित्व, यह मालकियत तभी उपलब्ध हो सकती है, जब उसे अपने जीवन की सारी क्रियाओं का बोध हो, अवेयरनेस हो। वह उसे जानता हो, पहचानता हो। न तो हम पहचानते हैं और न हम मालिक हैं।
एक गांव में एक महिला ने उस गांव में आए हुए एक फकीर के पास अपने बच्चे
को ले जाकर मौजूद किया और उस फकीर को कहा कि मेरा यह बच्चा रोज-रोज बिगड़ता जाता है। इसने सारी शिष्टता और सभ्यता छोड़ दी है, इसने सारे नियम तोड़ दिए हैं, हमारे परिवार के। इसे थोड़ा आप भयभीत कर दें, डरा दें, शायद ये ठीक हो जाए। उस फकीर ने इतनी बात सुनी, उसने जोर से आंखें निकाली, हाथ-पैर हिलाए और वह कूद के उस बच्चे के सामने खड़ा हो गया, जैसे उसकी जान ले लेगा। वह बच्चा तो इतना घबड़ा गया कि वह भागा। लेकिन फकीर कूदता ही गया और इतने जोर से चिल्लाया कि बच्चा तो भाग गया, उसकी मां बेहोश होकर गिर पड़ी। और जब उसकी मां बेहोश होकर गिर पड़ी, तो वह फकीर भी निकल भागा। थोड़ी देर बाद जब उस स्त्री को होश आया, तो उसने बैठ कर प्रतीक्षा की कि वह फकीर आ जाए, थोड़ी देर बाद वह फकीर भीतर लौटा। उस स्त्री ने कहा आपने तो हद कर दी, मैंने बच्चे को डराने को कहा था, मुझे डराने को नहीं कहा था।

वह फकीर बोला तू पूछती है, तेरी; माना कि तूने बच्चे को डराने को कहा था, लेकिन जब बच्चे को मैंने डराया, तो मुझे खयाल भी न था, कि तू भी डर जाएगी। तू क्यों डर गई? और जब तू डर गई, और तू बेहोश हो गई, तो मुझे पता भी नहीं था कि मैं भी डर जाऊंगा? तुझे बेहोश देख कर मैं भी डर गया और भाग गया। जब भय ने पकड़ा तो उसने बच्चे को ही नहीं पकड़ा, तुझे भी पकड़ लिया और मुझे भी पकड़ लिया। उस फकीर ने कहा सच्चाई यह है कि मुझमें भी चीजें घटित होती हैं, मैं भी उनका मालिक नहीं हूं, तू भी उनकी मालिक नहीं है, बच्चा भी उनका मालिक नहीं है। भय ने पकड़ लिया, उस पर हमारी कोई मालकियत न रही। और जब तू भी भयभीत हो गई तो मुझे भी खयाल न रहा कि यह क्या हो रहा है? मैं भी घबड़ा गया और मैं भी भयभीत हो गया और भाग गया।
जीवन में हमारे भय, क्रोध, घृणा, हिंसा, प्रेम वे सब घटित हो रहे हैं,
उन पर हमारा कोई काबू नहीं है। उनके प्रति काबू होना दूर हमें कोई होश भी नहीं है कि क्या हो रहा है? इसलिए मैंने कहा कि मनुष्य एक यंत्र है। लेकिन यह इसलिए नहीं कहा कि मनुष्य एक यंत्र है, तो बात समाप्त हो जाए, यहां बात समाप्त नहीं होती, यहीं बात शुरू होती है। मनुष्य यंत्र है, यह इसीलिए कह रहा हूं आपसे, किसी मशीन से जाकर यह नहीं कहता हूं कि मशीन! तुम मशीन हो। किसी यंत्र से भी जाकर नहीं कहता हूं कि यंत्र! तुम यंत्र हो। मनुष्य से यह कहा जा सकता है कि तुम यंत्र हो। क्योंकि मनुष्य यदि इस सत्य को समझ ले, तो यंत्र होने के ऊपर भी उठ सकता है। मनुष्य के भीतर यह संभावना है कि वह एक सचेतन आत्मा और व्यक्तित्व बन जाए। लेकिन यह एक संभावना है, यह एक सच्चाई नहीं है। यह हो सकता है, लेकिन यह है नहीं। एक बीज की यह संभावना होती है कि वह वृक्ष बन जाए, लेकिन बीज वृक्ष नहीं है। और अगर कोई बीज भूल से यह समझ ले कि मैं वृक्ष हूं तो फिर वह कभी वृक्ष नहीं बन सकेगा, उसकी संभावना भी समाप्त हो जाएगी। एक बीज को यह जानना ही चाहिए कि मैं बीज हूं, और वृक्ष नहीं। और इस बात को जानने के साथ ही, इस संभावना के द्वार भी खुल सकते हैं कि वह वृक्ष हो जाए।
मनुष्य एक बीज है, चेतना के लिए लेकिन अभी चेतना नहीं। अभी तो यंत्र है। और अगर इस सारी स्थिति को ठीक से समझ ले, यह अपनी सिचुएशन, यह उसकी चित्त की पूरी दशा, अगर उसे पूरी-पूरी स्पष्ट हो जाए तो इसी के स्पष्ट होने के साथ-साथ उसके भीतर कोई शक्ति जागने लगेगी, जो उसे मनुष्य बना सकती है। मनुष्य, मनुष्य की भांति पैदा नहीं होता, एक बीज की भांति पैदा होता है। उसके भीतर से मनुष्य का जन्म हो सकता है। लेकिन कोई भी मनुष्य, मनुष्य की भांति जन्मता नहीं है। और अधिक लोग इस भूल में पड़ जाते हैं कि वे मनुष्य हैं, और यही भूल उनके जीवन को नष्ट कर देती है।
जन्म के साथ हम एक पोटेंशियलिटी की तरह, एक बीज की तरह पैदा होते हैं, लेकिन हम उसी को समझ लेते हैं कि हमारा होना समाप्त हो गया, तो हम वहीं ठहर जाते हैं। बहुत कम लोग हैं जो जन्म के ऊपर उठते हों, और जन्म का अतिक्रमण करते हों। जन्म पर ही रुक जाते हैं। जन्म के बाद फिर उनमें कोई विकास नहीं होता। हां, यंत्र की कुशलता बढ़ जाती है, लेकिन यांत्रिकता के ऊपर उठने का कोई, कोई चरण, कोई कदम नहीं उठाया जाता। और वह कदम उठाया भी नहीं जा सकता, जब तक हमें यह खयाल ही पैदा न हो कि हम क्या हैं? इसलिए पहली बात जो मैंने कल आपसे कहनी चाही वह यही कि मनुष्य यदि यह अनुभव कर ले कि वह एक यंत्र है, तो वह मार्ग स्पष्ट हो सकता है, जिसकी यात्रा करने के बाद वह यंत्र न रह जाए। लेकिन हमारे अहंकार को इस बात से बड़ी चोट लगती है कि कोई हमसे कहे कि हम एक यंत्र हैं। मनुष्य के अहंकार को इससे बड़ी चोट लगती है कोई उससे कहे कि तुम एक मशीन हो।
मनुष्य को तो इस बात के सुनने में बहुत मजा आता है कि तुम एक परमात्मा हो। तुम्हारे भीतर भगवान वास कर रहा है, इस बात को सुनने में उसे बहुत मजा आता है, इसलिए वह मंदिरों में, मस्जिदों में इकट्ठा होता है, और उन लोगों के पैर पड़ता है, जो उसे समझाते हैं कि तुम तो स्वयं भगवान हो। उसे यह बात सुनकर बड़ा आनंद मालूम होता है कि मैं भगवान हूं। उससे कोई यह कहे कि तुम एक मशीन हो तो उसे बड़ी चोट लगती है, लेकिन कोई उससे कहे कि तुम एक भगवान हो, तो उसे बहुत आनंद मिलता है, उसके अहंकार की बड़ी तृप्ति होती है। उसके ईगो को

बड़ा सहारा मिलता है कि मैं भगवान हूं। लेकिन मैं आपसे कहना चाहता हूं इस सत्य को बहुत ठीक से समझ लेना जरूरी है कि जैसे हम हैं, वैसे हम भगवान तो बहुत दूर, मनुष्य भी नहीं हैं। जैसे हम हैं, भगवान होना तो बहुत दूर, हम मनुष्य भी नहीं हैं। हम बिल्कुल मशीनों की भांति हैं। हमारा सारा जीवन इस बात की कथा है। हमारे पूरे पांच-छह हजार वर्ष का इतिहास इस बात की कथा है कि हम एक मशीन की भांति जी रहे हैं।
जो भूल मैंने कल की थी, वही भूल मैं आज भी कर रहा हूं। जो भूल मैंने दस साल पहले की थी, वही भूल मैं दस साल बाद भी करूंगा। अगर एक आदमी आपके दरवाजे से निकलता हो, रोज एक ही गड्ढे में आकर गिर जाता हो, तो एक दिन आप क्षमा कर देंगे कि भूल हो गई, दूसरे दिन वह आदमी फिर आए और उसी गड्ढे में गिर जाए, तो शायद आप को भी संकोच होगा यह कहने में कि यह भूल हो रही है। लेकिन अगर वह तीसरे दिन भी उसी गड्ढे में गिर जाए, चौथे दिन भी, और वर्ष-वर्ष बीतते जाएं और रोज उसी गड्ढे में आकर वह आदमी गिरे, तो आप क्या कहेंगे? आप कहेंगे यह आदमी तो नहीं मालूम होता, कोई मशीन मालूम होती है; जो ठीक गड्ढे में रोज गिर जाती है, और उसी गड्ढे में; उसी भूल से रोज गुजरती है; और फिर भी इसके जीवन में कोई क्रांति नहीं होती, कोई परिवर्तन नहीं होता। जिस क्रोध को हमने हजार बार किया है, और हजार बार दुखी हुए हैं, और पछताएं हैं, वही हम आज भी कर रहे हैं।
भूल वही है, हम रोज उसे दोहरा रहे हैं। जिस घृणा से हम पीड़ित हुए हैं, उसे हमने बार-बार किया है, आज भी कर रहे हैं। जिस अहंकार ने हमें जलाया है, जिसने हमें चोट पहुंचाई है, उसको हम आज भी पकड़े हुए हैं। हर आदमी नई-नई भूलें थोड़े करता है, और न ही एक आदमी रोज नई भूलें ईजाद करता है, थोड़ी सी भूलें हैं, जिन्हें रोज दोहराता है। और रोज पछताता है। रोज निर्णय करता है कि नहीं, अब यह नहीं करूंगा। लेकिन उसके अगर हाथ में होता न करना तो उसने बहुत पहले करना बंद कर दिया होता। फिर उसे ही करता है, फिर पछताता है, फिर करता है, फिर पछताता है; कोई भी फर्क उसके जीवन में होता नहीं है। क्या बताती है यह बात? यह बताती है कि मनुष्य एक यंत्र है। अहंकार को इससे चोट लगती है। चोट लगेगी भी, क्योंकि जिसका अहंकार नहीं टूटता वह कभी यंत्र होने के ऊपर नहीं उठ सकता है। उसकी तो बात मैं कल रात्रि करूंगा। अभी तो मैं इतना कहना चाहता हूं कि इन कारणों से मैंने कहा कि मनुष्य एक यंत्र है।
और अगर आप सोचेंगे, खोजेंगे, निरीक्षण करेंगे, थोड़ा अपने जीवन पर विचार करेंगे, तो आपको कठिनाई नहीं होगी इस बात को तय कर लेने में कि आपने जो व्यवहार किया है, वह एक मशीन का व्यवहार है, वह एक आदमी का व्यवहार नहीं है। और अगर यह स्पष्ट हो जाए बहुत कि मैं एक मशीन की भांति जीता रहा हूं, तो जिसे यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि मैं एक मशीन की भांति जी रहा हूं, उसके जीवन में क्रांति की शुरुआत हो जाएगी। किसी बीमारी को ठीक से पहचान लेना, उससे आधा मुक्त हो जाना है। किसी बीमारी का ठीक-ठीक निदान आधा इलाज है। अगर यह समझ में आ जाए कि मैं एक यंत्र हूं, तो हमारे बहुत से भ्रम टूट जाएंगे, हमारे बहुत से अहंकार टूट जाएंगे, हमारा बहुत सा अभिमान टूट जाएगा। और शायद इस अहसास के बाद हमारे भीतर किसी क्रांति की शुरुआत हो सके! मनुष्य परमात्मा हो सकता है, लेकिन है तो मशीन। बीज वृक्ष हो सकता है, लेकिन अभी वृक्ष नहीं है। और जो भूल से इस बात को समझ लेगा, जो बीज कि मैं वृक्ष हो गया, उसकी वृक्ष तक की यात्रा असंभव हो जाएगी, क्योंकि वह इसी भ्रांति में जीने लगेगा, जिसे तोड़ना था, जिस भ्रम को वह उसी भ्रम को और स्थायी करने लगेगा। इसलिए मैंने कहा कि मनुष्य एक मशीन है।
लेकिन मनुष्य मशीन होने को पैदा नहीं हुआ है। मशीन होने से ही वह दुखी
और परेशान, और चिंतित है। मशीन होने के कारण ही उसके जीवन में अंधकार है। जीवन में पीड़ा, और चिंता, और अशांति है। और वह मशीन न रह जाए, तो शांति, और सत्य, और सौंदर्य का जन्म हो सकता है। वह मशीन न रह जाए तभी उसे स्वरूप का बोध हो सकता है, और अनुभव हो सकता है कि मैं कौन हूं? अभी तो वह यंत्र है इसलिए उसे कोई पता नहीं चल सकता कि मैं कौन हूं? और अभी तो वह कितना ही खोजे, और कितना ही शास्त्र पढ़े और कितना ही सिद्धांत सीख ले कि मैं कौन

हूं? और दोहराने लगे कि मैं आत्मा हूं, मैं परमात्मा हूं उसका यह दोहराना, उसका यह रिपीटीशन भी मैकेनिकल होगा, बिल्कुल झूठा होगा और यांत्रिक होगा। ऐसे लोगों को हम सब जानते हैं कि जो सुबह से बैठ कर यह दोहराते हैं कि मैं आत्मा हूं, मैं परमात्मा हूं, मैं ब्रह्म हूं, अहं ब्रह्मास्मि! और दोहराए चले जाते हैं, वर्षों तक। लेकिन उनके जीवन में इससे कोई परिवर्तन पैदा नहीं होता, और हो भी नहीं सकता। क्योंकि अगर यह पता चल जाए कि मैं ईश्वर हूं, तो इसे दोहराने की कोई जरूरत नहीं है, जिसे पता नहीं है कि मैं ईश्वर हूं, वही दोहराता है। अगर आप पुरुष हैं तो आप रोज सुबह उठ कर दोहराते नहीं कि मैं पुरुष हूं, मैं पुरुष हूं... अगर आप स्त्री हैं तो आप रोज दोहराते नहीं कि मैं स्त्री हूं, मैं स्त्री हूं... लेकिन अगर कोई पुरुष रोज सुबह उठ कर दोहराने लगे कि मैं पुरुष हूं, मैं पुरुष हूं तो आपको शक हो जाएगा कि ये पुरुष है या नहीं? इसका दोहराना इस बात की सूचना होगी कि यह जो बात दोहरा रहा है वह बात संदिग्ध है; इसके मन में खुद इसलिए दोहरा-दोहरा कर अपने मन को असंदिग्ध बनाना चाहता है। जो आदमी यह दोहराता है कि मैं आत्मा हूं, मैं ईश्वर हूं, मैं परमात्मा हूं, फलां हैं, ढिंका हैं, वह सब निपट झूठी बातें दोहरा रहा है, जिनका उसे कोई पता नहीं। अगर उसे पता हो जाए, तो दोहराने की कोई भी जरूरत नहीं रह जाती। और इस दोहराने से हमारी यांत्रिकता नहीं टूटती है, बल्कि और मजबूत होती है। और गहरी होती है। क्योंकि हमें यह खयाल ही मिट जाता है कि हम क्या हैं?
एक जादूगर ने बहुत सी भेड़ें पाल रखीं थीं। उस जादूगर ने उन भेड़ों को बेहोश करके, हिप्नोटाइज करके, सम्मोहित करके यह कह दिया था कि तुम भेड़ नहीं हो, उन भेड़ों को बेहोश करके उस जादूगर ने उनके कान में कह दिया कि तुम भेड़ नहीं हो। इसके पहले भेड़ें हमेशा भयभीत रहती थीं, कि पता नहीं उनको खिलाया जाएगा, पिलाया जाएगा और एक दिन उन्हें काट दिया जाएगा। उस जादूगर ने उनको बेहोश करके कह दिया कि तुम भेड़ हो ही नहीं, तुम तो सिंह हो, तुम तो लायंस हो, तुम भेड़ें नहीं हो। उनके चित्त में यह बात बैठ गई, उस दिन से वे अकड़ कर जीने लगीं। उस दिन से वह यह बात भूल गई कि उन्हें काटने के लिए पाला जा रहा है। और जब उनमें से एक भेड़ काट दी जाती थी, तो बाकी भेड़ सोचती कि वह तो भेड़ थी, मैं तो सिंह हूं। मैं कभी काटे जाने वाली नहीं हूं। रोज भेड़ें कम होती जाती थीं, लेकिन हर भेड़ यही सोचती थी कि वह दूसरी तो भेड़ थी इसलिए काटी गई, और मैं, मैं तो सिंह हूं मैं काटी जाने वाली नहीं हूं।
उस जादूगर के घर उसका एक मित्र मेहमान हुआ, तो उसने पूछा कि हम भी भेड़ें पालते हैं, और हम भी भेड़ों को काटते हैं, और उनके मांस को बेचते हैं, लेकिन हमारी भेड़ें तो बड़ी भयभीत रहती हैं, और बड़ी परेशान रहती हैं। तुम्हारी भेड़ें तो बड़ी शान से घूमती हैं, और एक भेड़ काटी जाती है, तो दूसरी भेड़ उसकी कोई फिकर नहीं करती है, और शान से घूमती रहती है, बात क्या है? उस जादूगर ने कहाः मैंने एक तरकीब काम में लाई है। इनको बेहोश करके मैंने कह दिया है कि तुम भेड़ नहीं हो, इसलिए ये मौज में घूमती रहती हैं, और इनके भागने का, भयभीत होने का मुझे कोई डर नहीं रह गया। और जब एक भेड़ कटती है, तो बाकी भेड़ें सोचती हैं कि वह भेड़ थी, मैं तो भेड़ नहीं हूं।
मनुष्य-जाति के साथ भी कुछ मामला ऐसा ही है। हर आदमी को यह खयाल है कि मैं तो कुछ और हूं, बाकी सारी भेड़ें हैं, तो जब मैं आपसे यह कह रहा हूं कि मनुष्य यंत्र है, तो मैं भलीभांति जानता हूं आप अपने पड़ोसी को विचार करके सोच रहे होंगे कि बात तो इस आदमी के बाबत बिल्कुल ठीक है, रही मेरी बात, तो मैं तो नहीं हूं, मैं तो एक्सेप्शन हूं। मैं तो एक अपवाद हूं। बाकी लोगों के संबंध में तो यह बात बिल्कुल ठीक है। जगह-जगह लोग मेरे पास आते हैं और मुझसे कहते हैं कि आप बात तो बिल्कुल ठीक कह रहे हैं, करीब-करीब सभी आदमियों के बाबत यह बात सही है, मैं उनसे पूछता हूं सब आदमियों के बाबत का सवाल नहीं है, यह आपके बाबत सही है या नहीं? और तब मैं पाता हूं कि वह पशोपेश में पड़ जाते हैं, उनकी यह हिम्मत नहीं पड़ती कहने की कि यह मेरे बाबत भी सही है। तो जो बात मैं कह रहा हूं, वह आपके पड़ोसी के लिए नहीं कह रहा हूं, वह आपके संबंध में कह रहा हूं। आपके पास जो बैठे हैं उनकी तरफ देखने की कोई

भी जरूरत नहीं है। अगर आपने उनकी तरफ देखा तो मेरी बात फिजूल चली जाएगी, उसका कोई मतलब नहीं होगा।
आप अपनी तरफ देखें और सोचें। और अगर आपको यह दिखाई पड़ जाए कि यह बात आपके संबंध में सही है, आप दूसरे आदमी हो जाएंगे। इस बात के अहसास के साथ ही आप दूसरे आदमी होने शुरू हो जाएंगे। क्योंकि यह अहसास इस बात की घोषणा है कि अब आप मशीन नहीं रहे, इस बात की स्वीकृति कि मेरा जीवन एक मशीन का जीवन है। कौन दे रहा है इस बात की स्वीकृति? कौन इस बात को अहसास कर रहा है? जो चेतना इस बात को अहसास कर रही है कि मेरा जीवन एक यंत्र है, वह स्वयं यंत्र नहीं हो सकती। इस बात की स्वीकृति से ही आपके भीतर कांशसनेस का, चेतना का जन्म शुरू होता है, प्रारंभ होता है। इसीलिए मैंने जोर दिया कि हमें यह जानना, खोजना और पहचानना चाहिए और उस आदमी को मैं धार्मिक कहूंगा, जिस आदमी ने यह अनुभव किया कि उसका जीवन एक यंत्र है।
उस आदमी को मैं धार्मिक नहीं कहता, जो रोज सुबह उठ कर माला फेर लेता है, जो रोज सुबह मंदिर हो आता है। वह आदमी तो यंत्र की भांति यह काम भी करता है। उसमें कोई फर्क नहीं है। वह रोज माला फेर लेता है, बरसों तक माला फेरता रहता है। एक मशीन की भांति वह रोज एक काम को पूरा कर लेता है। वह रोज मंदिर भी हो आता है, वह रोज किताब भी पढ़ लेता है, एक ही किताब को वह वर्षों तक पढ़ता रहता है, और दोहराता रहता है, बिल्कुल मशीन की भांति, उससे उसके जीवन में कोई अंतर नहीं आता, कोई क्रांति नहीं होती। कोई परिवर्तन नहीं आता, कोई बदलाहट नहीं होती। हो भी नहीं सकती है, क्योंकि बदलाहट की शुरुआत ही उस आदमी ने नहीं समझी। बदलाहट की शुरुआत इस बात से ही हो सकती थी कि वह एहसास करता कि वह तो अभी आदमी भी नहीं है, आदमी से बहुत नीचे के तल पर जी रहा है। मशीन के तल पर जी रहा है। इसलिए कल मैंने यह बात आपसे कही। और कुछ बातें पूछी हैं।

एक मित्र ने पूछा है कि अगर हमें यह खयाल हो जाए कि हम बिल्कुल एक मशीन हैं, तब तो हमारे जीवन में निराशा छा जाएगी। फिर तो हम निराश हो जाएंगे कि अब तो कुछ भी नहीं हो सकता?

ऐसा लगेगा कि अगर हम यह समझ गए कि हम एक मशीन हैं, फिर तो कुछ भी नहीं
हो सकता। लेकिन यह अभी आप बौद्धिक रूप से विचार कर रहे हैं, अगर यह आपको अहसास हो जाए कि मैं एक मशीन हूं तो इतना कुछ हो सकता है, जिसका कोई हिसाब नहीं। यह बात कि फिर कुछ नहीं हो सकता, एकदम ही गलत है, सच तो यह है कि जब तक इस बात का अहसास न हो कि मैं मशीन हूं, तब तक कुछ भी नहीं हो सकता। तब तक आप जो कुछ भी करेंगे, वह सब व्यर्थ होगा। वह नींद में किया गया होगा। वह जाग कर किया गया नहीं होगा। लेकिन एक बार यह समझ में आ जाए कि मैं मशीन हूं, तो यह समझ जिसके भीतर पैदा होती है कि मैं मशीन हूं, जिस चेतना को यह अनुभव होता है, यह एक्सपीरियंस होता है कि मैं मशीन हूं, यह सारा जीवन मैकेनिकल है, वह चेतना का बिंदु इस मशीन के बाहर हो जाता है, अलग हो जाता है। किसी भी चीज को जानने के लिए, जानते ही हम उससे दूर हो जाते हैं। अगर मैं आपको देख रहा हूं कि आप वहां हैं, तो मैं आपसे अलग हो गया। क्योंकि देखने वाला उससे अलग हो जाता है, जिसे देखता है। दोनों के बीच फासला हो जाता है। अगर मैं अपने इस हाथ को देख रहा हूं तो मैं इस हाथ से अलग हो गया। वह देखने वाला हाथ से अलग हो जाता है।
मेरे एक मित्र बीमार पड़े थे। वे सीढ़ियों पर से गिर पड़े थे और उनके पैरों में बड़ी चोट आ गई थी। बहुत असह पीड़ा थी उन्हें। मैं उन्हें देखने गया। उन्होंने मुझसे कहाः इससे तो बेहतर होता कि मैं मर जाता। बहुत असह पीड़ा, बहुत दुख है। और डाक्टर कहते हैं कोई तीन महीने तक बिस्तर पर बंधे रहना होगा, यह तो और भी दुख है। क्या मेरे मरने की कोई तरकीब नहीं खोजी जा सकती? क्या मैं मर नहीं सकता हूं?
मैंने उनसे कहाः इसके पहले कि आप मरें क्या आपको पक्का भरोसा है कि आप जिंदा हैं? क्योंकि मर वही सकता है, जो जिंदा हो? मुझे शक है कि आप जिंदा भी हैं, क्योंकि मुझे शक है कि आपको उस जीवन का पता है, जो आपके भीतर है? और

अगर उस जीवन का पता ही नहीं, तो आपको जिंदा मैं कैसे कहूं? तो मैंने कहा अभी मरने की योजना छोड़िए, अभी पहले आपको यह भी पता नहीं कि आप जिंदा हैं! जिंदा आदमी मर सकता है। लेकिन आप जिंदा कहां हैं? और मैंने उनसे कहाः आप घबड़ाइए मत इतने, एक छोटा सा प्रयोग करिए। मैं यहां बैठा हूं आपके पास, आप आंख बंद कर लीजिए। और उस दर्द को, उस पीड़ा को देखने की कोशिश करिए कि वह कहां है, और क्या है जो आपको अहसास हो रही है? वह किस जगह शरीर में आपको पीड़ा मालूम हो रही है? वे मुझसे बोले, मेरे पूरे पैर में तकलीफ है।
मैंने कहाः आप आंख बंद करिए और ठीक से खोजिए, पिन पॉइंट करिए कि कहां आपको तकलीफ हो रही है? उन्होंने आंख बंद की, और कोई पंद्रह मिनट बाद आंख खोली और मुझसे बोले कि यह तो बड़ी हैरानी की बात है, जैसे-जैसे मैं खोजने लगा, पीड़ा सिकुड़ती गई, छोटी होती गई। पहले मुझे लग रहा था कि मेरे पूरे पैर में दर्द है, लेकिन जैसे मैंने खोज की तो मैंने पाया कि पूरे पैर में दर्द नहीं है। दर्द तो शायद छोटी सी जगह है, मुझे अहसास भर हो रहा है। और जैसे- जैसे मैंने खोजने की कोशिश की कि मैं एक जगह उस दर्द को अहसास करूं कि कहां है, तो मुझे दो अदभुत बातें खयाल में आई हैं, जिनका मुझे पता भी नहीं था। एक तो यह कि दर्द उतना नहीं था जितना मुझे मालूम पड़ रहा था। जब मैंने खोजने की कोशिश की, दर्द उतना बिल्कुल नहीं था, जितना मैं अहसास कर रहा था। जितना मैं भोग रहा था, उतना दर्द था ही नहीं। और दूसरी बात, जैसे ही दर्द एक जगह मुझे मालूम पड़ा कि पैर की फलां जगह दर्द हो रहा है, वैसे ही मुझे एक और बात पता चली, जो और भी हैरानी की है, वह यह कि दर्द वहां हो रहा था और मैं यहां दूर खड़ा हुआ उसे देख रहा था। मैं अलग था, और दर्द अलग था। दर्द कहीं हो रहा था और मैं उसे जान रहा था। तो मुझे एक क्षण में ऐसा लगा है कि मैं अलग हूं, जान रहा हूं, और दर्द अलग है, कहीं हो रहा है।
तो अगर हमारे जीवन की यांत्रिकता हमें पता चल जाए, तो हमें यह भी पता
चल जाएगा कि यांत्रिकता का घेरा कहीं है, और मैं कहीं और हूं। मैं यांत्रिकता के बीच में हूं, मैं खुद यंत्र नहीं हूं। और अगर यह एहसास हो जाए कि सारी यांत्रिकता के बीच में मेरी कांशसनेस अलग है, तो फिर कुछ हो सकता है। मैं इस यंत्र का मालिक बन सकता हूं। फिर इस यंत्र के साथ मैं कुछ कर सकता हूं। क्योंकि मैं इससे अलग हूं। और इससे बाहर हूं। लेकिन जो आदमी यंत्र के साथ एक ही हो जाता है, वह कुछ भी नहीं कर सकता। और वह आदमी एक है, जिसको यह पता नहीं है कि मेरा सारा जीवन यांत्रिक है।
इसलिए निराश होने का कोई कारण नहीं है। बल्कि आशा से भर जाने का कारण है। लेकिन यह केवल बौद्धिक विचारणा नहीं है, इसे तो जीवन में खोजेंगे तो ही इसके क्रांतिकारी परिणाम परिलक्षित हो सकते हैं, दिखाई पड़ सकते हैं। ऐसा मत सोचें कि क्या होगा, अगर मैंने समझ लिया कि मैं यंत्र हूं? समझने की जरूरत नहीं है, आप यंत्र हैं। यह एक फेक्ट है, यह एक तथ्य है, यह कोई सिद्धांत नहीं है। आपको समझने की जरूरत नहीं है। समझने की जरूरत तो वहां होती है, जहां कोई आपको समझाता है कि आप भगवान हैं, वहां समझने की जरूरत होती है कि आप भगवान हैं। यह तो एक तथ्य है कि आप यंत्र हैं।
इसे मानने की और विश्वास करने की जरूरत नहीं है, इसे तो खोज लेने की जरूरत है। और जैसे ही इसे खोजेंगे, वैसे ही वह दूसरी चीज जो आपके भीतर यंत्र नहीं है, आपके अनुभव में आनी शुरू हो जाएगी। और धीरे-धीरे आप जानेंगे आपके चारों तरफ यांत्रिकता है लेकिन आप यंत्र नहीं हैं। आप एक कांशसनेस हैं, आप एक चेतना हैं, आप एक आत्मा हैं, लेकिन यह सिद्धांत दोहराने से पता नहीं चलेगा कि मैं एक आत्मा हूं, यह तो जानने से पता चलेगा, यांत्रिकता खोजने से। और क्यों मैं इस बात पर जोर देता हूं कि आत्मा जानने के लिए यांत्रिकता को खोजना जरूरी है, कोई वजह है। अगर आप एक काले तख्ते पर एक सफेद लकीर खींचे, तो सफेद लकीर दिखाई पड़ेगी, और अगर सफेद तख्ते पर सफेद लकीर खींचें, लकीर आपको कभी दिखाई नहीं पड़ेगी। अगर आपको यह पूरी तरह अहसास हो जाए कि आपका जीवन यांत्रिक है तो उसी के बीच में, इसी काले बोर्ड पर चेतना की सफेद लकीर आपको दिखाई पड़नी शुरू होगी, नहीं तो नहीं दिखाई पड़नी शुरू होगी। यांत्रिकता के विरोध में ही आपको चेतना का अनुभव होगा, नहीं तो नहीं अनुभव होगा।

जीवन में हमारे सारे अनुभव विरोध के कारण होते हैं, नहीं तो नहीं होते हैं। अभी आकाश काले बादलों से छा जाए, और एक बिजली चमके, वह बिजली दिखाई पड़ेगी, अभी यह बल्ब जल रहा है यहां, थोड़ी देर पहले भी जल रहा था, लेकिन तब इसकी रोशनी पता नहीं चल रही थी, क्योंकि चारों तरफ रोशनी थी, अब रात उतरने को शुरू हो गई है, और आपके चेहरों पर बल्ब की चमक आनी शुरू हो गई है। रात गहरी होती जाएगी और बल्ब प्रगाढ़ होकर दिखाई पड़ने लगेगा। रात जब पूरी अंधेरी हो जाएगी, तो बल्ब अपनी पूरी रोशनी में दिखाई पड़ेगा। तो आपको मैं जो जोर दे रहा हूं इस बात को कि वह जो मैकेनिकल लाइफ है हमारी, वह जो यांत्रिक जीवन है मशीन की तरह, अगर उसका पूरा अनुभव हो जाए तो उसके विरोध में, उसके कंट्रास्ट में ही आपको वह चेतना की लकीर और बिजली दिखाई पड़नी शुरू होगी, जिसका नाम आत्मा है। उस आत्मा को आपको मानने की जरूरत नहीं है, वह आपको दिखाई पड़नी शुरू हो जाएगी। लेकिन वह दिखाई पड़ सके इसके लिए जरूरी है कि यांत्रिकता का बोध जितना इंटेंस, जितना गहरा होगा उतना ही आसान है आपको आत्मा का अनुभव।
इसलिए निराश होने की बात नहीं, बल्कि आशा से भरने की बात है। उसे खोजें, और देखें, और पहचानें; आत्मा को मत खोजें, आत्मा को आप नहीं खोज सकते हैं अभी। आप तो अपनी यांत्रिकता को खोजें, उसी यांत्रिकता की खोज से आत्मा की लकीर स्पष्ट होनी शुरू होगी। उसी के बीच आपको वह बिजली की चमक दिखाई पड़नी शुरू हो जाएगी, जो कि परमात्मा का इशारा है। लेकिन उसके पहले परमात्मा के संबंध में कुछ भी कहना कुछ भी सोचना एकदम नासमझी और गलत और खतरनाक बात है।

एक मित्र ने इस संबंध में पूछाः पूछा है, यह भगवान की धारणा का जन्म कैसे हो गया? भगवान की धारणा का जन्म, धारणा का कंसेप्ट ऑफ गॉड, इसका जन्म कैसे हो गया?

इसका जन्म भय के कारण हो गया है। धारणा का जन्म, अनुभव का जन्म नहीं। भगवान के अनुभव का जन्म भय के कारण नहीं होता। वह तो ज्ञान के कारण होता है। लेकिन भगवान की धारणा कंसेप्ट, भगवान के सिद्धांत का जन्म भय के कारण हो जाता है। एक गांव में एक फकीर यात्रा पर था। उस गांव के राजा ने उसे पकड़वा कर बुलवा लिया। और दरबार में उसे बुला कर कहा कि मैंने सुना है कि तुम बहुत बड़े मिस्टिक हो? बहुत बड़े रहस्यवादी संत हो? और मैंने सुना है कि तुम्हें परमात्मा के दर्शन होते हैं, और तुम्हें बहुत अदभुत, अलौकिक विजंस दिखाई पड़ते हैं, साक्षात्कार होते हैं? सिद्ध करो मेरे सामने कि तुम एक मिस्टिक संत हो? और अगर सिद्ध न कर सके तो गर्दन अलग करवा दूंगा।
उस फकीर ने यह सुना, यह बादशाह पागल था, जैसे कि अक्सर बादशाह होते हैं। और खतरा था कि वह गर्दन अलग न करवा दे। उसने एकदम आंखें बंद की और कहा कि देखो वे मुझे दिखाई पड़ रहे हैं आकाश में भगवान, अपने सिंहासन पर विराजमान हैं और देवता उनकी स्तुति कर रहे हैं। और वह नीचे देखो जमीन में, वहां मुझे राक्षस और नरक और सब दिखाई पड़ रहा है। उस राजा ने कहाः बड़ी हैरानी की बात है! क्या तुम्हें दीवालों के पार भी दिखाई पड़ता है? हमें तो कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा। कौन सी तरकीब है, जिसके कारण तुम्हें आकाश में बादलों के पार भगवान दिखाई पड़ जाता है? जमीन के नीचे नरक दिखाई पड़ जाता है? उसने कहा कोई तरकीब नहीं है, महानुभाव! ओनली फीयर इ.ज रिक्वायर्ड। कोई और ज्यादा चीज की जरूरत नहीं, भय होना चाहिए सब दिखाई पड़ने लगता है। जब आपने कहा कि गर्दन कटवा देंगे, तो मैंने आंख बंद की और मुझे भगवान दिखाई पड़ने लगे और नरक भी दिखाई पड़ने लगा।
सिर्फ भय की जरूरत है सब दिखाई पड़ने लगता है। और किसी चीज की कोई भी जरूरत नहीं है। आपको भय हो, आपको कुछ भी दिखाई पड़ने लगेगा, भूत भी और भगवान भी। लेकिन ऐसे दिखाई पड़े न तो भूत सच हैं, और न भगवान सच हैं। आपके भय पर जो भी अनुभव खड़ा होता है, वह व्यर्थ है, झूठा है। भगवान की धारणा तो मनुष्य के भय से पैदा हो गई है। जीवन में सब दुख है, पीड़ा है, भय भी है। जीवन में सब तरफ कहीं कोई सहारा नहीं, जीवन में कहीं कोई आसरा नहीं है, जीवन में कोई

सिक्योरिटी का कोई पता नहीं है, सब इनसिक्योर, सब घबड़ाहट से भरने वाला है, इसलिए आदमी डरता है। और इस डर में एक आकाश में सहारा खोजता है कि हे भगवान! शायद तुम ही सहारे हो, शायद तुम्हारे ही पैर पकडूं और मुझे सहारा मिल जाए और सुरक्षा मिल जाए। इस जगत में तो कोई सहारा मिलता नहीं, कोई कूल-किनारा नहीं है, तुम ही मेरे किनारे हो!
वह घबड़ाहट में, भय में कल्पना करता है किसी भगवान की और उसके पैर पकड़ लेता है और प्रार्थनाएं करता है और हाथ जोड़ता है और स्तुतियां करता है। और भगवान को राजी करता है और प्रसन्न करने की कोशिश करता है कि शायद तुम प्रसन्न हो जाओ तो मुझ पर कृपा करो। और मेरे जीवन के सहारे और आधार बन जाओ। तो यह भगवान एकदम झूठा है। क्योंकि इसका जन्म हमारे भय से हुआ है। और भय हमारा बिल्कुल यांत्रिक है। इसलिए तो हम कहते हैं, धार्मिक आदमी को हम कहते हैं, गॉड-फियरिंग, भगवान से डरा हुआ। भगवान के प्रति भीरु। बड़ी अजीब बात है, कोई आदमी गॉड-फियरिंग होकर धार्मिक हो सकता है? जिस आदमी के भीतर भय है भगवान का, वह तो कभी धार्मिक नहीं हो सकता।
धार्मिक होने के लिए तो अभय चाहिए, फीयरलेसनेस चाहिए। धार्मिक होने
के लिए भगवान का भय नहीं चाहिए। धार्मिक होने के लिए अत्यंत अभय चित्त चाहिए। वह अभय चित्त ही उसको जान पाता है, जो भगवान है, जो सत्य है, जो परमात्मा है। जो भयभीत है वह अपने भय के अतिरिक्त कुछ नहीं जानता, और अपने भय के लिए उसने जो कल्पनाएं की हैं, उनको जानता है। उसके भय से निकली हुई सारी कल्पनाएं झूठी हैं।
भगवान की धारणा तो भय से निकलती है, लेकिन भगवान का अनुभव, भगवान का अनुभव जाग्रत चेतना से उपलब्ध होता है। और हम चूंकि सोए हुए हैं, यांत्रिक हैं; हम, हमारे सारे भगवान हमारे जैसे ही झूठे हैं। हमारे सब भगवान हमारे जैसे ही यांत्रिक हैं। क्योंकि हमारे भगवानों के बनाने वाले हम हैं, उनको हम निर्मित किए हैं। मंदिरों में जो मूर्तियां खड़ी की हैं वह हमने, मस्जिदें बनाई हैं और शिवालय बनाए हैं, वे हमने; धर्म खड़े किए हैं, वे हमने; शास्त्र रचे हैं, वे हमने। और हम जैसे हैं, वैसे ही हमारे शास्त्र होंगे स्वभावतः। वैसे ही हमारे भगवान होंगे स्वभावतः।
इसलिए आदमी बदलता जाता है, तो उसके भगवान की धारणा बदलती जाती है। पिछली सदी का भगवान और तरह का था, ज्यादा ऑटोक्रेट था। क्योंकि आदमी का दिमाग, आदमी का दिमाग राजतंत्र में था, तो भगवान एक राजा की शक्ल में था। आजकल का भगवान थोड़ा ज्यादा डेमोक्रेट है, क्योंकि आदमी डेमोक्रेसी में है। वह लोकतंत्र की बातें करता है, तो भगवान भी लोकतांत्रिक हो गया है उसका। अगर आप तीन हजार साल पहले की किताब पढ़ें तो आप घबड़ा जाएंगे, भगवान ऐसा मालूम पड़ेगा कि हमारी कल्पना में न आएगा कि भगवान ऐसा कैसे हो सकता है? अगर आप भगवान के खिलाफ एक शब्द बोल दें तो आपकी हत्या कर देगा, ऐसा भगवान है तीन हजार साल पुराना। वह आपके ऊपर गाज गिरा देगा, बिजली गिरा देगा, आपको तबाह कर देगा। आज हम सोच भी नहीं सकते। हम तो भले आदमी की बाबत भी नहीं सोच सकते कि कोई भले आदमी को अगर हम बुरा शब्द कह दें तो हमारे घर में आग लगा देगा; भले आदमी की धारणा बदल गई हमारी। आज हम भगवान के बाबत तो यह सोच ही नहीं सकते कि हम उसके बाबत कुछ कह दें बुरी बात, तो हमारे घर पर बिजली गिरा देगा। यह हम सोच ही नहीं सकते। लेकिन पुराना भगवान बिजली गिराता था, आग लगा देता था। नरक में डाल देता था। हमारे दिमाग जैसे थे, वैसा हमने भगवान बना लिया था। अब हमारे दिमाग बदले हैं, तो हमने थोड़ा लोकतांत्रिक भगवान बनाया है, वह क्षमा भी करता है, दया भी करता है, प्रेम भी करता है। और शायद हमारे दिमाग बदल जाएंगे, हम दूसरी तरह का भगवान निर्मित कर लेंगे।
ये सारे भगवानों की कल्पनाएं हमारी निर्मित हैं। हमारा क्रिएशन है।
ये धारणाएं हमारी हैं, इनसे भगवान का कोई भी संबंध नहीं है। ये हमारे ही मन के खेल हैं, इससे ज्यादा नहीं। क्योंकि स्त्रियों ने कभी भगवान नहीं बनाए अब तक इसलिए सब भगवानों की शक्ल पुरुषों जैसी है। अगर स्त्रियां बनाएं तो वे स्त्रियों जैसे भगवान बनाएंगी। और अगर पक्षी और पशु बनाएं तो वे अपनी शक्ल में बनाएंगे। क्या आप सोच सकते हैं कि घोड़े और गधे अगर भगवान की

कल्पना करें तो आदमी की शक्ल में करेंगे? कोई घोड़ा और गधा आदमी को इस योग्य नहीं समझेगा कि उसकी शक्ल में भगवान को बनाए। वह अपनी शक्ल में बनाएगा, आखिर नीग्रो अपनी शक्ल में बनाता है भगवान को, चीनी अपनी शक्ल में, भारतीय अपनी शक्ल में, तिब्बती अपनी शक्ल में; नीग्रो का जो भगवान है, वह कभी सफेद रंग का नहीं हो सकता, आपको पता है, वह काले रंग का होता है। और शैतान जो है, वह सफेद रंग का होता है। लेकिन अंग्रेज का भगवान कभी काले रंग का हो सकता है? अंग्रेज का भगवान तो सफेद रंग का होता है, शैतान काले रंग का होता है।
हिंदुओं से पूछिए कि काले रंग के कौन होते हैं? वे कहेंगे कि राक्षस। लेकिन नीग्रो से पूछिए तो वह कहेगा, काले रंग के राक्षस होते हैं? वह कहेगा, काले रंग के भगवान होते हैं। और जितना शुद्ध उनका काला रंग होता है उतना किसी का भी नहीं होता, प्योरेस्ट, जो शुद्धतम काला रंग है वही भगवान का होता है। और सफेद रंग का होता है शैतान। हमारी अपनी धारणाएं, हमारी अपनी शक्ल में हम निर्मित करते हैं। यह सारी हमारी कल्पनाएं हैं।
तो भगवान का कंसेप्ट जो है, धारणा जो है, वह तो हमारी बनाई हुई है, उसका कोई मूल्य नहीं है। लेकिन हां, सत्य का एक ऐसा अनुभव भी है, जहां हम मिट जाते हैं और हम उसे जानते हैं। वहां न हम मनुष्य रह जाते, न पुरुष, न स्त्री, न भारतीय, न हिंदु, न मुसलमान वहां केवल चेतना रह जाती है, जानने को। चेतना जिसका कोई रंग नहीं है, चेतना जिसका कोई आकार नहीं है, चेतना जो हिंदू नहीं है, मुसलमान नहीं है, हिंदुस्तान की नहीं है, पाकिस्तान की नहीं है; ईसाई की और यहूदी की नहीं है, पारसी की नहीं है; चेतना मात्र रह जाती है जहां, वहां वह जाना जाता है। जो चेतना का प्राण है और केंद्र है, उसका नाम है परमात्मा। लेकिन वह धारणा नहीं है, वह अनुभव है। वह कंसेप्ट नहीं है, वह एक एक्सपीरियंस है, रिएलाइजेशन है।
भगवान की धारणा तो भय से पैदा होती है, लेकिन भगवान का अनुभव जाग्रत चित्त से पैदा होता है। और भय का कोई स्थान जाग्रत चित्त में कभी नहीं होता है। इसलिए जिसे हम धर्म मान कर चलते हैं वह धर्म नहीं है, और जिसे भगवान मान कर चलते हैं, वह भगवान भी नहीं है। अभी तो हमें इसका ही पता नहीं है कि हम कौन हैं, और क्या हैं? और हम भगवान की खोज और यात्रा पर निकल जाते हैं। हर आदमी का अहंकार अदभुत है, और जब उसे फिर नहीं अहसास होता कि भगवान मिल रहा है, तो फिर वह कल्पनाएं करना शुरू कर देता है, और कल्पनाओं को अनुभव करना भी शुरू कर देता है। और फिर उसे जिस बात की शिक्षा दी गई हो, उसकी कल्पनाएं इतनी शक्तिशाली हैं कि वह उसका अनुभव भी कर सकता है। हमारी कल्पना इतनी बड़ी है, हमारे स्वप्न देखने की शक्ति इतनी बड़ी है, कि हम अनुभव कर सकते हैं। सोया हुआ आदमी कुछ भी देख सकता है। हम भी सोए हुए लोग हैं, यांत्रिक आदमी सोया हुआ आदमी है। यांत्रिकता और सोए हुए पन में कोई फर्क नहीं है। हमें पता भी नहीं कि हम क्या कर रहे हैं?
एक गांव में एक मां और उसकी बेटी थी। उस गांव में उन मां और बेटी को रात में उठ कर नींद में चलने की आदत थी। वे स्लीप वॉकर्स थीं, वे दोनों ही। एक रात वे दोनों नींद में उठी, मां भी और बेटी भी; और अपने पीछे के बगीचे में पहुंच गईं। नींद में उठने की कई लोगों को बीमारी होती है, उनको भी थी। बगीचे में पहुंचकर जैसे ही मां ने अपनी लड़की को देखा, और उसने जोर से कहा कि चांडाल, दुष्ट तूने ही मेरी सारी जवानी छीन ली है। तू जवान होती गई और मैं बूढ़ी होती गई, तू ही है, जिसने मेरी जवानी छीन ली। तू ही है मेरी शत्रु। जैसे ही उस लड़की ने अपनी मां को देखा, उसने जोर से कहा, ओ बूढ़ी चुड़ैल! तेरी वजह से ही मेरा जीवन एक परतंत्रता बना हुआ है। तू मेरे पैरों की जंजीर बन गई है। जैसे ही वह ये बातें कर रहीं थीं, मुर्गे ने बांग दी सुबह होने को हो गई, उन दोनों की नींद खुल गई, नींद खुलते ही उस बूढ़ी औरत ने कहाः ओ मेरी प्यारी बेटी, इतनी सुबह तू उठ आई, कहीं तुझे सर्दी न लग जाए, हवा ठंडी है। और उस लड़की ने अपनी मां के पैर पड़े जैसा कि रोज सुबह वह पड़ती थी। और उसने कहाः हे पूज्य मां, सुबह तुम्हारे दर्शन करके मेरा हृदय अत्यंत आनंदित हो गया।

नींद में उन्होंने क्या कहा? और जाग कर सब क्या हो गया? नींद में शायद उन्होंने अपने हृदय की सच्ची बातें कह दीं। शायद नींद में उनके भीतर जो चलता था, वह निकल आया था। नींद में कोई अपना मालिक नहीं होता। इसलिए जो भी निकल आए, जो भी निकल आए, निकलेगा और उसको कोई रोक नहीं सकता। लेकिन जागते से ही वे अपनी मालिक हो गईं, जागते से उन्होंने अपनी बात बदल दी। शायद उन्हें खयाल भी न रहा हो कि उन्होंने नींद में क्या कहा? आपको पता है कि आपने नींद में क्या-क्या सपने देखे हैं? क्या आपको पता है कि आप अपनी नींद में, अपने सपने में, अपने पिता की आपने हत्या भी कर दी होगी? क्या आपको पता है, नींद में, सपने में आपने अपने मित्र को मार भी डाला होगा? क्या आपको पता है कि नींद में आप पड़ोसी के घर में घुस गए होंगे, उसकी सम्पत्ति चुरा ली होगी? क्या आपको पता है कि आपने नींद में क्या-क्या किया है? क्योंकि नींद में आप अपने मालिक नहीं होते। जो होता है, जो भीतर चलता है, वह चलता है; आपका कोई वश नहीं होता, उसके ऊपर।
लेकिन जैसे ही आप जागते हैं, आपकी जिंदगी में फर्क पड़ जाता है। लेकिन
यह जागरण भी हमारा झूठा है, इससे भी एक और बड़ा जागरण है। उस जागरण के लिहाज से हम सब अभी भी सोए हुए हैं। और अभी भी हम एक तरह के सपने में जी रहे हैं। और अगर चेतना उस बड़े जागरण को उपलब्ध हो जाए, उस जागरण का नाम ही समाधि है, धर्म है, योग है या कुछ। और जो कहना चाहें। अगर और बड़ी चेतना में हमारे जीवन का जागरण हो जाए, तो शायद हम पाएंगे कि हम जो कर रहे थे, वह वैसा ही झूठा, फिजूल, और गलत था, जैसा कि नींद से सुबह जागकर हम पाते हैं कि हमने कैसे सपने देखे? कैसे फिजूल, कैसे एब्सर्ड, कैसे गलत? और तब हमारा जीवन बिल्कुल एक नये रास्ते पर बदल जाएगा, और परिवर्तित हो जाएगा।
इसलिए मैंने जोर दिया कि हम यांत्रिक हैं। यांत्रिक होने का अर्थ है,
सोए हुए हैं, हमें कुछ होश नहीं कि क्या हो रहा है? क्या चल रहा है, हमें कुछ पता नहीं है? जीवन हमारा एक अंधी यात्रा है, अंधेरे में, सोए हुए लोग हैं, वे जो भी कर रहे हैं, उनसे जो भी हो रहा है; वे जहां भी जा रहे हैं, न उन्हें दिशा का कोई पता है, न उन्हें गंतव्य का कोई बोध है कि कहां पहुंचना चाहते हैं? उन्हें कुछ भी पता नहीं। और अगर कुछ लोग इन सोए हुए लोगों के बीच जिंदगी को बदलने की कोशिश करते हैं, बिना नींद को तोड़े हुए, तो ज्यादा से ज्यादा वे जाग तो नहीं पाते, बल्कि सोए हुए लोग जो कुछ करते हैं, इनके उल्टा करना शुरू कर देते हैं।

एक प्रश्न इस संबंध में भी पूछा है, और यह पूछा है कि जो सोए लोग कर रहे हैं, अगर हम ठीक उनसे उलटा करने लगें, तब तो फिर ठीक हो जाएगा? जैसे सोए लोग क्रोध कर रहे हैं, तो हम शांति और क्षमा प्रकट करने लगें, सोए लोग हिंसा कर रहे हैं और वायलेंट हैं तो हम नॉन-वायलेंट हो जाएं, हम अहिंसक हो जाएं? सोए लोग हिंसा करते हैं, घृणा करते हैं, तो हम प्रेम करने लगें? हम उनसे उलटा चलने लगें!

सारे संन्यासी और साधु और अच्छे लोग यही कर रहे हैं दुनिया में, वे उलटा चलने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन सोया हुआ सीधा चले तो खतरनाक, उलटा चले तो और भी खतरनाक हो जाता है, कम से कम सीधा चलता है तब भी ठीक है, उलटा चलता है तब और भी मुश्किल। क्योंकि पीठ पीछे हो जाती है, उलटा चलना और भी खतरनाक हो जाता है। पहली तो बात यह है कि जब हमारा क्रोध पर ही कोई वश नहीं है तो हम प्रेम कैसे कर सकेंगे? और करेंगे तो वह प्रेम एकदम झूठा होगा, उस प्रेम में कोई प्राण न होंगे। उस प्रेम में कोई बल और शक्ति न होगी। और उस प्रेम के नीचे, भीतर घृणा बैठी ही रहेगी। क्योंकि वह घृणा कहां जाएगी, जिसको हमने दबा लिया? वह क्रोध कहां जाएगा, जिसको हमने पी लिया? वह सारा का सारा बुखार, वह सारी बीमारी, वह जहर जो हमारे भीतर था कहां जाएगा? वह भीतर बैठ जाएगा।
कभी आप अहसास किए हैं ऐसे आदमी का प्रेम जिसने अपनी घृणा दबा ली हो? वह पहले तो प्रेम से आपकी तरफ हाथ बढ़ाएगा, थोड़ी देर में आप पाएंगे उसके हाथ आपके लिए पंजे हो गए, कसने वाले। जंजीरें हो गए। हम सारे लोग इस बात को

भलीभांति जानते हैं। हम जिनकी तरफ प्रेम के हाथ बढ़ाते हैं, थोड़ी देर में हमारे हाथ जंजीरें हो जाते हैं, उनके लिए। उनके लिए प्रेम नहीं रह जाता, बल्कि कारागृह बन जाता है। जो भी आदमी... हम सब लोग जानते हैं, इसको अनुभव करते हैं रोज। जिसको हम प्रेम करते हैं, थोड़ी देर में हम पाते हैं कि उससे छुटकारा कैसे हो जाए? जिसको हम प्रेम करते हैं, वह हमसे चाहता है कि इससे छुटकारा कैसे हो जाए? हमारा सारा प्रेम बंधन बन जाता है, क्योंकि हमारे प्रेम के पीछे घृणा छिपी है। और प्रेम के पीछे से उसके सूत्र आने शुरू हो जाते हैं। जो लोग क्रोध को दबाकर क्षमा करना सीख जाते हैं, उनकी क्षमा भी एक अदभुत क्रोध का रूप ले लेती है। उनकी क्षमा में भी क्रोध मौजूद होता है। वह जाएगा कहां? अगर कोई आदमी बीमारी छुपा ले और कहने लगे कि मैं स्वस्थ हूं, तो उसके स्वास्थ्य में भी बीमारी मौजूद रहेगी, वह जाएगी कहां? कोई सप्रेशन, कोई दमन, कोई जबरदस्ती आदमी के जीवन में क्रांति नहीं लाती। इसलिए मैं नहीं कहता हूं कि आप उलटे चलना शुरू कर दें, मैं तो यह कहता हूं कि जागें, सोया हुआ आदमी पूरब जाए तो उतना ही गलत है, पश्चिम जाए तो उतना ही गलत है; सोया हुआ गृहस्थ अगर भूल में है, तो सोया हुआ संन्यासी भी भूल में है चाहे वह कितना ही उलटे चलने की कोशिश करे, जीवन का नियम, नींद का जो नियम है वह उसका पीछा नहीं छोड़ेगा।
एक गांव में ऐसा हुआ, नदी पूर पर आई थी और एक संन्यासी का पैर फिसल गया,
और वह नदी में गिर गया। नदी बड़े तेज पूर पर थी और उस गांव में केवल एक ही तैरने वाला था। जो उतने बड़ी, गहरी पूर पर आई हुई नदी में कूद सकता था। एक ही आदमी था, गांव में एक शेखचिल्ली था, जो हर काम जानता था। वह तैरना भी जानता था, तो गांव के लोग भागे गए और उस शेख चिल्ली को कहा कि जल्दी चलो, एक संन्यासी नदी में गिर पड़ा है, उसे बचाना जरूरी है और तुम्हारे अतिरिक्त सर्वज्ञ कोई भी नहीं है, गावं में तुम सब चीजें जानते हों। तैरना भी तुम्हीं जानते हो। वह शेखचिल्ली गया। उसने कपड़े उतारे और नदी में कूदा और ऊपर की तरफ उसने तैरना शुरू कर दिया। अप स्ट्रीम। तो गांव के लोग चिल्लाए, क्या पागलपन कर रहे हो, जो आदमी गिरा है, वह नीचे की तरफ बहा होगा, डाउन स्ट्रीम, और तुम ऊपर की तरफ तैर कर उसे खोजने जा रहे हो, उस शेखचिल्ली ने कहा तुमने मुझसे कहा था कि वह एक संन्यासी है, संन्यासी हमेशा उलटा चलता है, वह अपस्ट्रीम गया होगा। ऊ पर की तरफ गया होगा, नीचे की तरफ वह नहीं जा सकता। लेकिन गांव के लोगों ने कहा कि हे महात्मन! वह संन्यासी चाहे कितना ही ऊपर की तरफ जाने का आदी रहा हो, और उलटा चलने का, लेकिन नदी का अपना नियम है, वह नीचे ले गई होगी। आप कृपा करके ऊपर खोजना बंद करें। आप नीचे की तरफ खोज शुरू करें, लेकिन उस शेखचिल्ली ने बड़ी बढ़िया बात कही, उसने कहा कि मैं जानता हूं कि वह संन्यासी था उलटा चलने का आदी है, अगर नदी उसको बहा भी ले गई है, तो वह ऊ पर की तरफ गया होगा, नीचे वह नहीं जा सकता।
लेकिन जिंदगी के नियम और नदी के नियम बदलते नहीं हैं। चाहे आप उलटे चलें, चाहे कहीं भी, जीवन की नदी आपको नीचे की तरफ ले जाएगी। वह जो सोया हुआ चित्त है वह कहीं भी कुछ भी करे, वह नीचे की तरफ जाएगा, सोया हुआ चित्त ऊपर की तरफ जा ही नहीं सकता है। नींद का नियम है। तो चाहे आप क्रोध करें और चाहे आप क्षमा दिखलाएं, आपका क्रोध भी आपको नीचे ले जाएगा और आपकी क्षमा भी, क्योंकि आपकी क्षमा झूठी होगी, उसके नीचे क्रोध छिपा होगा। आपका प्रेम झूठा होगा, उसके पीछे घृणा बैठी होगी। तभी तो जरा-जरा सी बात में प्रेम घृणा में बदल जाता है, जिनको हम मित्र कहते हैं, वे शत्रु हो जाते हैं जरा सी बात पर, अगर उनके भीतर घृणा न छिपी होती, इतनी जल्दी परिवर्तन हो सकता है?
मैं अभी आपसे कहता हूं कि मैं आपके लिए जान दे दूंगा, और आप दो गालियां मुझे दे दें और मैं आपकी जान लेने को तैयार हो जाऊंगा। बड़ी हैरानी की बात है। यह जो आदमी कहता था मैं आपके लिए जान दे दूंगा, और ये जान लेने के लिए तैयार हो गया, एक सेकेंड में। इसके प्रेम के पीछे घृणा मौजूद थी। ऊपर प्रेम था, पीछे घृणा थी; आपने दो गालियां दीं, ऊपर का प्रेम फट गया, भीतर की घृणा ऊपर आ गई। आप थोड़ी देर बिल्कुल शांत मालूम पड़ते हैं, और जरा सा कोई आपको चुभा दे और आप क्रोध में आ जाते हैं। तो आप सोचते हैं वह शांति थी? वह

शांति बहुत पतली थी, स्किन-डीप जिसको कहते हैं, चमड़ी से भी कम पतली रही होगी। भीतर-भीतर अशांति बैठी थी, जरा ही मौका आया बाहर निकल आई। जो दबाएगा, दमन करेगा, उलटा चलने की कोशिश करेगा; वह कहीं पहुंचेगा नहीं। उसके भीतर सारी चीजें मौजूद हो जाएंगी, इकट्ठी हो जाएंगी। उनका विस्फोट होता रहेगा। और जिन चीजों को उसने दबाया है, उनको रोज-रोज दबाना पड़ेगा और जीवन एक संघर्ष, एक अंतर्द्वंद्व, एक कांफ्लिक्ट हो जाएगी, एक नरक हो जाएगा। उस जीवन में कोई शांति और आंनद संभव नहीं हो सकता है।
दमन से नहीं, उलटा चलने से नहीं, जबरदस्ती चीजों को रोक लेने से नहीं, लेकिन नींद को तोड़ने से एक क्रांति आती है, वह नींद कैसे तोड़ी जा सकती है, उसकी बात तो कल की चर्चा में मैं आपसे करूंगा? नींद निश्चित ही तोड़ी जा सकती है। क्योंकि जो आदमी सोने में समर्थ है, वह जागने में भी समर्थ है। जो आदमी बीमार होने में समर्थ है, वह स्वस्थ होने में भी समर्थ है। जो आदमी क्रोध से भरा हुआ है, वह प्रेम से भर सकता है, लेकिन भरने का रास्ता क्रोध को दबाना नहीं है, बल्कि जिस नींद से क्रोध पैदा होता है, उस नींद को ही तोड़ डालना है। अगर चित्त जागा हुआ हो जाए, अवेकंड हो जाए, यह सोया-सोया हुआ स्थिति मिट जाए, तो नये लक्षण प्रकट होने शुरू हो जाएंगे, जिनको हम प्रेम कहते हैं, सौंदर्य कहते हैं, संगीत कहते हैं, सत्य कहते हैं। वे हमारे भीतर से प्रकट होने शुरू हो जाएंगे।
अंत में दो छोटी सी बातें, सोए हुए आदमी के लक्षण हैं कुछ। हिंसा उसका लक्षण है, घृणा, क्रोध उसका लक्षण है। जागे हुए आदमी के कुछ लक्षण है, प्रेम, करुणा, दया उसका लक्षण है। कोई हिंसा, क्रोध को दया और प्रेम में नहीं बदल सकता। लेकिन अगर नींद टूट जाए तो अचानक पाता है कि जिस चित्त से घृणा निकलती थी, वहां से अब प्रेम निकलना शुरू हो गया है। और यह प्रेम वैसा प्रेम है, जिसे कोई भी तरकीब से घृणा में नहीं बदला जा सकता।
आप क्राइस्ट को चाहे सूली पर लटका दें, तो भी आप क्राइस्ट के प्रेम को घृणा में नहीं बदल सकते। क्राइस्ट को हमने मार डाला सूली पर लटका कर, लेकिन हम क्राइस्ट के प्रेम को नहीं मार सके, मरते वक्त भी क्राइस्ट ने कहा कि हे परमात्मा! इन सबको माफ कर देना, क्योंकि ये नहीं जानते हैं कि ये क्या कर रहे हैं। मंसूर के लोगों ने हाथ-पैर काट डाले, लेकिन मंसूर के प्रेम को चोट नहीं पहुंचाई जा सकी, जिन्होंने हाथ-पैर काटे होंगे, उन्होंने यही सोचा होगा कि देखे इसके प्रेम की स्थिति क्या है? मंसूर के लोग हाथ-पैर काट रहे थे, एक लाख लोग इकट्ठे थे, उसके पैर काट डाले, उसके हाथ काट डाले, उसकी आंखें फोड़ डालीं; लेकिन उसके होंठों पर जो प्रेम और मुस्कुराहट थी उसको नहीं छीना जा सका। और इसके पहले कि वह उसकी जबान काटते उन्होंने मंसूर से कहा कि तुम्हें कुछ कहना है? तो उसने कहा कि एक ही बात मुझे तुमसे कहनी है, मेरा शरीर कट रहा है, लेकिन मैं अपने प्रेम को देख रहा हूं कि वह अखंड है, इसलिए तुम शरीर पर विश्वास मत करना, उस प्रेम को खोजना जिसकी कोई मृत्यु नहीं है। मैं अपने शरीर को मरते देखता हूं, लेकिन उस प्रेम को मरते हुए नहीं देख रहा, जो मेरे भीतर है; तो मैं तुमसे कहता हूं, तुम शरीर पर विश्वास मत करना, तुम प्रेम को खोजना जो कि अमृत है, शरीर तो मर जाता है, लेकिन प्रेम अमर है।
लेकिन उस प्रेम को तो केवल वे ही पा सकते हैं, जो जागे हुए हों। कुछ मामला ऐसा है, कि जाग्रत होते ही जीवन में कुछ नये फूल खिलने शुरू हो जाते हैं, जागरण के परिणाम स्वरूप। और सोते ही जीवन में कुछ फूल मुरझा जाते हैं, और कुछ कांटे निकलने शुरू हो जाते हैं, नींद के फल स्वरूप। नींद में चित्त एक तरह से काम करता है, वह जो काम की प्रक्रिया है, वही क्रोध है, वही वायलेंस है, वही हिंसा है, और जागरण में चित्त दूसरे रास्ते पर काम करता है, वही प्रेम है, वही करुणा है। लेकिन कोई घृणा को प्रेम में नहीं बदल सकता।
नींद टूट जाए तो जहां से घृणा निकलती है, वहीं से प्रेम के फूल लगने शुरू हो जाते हैं। इसलिए सारा जोर जैसा कि आज तक रहा है, वह गलत सिद्ध हुआ है, आज तक यही समझाया गया है, अपने क्रोध को दबाओ और क्षमा को प्रकट करो। आज तक यही समझाया गया है, हिंसा छोड़ो और प्रेमपूर्ण हो जाओ; ये सिखावन कोई भी

फल नहीं लाई। कोई अर्थ नहीं हुआ इससे। इससे कोई फर्क नहीं हुआ। आदमी की जाति वहीं की वहीं है, कोई बुनियादी भूल इस शिक्षा में थी। क्रोध को क्षमा नहीं बनाया जा सकता, घृणा को प्रेम नहीं बनाया जा सकता, वही इस शिक्षा में बात मान ली गई थी, जो बुनियादी गलत है। आदमी को सिखाया जाना जरूरी है कि तुम सोए हुए मत रहो, जागे हुए हो जाओ।
तो मैं आपसे नहीं कहता कि घृणा छोड़ो, प्रेम छोड़ो, ये आपके बस की बातें नहीं हैं। मैं आपसे कहता हूं, आप नींद छोड़ो, आप यांत्रिकता छोड़ो। और इसे भी छोड़ना नहीं है, आप इसके प्रति जाग जाएं और आप पाएंगे कि ये छूटना शुरू हो जाती हैं। जैसे कोई आदमी दीया जला कर अपने घर में जाए अंधेरे को खोजने और दीया जला कर कोने-कोने में खोजे कि अंधेरा कहां हैं? तो क्या उसे अंधेरा मिलेगा? और आपसे कहूं, आपसे कहूं।। सुनो और पकड़ मत लो, मैं तो कुछ निवेदन कर रहा हूं हार्दिक, जो मुझे दिखाई पड़ता है, वह आपसे कह रहा हूं। इसलिए कि शायद आप भी सोचें और आपको भी दिखाई पड़ जाए। तो अंत में यही प्रार्थना करता हूं कि परमात्मा आपको विचार करने में समर्थ बनाए, परमात्मा आपको खुद के संबंध में सोचने में समर्थ बनाए, ताकि किसी दिन जीवन के वे सारे फूल आपको उपलब्ध हो सकें, जिनमें सौंदर्य है, सत्य है, सुगंध है, संगीत है; वे उपलब्ध हो सकते हैं।

अंत में सबके भीतर बैठे परमात्मा को प्रणाम करता हूं। मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

क्या मनुष्य एक यंत्र है? तीसरा प्रवचन

जागरण के सूत्र

मेरे प्रिय आत्मन्!
मनुष्य एक यंत्र है और मनुष्य की चेतना जागी हुई नहीं है। मनुष्य एक सोती हुई आत्मा है। इस संबंध में बीते दो दिनों में थोड़ी सी बातें मैंने आपसे कहीं।
मनुष्य के सोए हुए होने से मेरा क्या अर्थ है? मनुष्य यंत्र है; इस बात को कहने से क्या प्रयोजन है? इस बात को कहने से मेरा प्रयोजन यह है कि हम जिसे जागरण समझते हैं, वह जागरण नहीं है। बल्कि स्वप्न देखने की ही एक दशा है। रात आकाश में तारे भरे होते हैं, सुबह सूरज निकलता है और हम सोचते होंगे कि सूरज निकलने के साथ तारे समाप्त हो गए या कि तारे कहीं चले गए? न तो तारे समाप्त होते हैं और न कहीं जाते हैं, सूरज की रोशनी में छिप जाते हैं, मौजूद रहते हैं। अगर कोई बहुत गहरे कुएं के भीतर चला जाए, अंधेरे में; तो वहां से उसे दिन में भी आकाश के तारे दिखाई पड़ सकते हैं। तारे मौजूद होते हैं, लेकिन रोशनी में छिप जाते हैं, दिखाई नहीं पड़ते।
रात हम स्वप्न देखते हैं, सुबह उठ कर हम सोचते हैं स्वप्न समाप्त हो गया। स्वप्न हमारे भीतर चलते रहते हैं, और अगर थोड़ी कोई आंख बंद करके अपने भीतर जाए तो पाएगा कि वहां सपने मौजूद हैं, वहां ड्रीम्स चल रहे हैं। किसी भी क्षण आंख बंद करें और भीतर देखें तो पाएंगे कि भीतर कोई स्वप्न चल रहा है। हो सकता है आप राष्ट्रपति बन गए हों अपने सपने में; या हो सकता है, आपने कोई बहुत बड़ा महल खड़ा कर लिया हो; या हो सकता है, आपने अपने दुश्मन की हत्या कर दी हो। आंख बंद करके भीतर देखेंगे तो पाएंगे कि वहां कोई स्वप्न मौजूद है। दिन में जागते हुए भी। और जिस चित्त में स्वप्न मौजूद है, उस चित्त को ही मैं सोया हुआ चित्त कहता हूं। रात भी हम सपने देखते हैं, और जाग कर दिन में भी सपने देखते रहते हैं। एक फर्क पड़ता है, दिन में और रात में, रात में आंखें बंद होती हैं, इसलिए केवल सपना मौजूद होता है, बाहर की दुनिया हमारी आंखों में नहीं होती। दिन में सपना भीतर मौजूद होता है, बाहर की दुनिया बाहर मौजूद हो जाती है।
इस बाहर की दुनिया के कोलाहल में भीतर का सपना दब जाता है, मिटता नहीं है। जैसे सुबह सूरज की रोशनी में आकाश के तारे दब जाते हैं, मिटते नहीं हैं। सांझ होते, सूरज के विदा होते ही तारे चमकने शुरू हो जाते हैं; वैसे ही दिन की रोशनी में बाहर की दुनिया के चित्र सामने खड़े हो जाते हैं; इसलिए भीतर के सपने दब जाते हैं; मिटते नहीं। आंख बंद करें और भीतर देखें सपना मौजूद होगा, सांझ होगी और बाहर की दुनिया से चित्त थक जाएगा और आप फिर सो जाएंगे, सपने फिर शुरू हो जाएंगे।
सपने चौबीस घंटे चल रहे हैं और उनकी एक कंटीन्युटी है। उनका एक क्रम है, लगातार। वह टूटता नहीं है। और इसलिए मैंने कहा कि मनुष्य सोया हुआ है, जो सपने देखता है, वह सोया हुआ है। वह नींद में है। जिस दिन चित्त सारे सपनों से मुक्त हो जाता है, भीतर कोई स्वप्न नहीं रह जाता, कोई ड्रीम नहीं रह जाता, भीतर एक शांति और सन्नाटा पैदा हो जाता है। जैसे किसी झील में लहरें न रह जाएं और झील बिल्कुल शांत हो गई हो, तो उस झील में चांद और तारों के प्रतिबिंब बनने लगते हैं, वैसे ही चित्त में जब कोई स्वप्न नहीं रह जाता, और चित्त शांत हो जाता है, और सब लहरें बंद हो जाती हैं, तो शांत चित्त में ही सत्य का प्रतिबिंब बनना शुरू होता है। शांत चित्त में ही परमात्मा की छवि, परमात्मा उतरना शुरू होता है। उसका आलोक उतरना शुरू होता है। जाग्रत चित्त सत्य की और स्वयं की खोज का द्वार है। लेकिन हम सोए हुए हैं, और सोए हुए हम जो भी करेंगे, उससे हम सत्य के या स्वयं के या आनंद के निकट कभी नहीं पहुंच सकते। सोया हुआ आदमी चाहे कितना ही सोचे कि कहीं पहुंच गया है, कहीं पहुंचता नहीं है!
आपने हजारों बार रात सपने में देखा होगा कि आप कश्मीर पहुंच गए, हिमालय पहुंच गए, या तिब्बत पहुंच गए और सुबह जाग कर आपने पाया है कि आप

वहीं हैं, जहां आप सोए थे आप कहीं नहीं पहुंचे। सोया हुआ आदमी पहुंचने के सपने देख सकता है, लेकिन कहीं पहुंचता नहीं। और जिस दिन भी जागेगा, जिस क्षण भी पाएगा कि मैं तो वहीं खड़ा हूं, जहां था। इसलिए सोया हुआ आदमी केवल यात्रा के सपने देखता है, लेकिन यात्रा नहीं कर पाता। सोया हुआ आदमी सोचता है, मैं यह बन जाऊं, मैं यह बन जाऊं, मैं यह हो जाऊं; यह सब सपना है। जिस दिन भी जागेगा वह पाएगा कि वह कुछ भी नहीं बना था, और वहीं का वहीं खड़ा है। इसलिए सोया हुआ आदमी जिंदगी भर विचार करता है, न मालूम क्या-क्या बन जाने के, लेकिन कुछ बन नहीं पाता है। मौत उसके सारे सपनों को तोड़ देती है, और वह पाता है कि मैं तो वहीं खड़ा हूं जहां मैं था।
यही है विफलता जीवन की, यही है फ्रस्ट्रेशन, यही है दुख, यही है विषाद। बहुत सोचते हैं कहीं पहुंचने का लेकिन कहीं पहुंच नहीं पाते। और जहां पहुंचते हैं, वहां कभी सोचा भी न था। सारी यात्रा मृत्यु में समाप्त होती है। जहां कोई नहीं पहुंचना चाहता, वहां हम पहुंच जाते हैं। जिंदगी भर चलकर मौत में पहुंच जाते हैं। जिंदगी भर दौड़ कर मृत्यु में पहुंच जाते हैं, जहां कोई भी नहीं पहुंचना चाहता।
तो मैं यह आपको आज प्रारंभ में निवेदन कर दूं, जो सोया हुआ है, वह कहीं नहीं पहुंचेगा सिवाय मृत्यु के। सोए हुए होने और मौत में कोई गहरा संबंध है। मौत असल में और गहरे रूप से सो जाने के सिवाय और क्या है? जो जिंदगी भर सोया रहा है, वह मृत्यु की गहरी निद्रा में पहुंच जाता है, और कहीं भी नहीं। लेकिन जो अपने भीतर जागना शुरू हो जाता है, उसके लिए मृत्यु मिट जाती है। सोया हुआ चित्त, स्लीपिंग मांइड मौत में पहुंचता है। जागा हुआ चित्त, अवेकंड माइंड, वहां पहुंच जाता है, जहां अमृत है, जहां कोई मृत्यु नहीं। हम सारे लोग सारी यात्रा करके कहां पहुंचते हैं? यह पूछ लेना जरूरी है, क्योंकि वह मंजिल बता देगी कि हम सोए हुए थे या जागे हुए थे।
एक फकीर से किसी ने जाकर पूछा, हमें कुछ जीवन और मृत्यु के संबंध में समझाएं उस फकीर ने कहा, कहीं और जाओ! अगर जीवन के संबंध में समझना है तो मैं समझाऊं, लेकिन मौत के संबंध में समझना है तो कहीं और जाओ। क्योंकि मौत तो हम जानते ही नहीं कहां है? हम तो केवल जीवन जानते हैं।
जो जागता है वह केवल जीवन को जानता है, उसके लिए मौत जैसी कोई चीज नहीं रह जाती। जो सोता है; वह जीवन को कभी नहीं जान पाता, वह केवल मृत्यु को ही जानता है। सोया हुआ आदमी एक अर्थों में मरा हुआ आदमी है। इसलिए मैंने कहा, मनुष्य एक यंत्र है, क्योंकि सोया हुआ है और जो सोया हुआ है, और यंत्र है वह मृत है। उसे जीवन का केवल आभास है, कोई अनुभव नहीं। और इस सोए हुए होने में वह जो भी करेगा, चाहे वह धन इकट्ठा करे, चाहे वह धर्म इकट्ठा करे, चाहे वह दुकान चलाए और चाहे वह मंदिर, और चाहे वह यश कमाए, और चाहे त्याग करे।। इस सोई हुई स्थिति में जो भी किया जाएगा, वह मृत्यु के अलावा और कहीं नहीं ले जा सकता।
एक कहानी मुझे बहुत प्रीतिकर रही है, वह आपसे कहूं। एक राजा ने रात सपना देखा। रात उसने सपना देखा और वह घबड़ा गया और उसकी नींद टूट गई। और उसने सारे महल को जगा दिया, और उसने सारी राजधानी में खबर पहुंचा दी कि मैंने एक सपना देखा है और जो लोग भी मेरे सपने का अर्थ कर सकें, उसकी व्याख्या कर सकें, वे शीघ्र चले आएं। गांव में जो भी विचारशील लोग थे, समझदार लोग थे, ज्ञानी थे, वे भागे हुए राजमहल आए। उन्होंने राजा से पूछा कि कौन सा सपना देखा कि आधी रात में और हमारी जरूरत पड़ गई? उस राजा ने कहाः मैंने सपने में देखा, मौत मेरे कंधे पर हाथ रख कर खड़ी है, और मुझसे कह रही है, आज सांझ ठीक समय पर, और ठीक जगह पर मुझे मिल जाना। मेरी कुछ समझ में नहीं आता है, इस सपने का क्या अर्थ है? तुम मुझे समझाओ।
वे विचार में पड़ गए और इस सपने का अर्थ करने लगे। क्या होगी इसकी सूचना, क्या है लक्षण और तभी उस राजा के बूढ़े नौकर ने कहा, इनके अर्थ और इनकी व्याख्याएं, और इनके शास्त्र बहुत बड़े हैं, सांझ जल्दी हो जाएगी। और मौत ने कहा है कि सांझ होते-होते, सूरज ढलते-ढलते मुझे ठीक जगह पर मिल जाना; मैं तुम्हें लेने आ रही हूं। उस नौकर ने कहा कि उचित तो यह होगा कि आपके पास जो तेज घोड़ा हो, उसको लेकर इस महल से जितनी दूर निकल सकें, निकल जाएं।

इस महल में एक क्षण भी रुकना खतरनाक है। जितने दूर जा सकें चले जाएं। मौत से बचने का इसके सिवाय कोई रास्ता नहीं है। और अगर इन पंडितों की व्याख्या के लिए बैठे रहे कि ये क्या कहेंगे और क्या अर्थ? तो उस बूढ़े ने कहा, मैं आपसे कहे देता हूं, पंडित आज तक किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे हैं। कोई निष्पत्ति, कोई समाधान पर नहीं पहुंचे हैं; हजारों साल से विचार कर रहे हैं, और अभी तक वह जीवन का ही कोई अर्थ नहीं निकाल पाए, तो मौत का क्या अर्थ निकाल पाएंगे। सांझ बहुत जल्दी हो जाएगी, इनका अर्थ न निकल पाएगा, आप भागें। उचित यही है कि इस महल को छोड़ दें।
राजा को बात समझ में आई, उसने अपना तेज से तेज घोड़ा बुलाया और बैठा और भागा। दिन भर उस दिन वह भागता रहा। न उसने धूप देखी न छांव, न उस दिन उसे प्यास लगी न भूख; जितने दूर निकल सके, निकल जाना था, मौत पीछे पड़ी थी। महल जितना दूर छूट जाए, उतना अच्छा था। मौत के पंजे के बाहर जितना हो जाए, उतना अच्छा। सांझ होते-होते वह सैकड़ों मील दूर निकल गया। उसने एक बगीचे में जाकर अपने घोड़े को रोका, वह प्रसन्न था। वह काफी दूर आ गया था। सूरज ढल रहा था, उसकी आखिरी किरण डूबने लगी, वह घोड़ा बांध रहा था, उसे अनुभव हुआ कि पीछे किसी ने कंधे पर आकर हाथ रख दिया है। उसने पीछे लौट कर देखा, जो काली छाया सपने में उसको दिखाई पड़ी थी, वही खड़ी थी। वह घबड़ा गया, उसके सारे प्राण कंप गए। उसने कहा तुम? तुम कौन हो? उस मृत्यु ने कहा मैं हूं तुम्हारी मृत्यु। क्या भूल गए, सुबह ही आज ही रात, बीती रात ही तो मैंने तुम्हें स्मरण दिलाया था कि सांझ होने के पहले सूरज ढलने के पहले ठीक जगह मिल जाना। मैं तो बहुत घबड़ाई हुई थी, क्योंकि तुम जहां थे वहां से इस झाड़ के नीचे तक आने में बड़ी कठिनाई थी, लेकिन तुम्हारा घोड़ा बहुत तेज था, तुम ठीक जगह आ गए हो। मैं तुम्हारे घोड़े को धन्यवाद देती हूं, इस जगह तुम्हें मरना था। और मैं चिंतित थी कि तुम आ पाओगे ठीक जगह कि न आ पाओगे।
दिन भर की दौड़ सांझ को मौत में ले गई। सोचा था बचने के लिए भाग रहा है,
वह राजा। उसे पता भी न था कि बचने के लिए नहीं भाग रहा था, जिससे बचना चाह रहा था, प्रतिक्षण उसी के मुंह में चला जा रहा था। हम सब भी अपने-अपने घोड़ों पर सवार और हम सब भी मौत के मुंह में चले जा रहे हैं। और हम जो भी करेंगे वह शायद हमें ठीक जगह पहुंचा देगा, जहां मौत है। और हम जिस रास्ते पर भी चलेंगे, वो हमें मौत के अतिरिक्त और कहीं नहीं ले जाएगा, आज तक यही होता रहा है। सोया हुआ आदमी जो कुछ भी करेगा, वह मौत में ले जाता है। सोने का अंतिम परिणाम मौत ही हो सकती है। लेकिन जरूरी नहीं है कि कोई सोया ही रहे, जागा जा सकता है। लोग जागे हैं, लोग आज भी जाग सकते हैं। और जागने का मार्ग भी है, रास्ता भी है, द्वार भी है। लेकिन पहली बात सोने को तोड़ना है, नींद को तोड़ना है। नींद में हम जो भी करेंगे उससे कुछ भी होने को नहीं है। हमारी पूजा और हमारी प्रार्थना भी कुछ न करेगी। नींद बुनियादी रूप से पहले चरण की तरह टूट जानी चाहिए, फिर कुछ हो सकता है। वह नींद कैसे टूटे उस पर आज, आज की संध्या आपसे बात करनी है। कैसे भीतर जागरण, कैसे भीतर चेतना होश से भर जाए, भीतर दिया जल जाए बोध का? उसकी आज आपसे बात करनी है।
पहली बात ही ठीक से समझ लें। सोए हुए कुछ भी नहीं हो सकता है। एक घटना मुझे स्मरण आती है। एक फलों की दुकान के पास एक भिखारी खड़ा हुआ था, दोपहर हो गई थी, और फलों की दुकान का मालिक अपने घर भोजन करने को जाना चाहता था। उसने एक लोमड़ी पाल रखी थी, जब वह भोजन के लिए जाता था, तो वह लोमड़ी उसकी दुकान के बाहर बैठ कर पहरा दिया करती थी। उसने उस लोमड़ी को कहा कि तू बाहर आ जा, और द्वार पर बैठ; और आस-पास कोई भी आदमी आए तो खयाल रखना, वह कोई ऐसा काम तो नहीं कर रहा है, जिससे दुकान को नुकसान पहुंचने की संभावना हो; अगर वह कुछ काम करता हुआ दिखाई पड़े तो सचेत हो जाना, और आवाज दे देना। और देख लोमड़ियां कुत्तों से भी ज्यादा होशियार होती हैं, इसलिए मैंने तुझे पाला है, और तेरे ऊपर यह जिम्मा छोड़ा है। उस लोमड़ी से जब यह कहा गया, वह दुकान के पीछे से बाहर आकर बैठ गई।
वह मालिक चला गया और जो भिखारी पास में खड़ा हुआ यह बात सुनता था, लोमड़ी
से कही गई बात उसने सुनी थी। वह चुपचाप जहां बैठा हुआ था, वहीं लेट गया और सो गया। आंखें बंद कर लीं और सो गया। लोमड़ी ने सोचा, सो जाना तो कोई क्रिया

नहीं है, स्लीपिंग इ.ज नॉट डूइंग एनीथिंग। तो सो रहा है, यह कुछ कर तो रहा नहीं है, तो इसके सोने से तो कोई भी खतरा नहीं है दुकान को। क्योंकि वह कुछ करता, तो कुछ खतरा हो सकता था, लेकिन यह तो कुछ कर नहीं रहा है, सोना कोई करना नहीं है। उसने यह अपने मन में सोचा। और यह तर्क बड़ा उचित था कि सोना कोई क्रिया तो नहीं है, यह कुछ कर तो नहीं रहा है, जिससे दुकान को कोई खतरा और हानि का डर हो, सिर्फ सो रहा है। लेकिन उसे सोते देख कर लोमड़ी को भी नींद आने लगी। नींद बड़ी संक्रामक बीमारी है, अगर पास में आपके दो-चार लोग सोने लगें तो बहुत मुश्किल हो जाएगा आपका जागना; आप भी सो जाएंगे। उस लोमड़ी को नींद आने लगी। और कोई खतरा भी न था, एक आदमी था, जिससे खतरा हो सकता था, वह भी सो गया था, तो लोमड़ी भी सो गई।
लोमड़ी के सोते ही वह आदमी उठा, दुकान के भीतर घुस गया और जो चोरी उसे करनी थी, वह उसने कर ली। लोमड़ी को यह पता नहीं था कि सोते हुए लोग भी कुछ करते हैं, लोमड़ी भोली-भाली थी, उसे आदमियों का कोई अंदाज नहीं था कि आदमी बहुत खतरनाक है। सोए हुए आदमी से भी डर है। और सच तो यह है कि सोए हुए आदमी से ही डर है। और उस आदमी ने चोरी की।
सोया हुआ आदमी चोरी ही कर सकता है। सोया हुआ आदमी असत्य बोल सकता है, सोया हुआ आदमी बेईमानी कर सकता है, हिंसा कर सकता है। सोया हुआ आदमी ही यह काम कर सकता है, यह लोमड़ी को पता नहीं था। लोमड़ी ने समझा कि सोना कोई काम थोड़े ही है, जो सो गया, सो गया; उससे क्या डर है? लोमड़ी भोली-भाली थी, उसे जानवरों का पता होगा, आदमियों का कोई पता नहीं था। आदमी बड़े खतरनाक हैं, और सोता हुआ आदमी बहुत खतरनाक है। क्योंकि सोया हुआ आदमी कुछ न कुछ करेगा, और नींद में वह जो भी करेगा, वह खतरनाक है, वह चोरी होगी, हिंसा होगी, झूठ होगा, असत्य होगा।
वह आदमी चोरी करके भाग गया। उसका मालिक वापस आया, उसने देखा चोरी हो
गई है। चोरी हो गई थी। फल चुरा लिए गए थे। और लोमड़ी घबड़ाई हुई बैठी थी। उसने उससे पूछा कि क्या हुआ? लेकिन लोमड़ी तो खुद सो गई थी, वह क्या बताती? वह भागा बाहर, थोड़ी ही दूर एक दरख्त के पीछे उसने उस आदमी को छिपा हुआ, फल खाते हुए पाया, जिसने चोरी की थी। वह उसके पास गया और उसने कहाः मेरे मित्र, क्या मैं तुमसे पूछ सकता हूं कि तुमने चोरी कैसे की? उसने कहा बहुत आसान है। लोमड़ी को मैंने सोने का धोखा दिया, मैं सो गया और लोमड़ी धोखे में आ गई। उसने शायद सोचा हो कि सोया हुआ आदमी क्या कर सकता है? लेकिन मैं तुम्हें बता देता हूं, आज तक दुनिया में जो कुछ भी किया है, वह सोए हुए आदमी ने ही किया है। इसलिए दुनिया इतनी बदतर है। तुम्हारी लोमड़ी धोखे में आ गई, तुम धोखे में मत आना कभी। अगर लोमड़ी मेरे सोने के धोखे में न आती, तो मैं चोरी न कर पाता।
मैंने यह कहानी सुनी और यह कहानी मुझे बड़ी हैरानी की लगी, और बड़ी सच्चाई से भरी हुई लगी। यह हम जो कुछ भी कर रहे हैं, जीवन में उससे दुख फलित होता है, हिंसा, चोरी, अनाचार। शायद हमें इस बात का पता भी नहीं है, और शायद इस बात का हमें कोई खयाल भी नहीं है, ये सारी बातें हमारे सोने से पैदा होती हैं, सोने से निकलती हैं। हम नींद में हैं, हमारी चेतना सोई हुई है। और इस सोई हुई स्थिति में अगर हम चाहें कि इन सारी क्रियाओं को बदल दें, तो यह असंभव है। यह बिल्कुल इंपासिबिलिटी है। इसे दो-टूक ठीक से समझ लें, इसे बहुत स्पष्ट रूप से समझ लें कि सोई हुई स्थिति में कोई परिवर्तन मनुष्य के जीवन में संभव नहीं है। और अगर परिवर्तन कोई अपने ऊपर थोप भी लेगा तो वह झूठा होगा, और पाखंड होगा। उसके प्राणों में कोई क्रांति नहीं होगी, वह वही का वही आदमी भीतर होगा। सोई हुई चेतना ऊपर उठने में असमर्थ है, सोई हुई चेतना सत्य को और जीवन को जानने में असमर्थ है।
कैसे इसे जगाएं, क्या करें? लोग कहते हैं कि अगर आत्मा को जानना है, तो आत्मा को मानना पड़ेगा। मैं नहीं कहता। सोया हुआ आदमी क्या मान सकता है? उसके मानने का कितना मूल्य है? उसके मानने का कितना अर्थ है, उसके विश्वास का कितना अर्थ है? आत्मा को मानना नहीं पड़ेगा, बल्कि जागना पड़ेगा, और जो जागता है वह पाता है कि आत्मा के अतिरिक्त और कुछ भी सत्य नहीं है। लेकिन यह जागरण कहां से शुरू हो? लोग आपसे कहेंगे कि भीतर झांके। मैं आपसे

कहूंगा, जो बाहर झांकने में समर्थ नहीं है, वह भीतर कभी नहीं झांक सकेगा। इसलिए जागरण का पहला चरण है, बाहर जो जगत फैला हुआ है, उसके प्रति जागरण। वह जो हमारे चारों तरफ फैला हुआ जगत है, उसके प्रति जागरण पहला चरण है, वहीं से शुरुआत हो सकती है। जो बाहर के प्रति जागेगा वह धीरे-धीरे-धीरे भीतर के प्रति भी जागना शुरू हो जाता है। क्यों? क्योंकि बाहर और भीतर दो चीजें नहीं हैं, एक ही चीज के दो छोर हैं। जो बाहर के प्रति जागना शुरू होगा, वह धीरे-धीरे उसका जागरण, उसकी अवेयरनेस गहरी होगी और भीतर आता चला जाएगा। इसलिए जागरण के लिए पहला सूत्र है, जो हमारे चारों तरफ फैला हुआ जगत है, उसके प्रति जागना है।
आप कहेंगे कि उसके प्रति तो हम जागे हुए हैं। लेकिन मैं निश्चित आपको कहूं कि उसके प्रति हम जागे हुए नहीं हैं। जो वृक्ष आपके द्वार पर लगा है, उसको कभी आपने जाग कर देखा है? उसको कभी आपने आंख भर कर देखा है, कभी आप उसके पास दो क्षण रुके हैं? जो पत्नी आपके घर में बीस वर्षों से आपकी सेवा कर रही है, कभी उसकी आंखों में झांका है, कभी देखा है? कभी दो क्षण उसके प्रति होश से भरे हैं? वह बच्चा जो आपके घर में पैदा हुआ है, कभी उसके पास दो क्षण बैठकर आपने उसे देखा है, निहारा है, निरीक्षण किया है? नहीं, बिल्कुल भी नहीं। चारों तरफ जो हमारी जिंदगी फैली है, उसके प्रति हम बिल्कुल सोए-सोए चलते हैं। लेकिन कैसे यह पता चलेगा? यह पता तो तभी चल सकता है, कभी जिंदगी में आप पर कोई खतरे आए हैं? कभी रास्ते में चलते कोई आदमी ने अचानक आपके ऊपर छुरा उठा लिया है? कभी आप किसी गड्ढे के ऊपर से गुजरे हैं, जहां गिरने और मर जाने का डर हो?
अगर मैं अभी आपके पास आऊं और आपकी छाती पर छुरा लेकर खड़ा हो जाऊं, तो आपको पहली दफा पता चलेगा कि आप अब तक सोए रहे थे। उस खतरे में एक क्षण को शायद आप जाग जाएं और आप गौर से देखें कि क्या हो रहा है? लेकिन साधारणतः हम सोए-सोए चलते हैं। जिंदगी में दो-चार मौके आते हैं, जब जीवन खतरे में होता है, तब एक जाग, एक जागरण एक क्षण को भीतर पैदा होता है, और हम फिर सो जाते हैं। लेकिन ऐसा कोई भी आदमी खोजना कठिन है, जिसे ऐसे क्षण न आएं हों, जब उसने जागरण का अनुभव किया हो।
सामान्यतः हम सोए-सोए चलते हैं। कभी आपने अपने घर के बाहर चलती हुई
सड़क को गौर से देखा है? अगर आप पांच क्षण भी बैठ कर गौर से देखेंगे तो आप पाएंगे कि लोग सोए हुए चले जा रहे हैं। आप लोगों को देख कर पाएंगे कि वे सड़क पर चल रहे हैं, लेकिन उनका मन कहीं और चल रहा है। आप लोगों की आंखें, चेहरे और कदम देख कर समझ सकेंगे कि जैसे वे नींद में चले जा रहे हों, उन्हें चारों तरफ का कोई पता नहीं है। चारों तरफ की एक फीकी सी झलक है, जिसकी वजह से वे कामचलाऊ रूप से चल लेते हैं, निकल जाते हैं रास्तों पर से। लेकिन कोई बोध नहीं है कि क्या हो रहा है चारों तरफ।
अगर आप यहां बैठें हैं और कोई आपको आकर खबर दे कि आपके मकान में आग लग गई, तो आप यहां से उठेंगे और अपने घर की तरफ भागेंगे। क्या आपको रास्ते में चलते हुए लोग दिखाई पड़ेंगे? क्या कोई आपको नमस्कार करेगा तो सुनाई पड़ेगा? सुनाई तो जरूर पड़ेगा, क्योंकि कान हैं तो सुनेंगे और दिखाई तो जरूर पड़ेगा क्योंकि आंखें हैं तो दिखाई पड़ेगा। लेकिन कल मैं अगर आपसे पूछूं कि रास्ते पर किन लोगों ने आपको नमस्कार किया और कौन लोग दिखाई पड़े थे? आप कहेंगे मुझे कोई होश नहीं था, मेरे मकान में आग लगी थी। कान सुनते थे, आंखें देखती थीं, लेकिन कोई होश भीतर नहीं था। रास्ते से आप गुजर भी गए, बिना टकराए; बिना किसी से उलझे आप अपने घर भी पहुंच गए। लेकिन आपको कुछ भी पता नहीं, रास्ते पर क्या हुआ? तो मैं कहूंगा, रास्ते पर आप सोए हुए निकले। अभी भी हम रोज सोए हुए निकल रहे हैं, थोड़ी मात्राओं का भेद होगा नींद का, लेकिन हम सोए हुए निकल रहे हैं। हमें कोई पता नहीं, क्या हो रहा है हमारे चारों तरफ? क्या फैला है हमारे चारों तरफ इसका भी हमें कोई बोध नहीं है? जिंदगी एक यंत्र की भांति एक रूटीन की भांति रोज चलती जाती है। हो सकता है यह आपको खयाल में न हो, तो घर लौट कर अपनी पत्नी को दो क्षण गौर से देखना, इस स्त्री को आपने कभी देखा है? इसके साथ आप वर्षों रहे हैं, इसको कभी आपने देखा है? कभी आपने बहुत शांत मन से इसको निहारा है? दूसरी चीजें

तो बहुत दूर, जीवन जो चारों तरफ फैला हुआ है, वह तो बहुत दूर है, जो हमारे बहुत निकट खड़ा हुआ जीवन है, उसके प्रति भी हम होश से भरे हुए नहीं हैं। और जब हम इस बाहर की रेखा पर होश से भरे हुए न हों, तो होश भीतर नहीं ले जाया जा सकता।
अंधी हैलन केलर को किसी ने पूछा कि तुम्हें जिंदगी में सबसे बड़े चमत्कार की, और सबसे बड़े रहस्य की, और सबसे बड़ी मिस्टिरीयस बात क्या अनुभव हुई? हैलन कैलर ने कहाः एक बात मैंने अनुभव की, लोगों के पास आंखें हैं, लेकिन शायद ही कोई अपनी आंखों से देखता हो। उसने कहाः लोगों के पास आंखें हैं, लेकिन शायद ही कोई आंखों से देखता हो। लोगों के पास कान हैं, लेकिन शायद ही कोई कानों से सुनता हो। लोगों के पास हृदय हैं, लेकिन शायद ही कोई हृदय से अनुभव करता हो। हम अपनी आंखों का उपयोग करते हैं? हम अपने कानों का उपयोग करते हैं?
हमने अपने सारे जीवन के जो द्वार हैं, जिनसे बाहर का जीवन संप्रेषित होता है, और अनुभव होता है, उसे सबको बंद कर रखा है। हमारे पास जीवन की कोई खबर भीतर नहीं आ पाती। अगर, अगर ये द्वार खुले हों और जीवन की खबर आनी शुरू हो जाए, तो हम एक बिल्कुल दूसरे मनुष्य के रूप में परिवर्तित होने लगेंगे। अगर कोई एक व्यक्ति अपने घर के द्वार पर खड़े हुए दरख्तों को भी ठीक से देख ले तो उसके जीवन में कुछ और बात शुरू हो जाएगी। लेकिन नहीं, यह हमें कुछ दिखाई नहीं पड़ता। हमारी आंखों पर जैसे एक पर्दा है नींद का। और उस पर्दे के पार हमें कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। यहां आप बैठे हुए हैं, मैं यहां बोल रहा हूं; लेकिन इस बात की बहुत कम संभावना है कि आप मुझे सुन रहे हों। आपका मन न मालूम कहां-कहां हो सकता है। और अगर मन कहीं और है, तो आपको यह भ्रम पैदा होगा कि आप मुझे सुन रहे हैं, लेकिन सुन नहीं पाएंगे। सुनने का खयाल पैदा होगा, कान से आवाज टकराएगी और लौट जाएगी। और आपको यह भ्रम दे जाएगी कि आपने मुझे सुना, लेकिन आपका मन कहीं और है तो आप यहां सोए हुए होंगे।
और हमारा मन हर क्षण कहीं और है, इसलिए हम हर जगह सोए हुए हैं। जब हम भोजन कर रहे हैं तब मन दफ्तर में है, और जब हम दफ्तर में हैं तब मन भोजन करता है। हमारा मन कहीं और है, जहां हम हैं, वहां नहीं। और नींद का यही लक्षण है कि मन कहीं और हो, जहां हम हों वहां न हो।
यह जो चित्त की दशा है, बाहर के प्रति भी हम सोए-सोए हैं, हमारी संवेदनशीलता, रिसेप्टिविटी, बाहर के प्रति हमारी ग्राहकता भी ना के बराबर है, हमें कुछ बाहर की, बाहर की घटनाएं हमें छूती नहीं, न बाहर का सौंदर्य हमें छूता है, न बाहर की कुरूपता हमें छूती है। न बाहर का दुख, न बाहर का आकाश, न तारे, न नदियां, न पहाड़, न पर्वत कुछ हमें छूता नहीं। हम उन सबके पास से अंधे और बहरे की तरह गुजर जाते हैं। हमें कुछ दिखाई भी नहीं पड़ता कि यह क्या हो रहा है? काश हमें दिखाई पड़ सके तो शायद हमारा जीवन दूसरा हो जाए। यह कैसे दिखाई पड़े?
बाहर के प्रति जागने के लिए जरूरी है, अचानक आकस्मिक रूप से कभी भी दो क्षण को ठहर जाएं, और बाहर की दुनिया को देखें कि यह क्या है? अभी यहां मैं बोल रहा हूं, दो क्षण को सजग हो जाएं और देखें कि कौन बोल रहा है, और क्या बोल रहा है? तो शायद आपको भीतर एक लहर दौड़ती हुई मालूम पड़े और लगे कोई चीज सोई थी और उठ गई। रास्ते पर चलते-चलते अचानक रुक जाएं और दो क्षण रास्ते पर खाली आंख घुमा कर देखें कि यह क्या हो रहा है? यह क्या है? तो शायद अचानक रुकने से भीतर चलते हुए सपने ठहर जाएं एक क्षण को और आप देख सकें एक क्षण को कि क्या हो रहा है? किसी वृक्ष के पास से निकलते वक्त एकदम से रुक जाएं, आंखें उठाएं और वृक्ष को देखें। कभी रात छत पर निकल आएं, आंखें उठाएं और आकाश को देखें, सिर्फ देखें। तो शायद एक आध क्षण को अचानक रुकने से, झटका लगने से भीतर की चेतना में फर्क पड़े, फर्क पड़ता है।
जो मैं कह रहा हूं, वह बहुत सैकड़ों प्रयोग के आधार पर कह रहा हूं। उसे करके देखें, कभी भोजन करते वक्त एक क्षण को रुक जाएं और खयाल करें कि मैं देखूं क्या हो रहा है? तो आप पाएंगे कि भीतर जैसे कोई चीज जागी, एक क्षण को झलक आएगी और चली जाएगी। लेकिन उसकी झलक दो बातें साफ कर देगी, एक तो यह साफ

कर देगी कि साधारणतः आप सोए हुए हैं, और दूसरी बात यह साफ कर देगी कि वह जागरण क्या है? आपक ोबोध हो जाएगा।
एक छोटे से गांव में मैं बहुत दिन तक था। उस गांव की नदी के पास एक छोटी पहाड़ी थी और उस पहाड़ी पर एक इतनी संकरी कगार थी कि अगर उस पर किसी को चलाया जाए तो गिरने के और मर जाने के बहुत मौके थे। जब भी मुझसे कोई पूछता कि यह जागरूकता क्या है? यह अवेयरनेस क्या है, जिसकी आप बातें करते हैं? तो मैं उससे कहता कि आओ मेरे साथ नदी पर चलो। और मैं उसे उस पहाड़ी की कगार पर ले जाता, आगे उसके चलता और उससे कहता कि आओ मेरे पीछे। वह कगार थी इतनी संकरी कि एक पैर चूक जाए तो कोई दो सौ फीट नीचे गड्ढे में गिरना पड़ेगा, जो कि खतरनाक था और कोई भी गिरने को राजी नहीं था। जो दूसरा व्यक्ति आता उसे एक-एक कदम सम्हाल कर रखना पड़ता; एक-एक श्वास सम्हाल कर लेनी पड़ती; वहां सोए हुए चला नहीं जा सकता था। कगार पार करने के बाद मैं उससे पूछता, तुम्हें कुछ फर्क अनुभव हुआ तुम्हारे भीतर? क्या तुम्हें यह अनुभव हुआ कि इस बीच जब तक तुम कगार को पार कर रहे थे, तुम्हारे भीतर न तो कोई विचार चला, न कोई सपना चला? क्या तुम्हें पता चला कि तुम बहुत सावधान थे, बहुत अटेंटिव थे? क्या तुम्हें पता चला कि तुम भीतर बिल्कुल जागे हुए थे? और वह मुझसे कहता कि इसका पता चला। भीतर अनुभव हुआ कि जैसे मैं बिल्कुल और तरह से चल रहा हूं, जैसा मैं कभी नहीं चला। एक-एक कदम होश से भरा हुआ था, एक-एक श्वास भी, हृदय की धड़कन भी मुझे सुनाई पड़ने लगी थी, बीच में। और सब तरफ मैं जागा हुआ था, क्योंकि एक पैर खतरे में और मौत सामने थी।
कभी क्षण भर को एकदम रुक जाएं, अचानक। रास्ते पर चलते हुए, भोजन करते हुए, बिस्तर पर लेटते हुए, सीढ़ियां चढ़ते हुए, रास्ते पर से गुजरते हुए, अचानक रुक जाएं दिन में दो चार बार, एक सैकेंड को; और चारों तरफ जाग कर देखें कि क्या है? तो आप को भीतर एक फर्क मालूम पड़ेगा; जैसे नींद क्षण भर को टूटी। एक गैप पैदा हुआ। और अगर यह निरंतर अनुभव में आता चला जाए, और उस क्षण के आनंद की प्रतीति हो, जो कि होगी। और उस क्षण में कोई दुख, कोई अशांति मालूम न होगी, क्योंकि उस जागे हुए क्षण में न कोई दुख है और न कोई अशांति है, तो शायद वे क्षण बढ़ते चले जाएं, और आपके जागने की क्षमता बढ़ती चली जाए। लेकिन एक तो कभी-कभी ठहर कर जाग लेना जरूरी है, दूसरा जीवन के प्रति निरन्तर, सतत ऑब्जर्वेशन का, निरीक्षण का भाव रखना भी जरूरी है।
एक वृद्ध वैज्ञानिक अपने बच्चों को समझा रहा था कि निरीक्षण क्या है? उसके बच्चों ने उससे पूछा कि विज्ञान की खोज में सबसे बड़ी बात क्या है? उस वृद्ध वैज्ञानिक ने कहाः दो बातें जरूरी हैं, एक तो करेज, साहस, और दूसरा निरीक्षण, ऑब्जर्वेशन। उन बच्चों ने कहा कि हमें ठीक से समझा दें, तो शायद हमारी समझ में आ जाए। वह वृद्ध वैज्ञानिक एक प्याली में नमक का बहुत कड़वा, बहुत बेस्वाद घोल बना कर लाया, और उसने उन बच्चों को कहा कि यह नमक का घोल है, बहुत कड़वा, बहुत बेस्वाद; इसे जीभ पर रखोगे तो वमन हो जाएगा, उलटी हो जाएगी। सारा मुंह तिक्त और कड़वा हो जाएगा। लेकिन इसकी जांच करनी है और इसे पहचानना है। तो मैं अपनी अंगुली इसमें डुबाऊंगा और उसे अपनी जीभ पर रखूंगा। तुम ठीक से निरीक्षण करते रहना कि मैं किस भांति यह कर रहा हूं? जब मैं कर चुकूं तो तुम्हें भी यही करना होगा, अंगुली डुबानी होगी और जीभ पर रखनी होगी। ठीक से निरीक्षण करना। जैसा मैं करूं ठीक वैसा ही तुम्हें भी करना है। उन बच्चों ने गौर से देखा, वे टकटकी लगा कर देखते रहे, निरीक्षण करना जरूरी था। फिर उनको भी वैसा ही करना था। उस बूढ़े ने अपनी अंगुली डुबाई, फिर अंगुली को जीभ पर रखा।
लेकिन जैसा बच्चों की अपेक्षा थी कि उसके चेहरे पर बेस्वाद होने के भाव आएंगे, शायद उसे उलटी हो जाएगी, न तो उसे उलटी हुई, न उसके चेहरे पर कोई भाव आए, न कोई फर्क हुआ। फिर इसके बाद वह प्याली घुमाई गई और हर बच्चे ने उसमें अंगुली डुबाई और अपनी जीभ पर रखी। लेकिन जीभ पर रखते से ही जैसे जहर मुंह में पहुंच गया हो, वे सारे बच्चे थूकने लगे, कुछ बच्चों को उलटी हो गई। उन सारे बच्चों के चेहरे एकदम घबड़ाहट से भर गए, उनकी आंखों में आंसू आ गए। जब वे सारे बच्चे यह प्रयोग कर चुके तो उस वृद्ध वैज्ञानिक ने कहाः मेरे बच्चों जहां तक साहस का सवाल है, तुम सब पूरे अंक पाने में सफल हो गए।

तुम सब साहसी हो, लेकिन जहां तक निरीक्षण, ऑब्जर्वेशन का सवाल है, तुम सब असफल हो गए। क्योंकि मैंने जो अंगुली घोल में डुबाई थी, वही मैंने जीभ पर नहीं रखी थी, मैंने दूसरी अंगुली जीभ पर रखी थी। तुमने निरीक्षण नहीं किया, तुमने ठीक से नहीं देखा। जो अंगुली मैंने डुबाई थी, वही मैंने जीभ पर नहीं रखी, मैंने दूसरी अंगुली जीभ पर रखी थी। तो साहस तो तुमने किया लेकिन निरीक्षण तुम नहीं कर पाए।
जो उस वृद्ध वैज्ञानिक ने उन बच्चों को समझाया, जीवन के संबंध में भी मैं आपसे यही कहता हूं कि हममें से बहुत से लोग साहस तो करते हैं, लेकिन निरीक्षण नहीं कर पाते। और बिना निरीक्षण के साहस खतरनाक है। सोया हुआ आदमी साहसी हो जाए तो बड़ा खतरनाक है, उससे दुनिया में सिवाय बुराई के और कुछ भी पैदा नहीं हो सकता। हम सबने साहस तो बहुत किया दुनिया में, लेकिन निरीक्षण नहीं किया। जीवन को देखा नहीं कि क्या हो रहा है, चारों तरफ क्या है? उसके प्रति हमने आंख को कभी बहुत सतेज करके, जाग कर देखा नहीं। तो निरीक्षण, सतत निरीक्षण चाहिए जीवन के चारों तरफ। जीवन बड़ी विराट बात है। शायद सुबह से लेकर सांझ तक हर आदमी के जीवन में चारों तरफ इतनी घटनाएं घट रही हैं कि अगर वह उन्हें जाग कर देखे, अगर उनका निरीक्षण करे, तो न मालूम क्या हो जाए?
एक फकीर मरने को था, तो उसके मित्रों ने उससे पूछा, तुमने जीवन में यह सारी शिक्षाएं कहां पाईं? उस फकीर ने कहा, मैंने जाग कर जो भी मेरे आस-पास से निकला उसको देखा, मैं होशपूर्वक जीया। और तब पूरा जीवन ही मेरे लिए गुरु हो गया और ज्ञान हो गया। उन्होंने कहा कि तुम मुझे ठीक से समझाओ तो हम समझ सकें। उस फकीर ने कहाः मैं एक गांव से गुजरता था; आधी रात भटक गया था, और गांव में पहुंचा, सारा गांव सोया हुआ था। एक व्यक्ति अंधेरी गली में मुझे मिला, मैंने उससे कहा कि मैं परदेसी हूं और इस गांव में ठहर जाना चाहता हूं, क्या मुझे ठहरने की कोई जगह बता सकोगे? आधी रात हो गई है, मैं कहां जाऊं? उस आदमी ने कहाः मालूम होता है आप कोई साधु हैं, तो साधु से झूठ क्या बोलना? मैं एक चोर हूं और मैं चोरी करने निकला हूं। क्या आप मेरे घर मेहमान बन सकते हैं, तो मैं आपको अपने घर ले चलूं? वह चोर, उस साधु ने कहा, मुझे अपने घर ले गया। मैं डर रहा था, उसके घर जाऊं या न जाऊं? लेकिन उसकी सच्चाई ने मेरे प्राणों को इतना प्रभावित कर दिया कि उसने मुझसे कहा कि मैं एक चोर हूं। इतनी हिम्मत से तो मैं अपने बाबत भी कुछ न कह सकता था। मेरी दृष्टि में वह चोर मुझसे बड़ा साधु हो गया। और मैं डर रहा था, उसके घर जाने में। डरना तो उसे चाहिए था कि वह एक साधु को घर ले जाए कि न ले जाए। डर मैं रहा था उसके घर जाने में कि मैं जाऊं या न जाऊं। तब मुझे ज्ञात हुआ कि मेरी साधुता उसके चोर होने से कमजोर है।
मैं उसके घर गया। उसने मुझे घर सुलाया और कहा कि अब आप विश्राम करें, मैं सुबह तक वापस लौट आऊंगा। सुबह कोई सूरज उगने के थोड़ी देर पहले वह वापस लौटा, तो मैंने उससे पूछा कि रात में कुछ मिला या नहीं? उसने कहा, आज तो कुछ भी नहीं पाया। लेकिन कल फिर कोशिश करूंगा। और उसकी आंखों में मुस्कुराहट थी, उसके ओंठों पर आशा थी। उसके चेहरे पर कोई निराशा न थी कि वह निराश हो गया। और मैं हैरान हुआ। मैं एक महीने उसके घर में रुका रहा। और रोज रात को वह गया और रोज सुबह लौटा। और रोज मैंने उससे पूछा, और उसने कहा, आज तो नहीं मिला, लेकिन कल फिर कोशिश करूंगा। फिर एक महीने के बाद मैंने उससे विदा ले ली। और जब मैं परमात्मा की खोज में रोज-रोज असफल हो जाता था, और मेरा मन होता था, छोड़ दूं यह खोज। न मालूम परमात्मा है भी या नहीं। छोड़ दूं यह काम, लौट जाऊं वापस। तभी मुझे उस चोर की स्मृति आती थी और खयाल आता था, वह जो साधारण सी संपत्ति खोजने रोज जाता था, और हारकर लौट आता था, लेकिन निराश नहीं हुआ; तो मैं तो परमात्मा की संपत्ति खोजने निकला हूं और इतनी जल्दी निराश हो जाऊं? मैंने उस चोर को गौर से देखा तीस दिन। और उसका फल यह हुआ कि मेरे जीवन से निराशा हमेशा को चली गई।
और उस फकीर ने कहा कि मैं एक गांव से निकलता था, सांझ का वक्त था, एक छोटा सा बच्चा हाथ में दीया लिए चला जा रहा था। शायद वह किसी के घर दीया पहुंचाने को था। मैंने उस बच्चे को रोका और मैंने पूछा कि प्यारे बेटे!

क्या तुम यह बता सकते हो कि दीये में ज्योति कहां से आती है? यह मैंने इसलिए पूछा कि उस वक्त मेरे दिमाग में बड़े दार्शनिक प्रश्न उठा करते थे और मैं बड़े ऊहापोह में विचार में पड़ा हुआ था। जगत कहां से आया, आत्मा कहां से आई? इसी तरह के प्रश्न सोचता था। उस बच्चे को दीया लिए हुए देख कर मेरे मन में खयाल हुआ कि दीये में ज्योति कहां से आई?
मैंने उस बच्चे को पूछा, क्या तुम मुझे बता सकते हो? यह ज्योति कहां से आई? उस बच्चे ने मेरी तरफ देखा और दीये को फूंक मार कर बुझा दिया, और वह मुझसे बोला, क्या आप बता सकेंगे कि ज्योति कहां चली गई? मैंने उस बच्चे को गौर से देखा और मैंने उसके पैर छू लिए, मेरा यह भ्रम टूट गया कि मेरी उम्र ज्यादा है और इसलिए छोटे बच्चे से मुझे ज्ञान नहीं मिल सकता और मुझे उसे ज्ञान देना चाहिए, मेरा यह भ्रम टूट गया। मेरा उम्र का भ्रम टूट गया उसी दिन। मैंने ठीक से निरीक्षण किया उस बच्चे का, मेरा उम्र का भ्रम टूट गया। हम दोनों एक जगह खड़े थे। जितना बच्चा जानता था, उतना मैं जानता था और जो बच्चा नहीं जानता था, वह मैं भी नहीं जानता था। उस दिन से मेरा उम्र का जो भ्रम था, वह टूट गया, वह खत्म हो गया। उस दिन के बाद फिर मेरे जीवन में उम्र नहीं आई। उस दिन के बाद मैं बच्चा का बच्चा हूं, फिर उम्र खत्म हो गई। क्योंकि मैं भी तो नहीं जानता कुछ, और बच्चा भी नहीं। मुझमें और उसमें कोई भेद नहीं रहा। उस दिन से मैं ज्ञानी नहीं रह गया।
मैंने उस बच्चे का निरीक्षण किया, ठीक से उस घटना को देखा और एक क्रांति हो गई। जीवन में चौबीस घंटे घटनाएं घट रही हैं। चारों तरफ और हम अन्धे की तरह निकले जा रहे हैं। इसलिए हमारे जीवन में कोई चीज जाग नहीं रही।
मैं आपसे निवेदन करूंगा, पहली बात जो जीवन चारों तरफ फैला हुआ है, उसके प्रति जागना है। चौबीस घंटे, सतत, उठते-बैठते जो भी चारों तरफ हो रहा है, उसे बहुत निरीक्षण से, बहुत गौर से, बहुत आंख खोल कर, कान खोल कर देखना और समझना जरूरी है। क्या होगा उससे? उससे दो बातें हो सकती हैं। पहली बात, अगर बाहर के जीवन का ठीक निरीक्षण हो, अगर बाहर के जीवन का ठीक-ठीक बोध हो, हम सब देखें, सुनें, जानें और मन के द्वार खुले रखें, और होश से भरे रहें, सोए हुए न हों; तो जिस मात्रा में हम बाहर के प्रति जागेंगे उसी मात्रा में हमारे भीतर जागरण की शक्ति बड़ी होती चली जाएगी। क्योंकि जागेगा कौन? जागूंगा मैं। जागूंगा बाहर के प्रति, लेकिन जागेगा कौन? जागूंगा मैं। मेरे भीतर बोध विकसित होगा, जागरण तेज होगा, गहरा होगा। और जितना मेरा जागरण गहरा होगा, उतना ही आप हैरान हो जाएंगे, जितना जागरण गहरा होगा, उतनी ही सूक्ष्म चीजों के प्रति जागा जा सकता है।
अभी तो हम बाहर के पहाड़-पत्थरों के प्रति भी जागे हुए नहीं हैं, तो आत्मा के प्रति कैसे जागेंगे? जब आप बाहर के प्रति जागने लगेंगे, देखने लगेंगे, आंख-कान खुले हुए होंगे। हमें तो लेकिन उलटी बातें सिखाई गई हैं। हमको तो सिखाया गया है, आंख बंद कर लो, अगर भगवान को पाना है। मैं आपसे कहता हूं, भूलकर आंख बंद मत करना, अगर भगवान को पाना हो। आंख पूरी खुली हुई होनी चाहिए, बंद नहीं। कान बंद कर लो, अगर भगवान को पाना है। हमें तो सिखाया गया है, सब इंद्रियों को बंद कर लो, भीतर रह जाओ अगर भगवान को पाना है। मैं आपसे कहता हूं भूल कर भी यह गलती मत कर लेना।
अगर भगवान को पाना है तो सारा जीवन जागा हुआ होना चाहिए। सारी इंद्रियां जागी हुई होनी चाहिए। और जिस मात्रा में सारा सब कुछ जागा हुआ होगा, उसी मात्रा में हमारे भीतर जागरण की शक्ति बढ़ेगी और विकसित होगी। और जब आप बाहर के प्रति जागेंगे, तो धीरे-धीरे आपको शरीर के प्रति जागरण अपने आप आना शुरू हो जाएगा। आप चलेंगे तो आपको पता चलेगा कि मैं चल रहा हूं। आपके हृदय की धड़कन भी आपको सुनाई पड़ने लगेगी। आपकी नाड़ी की गति भी आपको प्रतीत होने लगेगी। आपका शरीर भी आपको एहसास होने लगेगा। अभी एहसास नहीं होता आपको अपना शरीर। अभी तो एहसास शरीर का तभी होता है, जब कोई दर्द हो। सिर में तकलीफ होती है तो सिर का पता चलता है, अगर सिर में कोई तकलीफ न हो तो सिर का कोई पता ही नहीं चलता। अगर पैर में चोट लग जाए तो पैर का पता चलता

है, अगर चोट न लगे, पैर का कोई पता नहीं चलता। शरीर का हमें कोई पता ही नहीं चलता कि शरीर है।
लेकिन जब आप बहुत गौर से जागेंगे, तो आपको शरीर का पता चलेगा। और जब शरीर का पता चलेगा तभी आपको यह भी पता चलेगा कि मैं और शरीर में कुछ फासला है, फर्क है। जब तक शरीर का पता नहीं चलेगा, तब तक फासला कैसे पता चलेगा? तब तक डिस्टेंस कैसे मालूम होगा कि मैं और शरीर में कुछ भेद है। मैं कुछ और हूं। और शरीर मैंने कपड़े की भांति ओढ़ा हुआ है, यह पता नहीं चल सकता। शरीर का धीरे-धीरे बोध होगा। अभी तो हमें शरीर का कोई बोध नहीं।
एक आदमी बैठा हुआ है कुर्सी पर, वह पैर हिलाए जा रहा है, आप उससे पूछिए क्यों पैर हिला रहा है? तो शायद कोई उत्तर न दे सके। कोई उत्तर नहीं है उसके पास क्यों हिला रहा है, बस हिला रहा है। कोई बोध नहीं है, हमें शरीर का। जब आप क्रोध में आ जाते हैं और उठाकर चांटा मार देते हैं। आपको पता है कि आपने चांटा मारा है? आपको कोई बोध नहीं कि आपका हाथ उठा और आपने चांटा मारा। शायद आपको पता न हो, जमीन पर हर मुल्क में हजारों हत्यारों ने इस बात को कहा है कि हमें पता नहीं कि हमने हत्या की है। हालांकि कानून उनको मानता नहीं है, अदालत मानती नहीं है, वह समझती है कि झूठ बोल रहे हैं। लेकिन मैं आपसे कहता हूं, वे बिल्कुल सच बोल रहे हैं। हजारों हत्यारों का यह अनुभव है कि मारने के बाद वो कहते हैं कि हमें पता नहीं कि हमने मारा है।
एक राजा की सवारी एक गांव से निकलती थी। और एक आदमी ने किनारे खड़े होकर गालियां दीं और पत्थर फेंके। दूसरे दिन राजा ने उस आदमी को दरबार में बुलवा लिया। और उस आदमी से कहा क्या तुमने कल पत्थर मारे और गालियां दीं? उस आदमी ने कहा, क्षमा करें, मैं क्रोध में था इसलिए मैं जिम्मेवार नहीं हूं। मैं होश में नहीं था। जिसने पत्थर मारे, वह कोई दूसरा आदमी रहा होगा। जिसने गालियां दीं वह कोई दूसरा रहा होगा। क्योंकि अभी मैं होश में हूं, न तो मैं आपको गालियां दे सकता हूं और न पत्थर मार सकता हूं। मैं बिल्कुल बेहोश था।
हम सारे लोग ऐसा ही कर रहे हैं। हत्यारे हत्याएं कर रहे हैं। प्रेम करने वाले प्रेम कर रहे हैं और कोई होश नहीं है। शरीर का हमें कोई बोध नहीं कि यह क्या हो रहा है।
बुद्ध के पास उनका एक भिक्षु आनंद, वर्षों तक रहा। एक दिन सुबह उसने पूछा बुद्ध से कि मैं देखता हूं, रात आप सोते हैं, तो आप एक ही करवट सोते हैं, और जहां पैर रखते हैं, जिस पैर के ऊपर पैर रखते हैं, जहां हाथ रखते हैं, रात भर आपका हाथ वहीं रहता है, पैर वहीं रहता है, सुबह आप वैसे ही उठते हैं जैसा रात सोए थे; क्या रात भर आप जागे रहते हैं? बुद्ध ने कहाः जब से शरीर का बोध हुआ है, तब से शरीर वही करता है, जो मैं कराना चाहता हूं। अन्यथा शरीर कुछ भी नहीं करता। अगर मैं करवट बदलना चाहूं, तो ही बदलूंगा, नहीं तो नहीं बदलूंगा। शरीर का जब से बोध हुआ है, मैं शरीर का मालिक हो गया हूं। तो पैर जहां रखता हूं वहीं रखे रहता हूं, कोई जरूरत क्या है उसे बदलने की, जरूरत हो तो बदलूं। चूंकि वर्षों से कोई जरूरत नहीं पड़ी इसलिए उसे वहीं रखे रहता हूं।
यह हमें खयाल में भी नहीं आएगा। हमें तो जागे हुए भी अपने शरीर का कोई पता नहीं है कि वह क्या कर रहा है, तो सोए हुए शरीर का कैसे पता हो सक ता है? लेकिन जिसको जागने में शरीर का पता हो जाएगा, उसे सोने में भी शरीर का अहसास होता रहता है कि शरीर है एक खोल की तरह और जब शरीर एक खोल की तरह अहसास होने लगता है, तब चेतना और जाग्रत होती है। शरीर पर अनुभव करके तब और जाग्रत होती है, और सूक्ष्म होती है और मन के विचारों को देखने में समर्थ हो जाती है।
जापान में एक बहुत अदभुत भिक्षु था। वहां के एक बहुत बड़े सरदार ने अपने लड़के को उस भिक्षु के पास जीवन के सत्य को जानने के लिए भेजा। लेकिन उस गुरु ने कहा कि मेरे जीवन के सत्य को बताने की जो विधि है बड़ी अजीब है। मैं पहले तलवार चलाना सिखाता हूं, फिर जीवन के सत्य के बाबत बताता हूं।
उसका पिता बहुत हैरान हुआ कि तलवार सिखाने से उस सत्य का क्या संबंध?

लेकिन उस गुरु ने कहा, फिर कहीं और ले जाएं, मेरी पद्धति तो यही है। तो दो वर्ष तक तो इसे तलवार चलाना सिखाऊंगा, फिर सत्य के बाबत बात करूंगा। मजबूरी थी, उस गुरु के अतिरिक्त कोई ऐसा व्यक्ति न था, जो शायद सत्य के संबंध में कुछ कह सके। उस बच्चे को वहां छोड़ना पड़ा।
उस युवक को उस गुरु ने कहा, देख दो वर्ष बाद तो सत्य की बात करूंगा, उसके पहले तुझे तलवार चलाना सिखाऊंगा। और मेरे तलवार सिखाने की पद्धति भी बड़ी अजीब है, और वह यह है कि मैं वक्त-बेवक्त तेरे अनजाने, तेरे ऊपर तलवार से हमला कर दूंगा। लकड़ी की तलवार होगी, शुरू-शुरू में, फिर बाद में असली तलवार भी आएगी। जैसे कि तू बुहारी लगा रहा है और मैं पीछे से आकर लकड़ी की तलवार से हमला कर दूंगा। जैसे तू खाना खा रहा है, मैं पीछे से आकर हमला कर दूंगा तो तू सचेत रहना। होश में रहना हमेशा, अटेंटिव रहना। कभी भी हमला हो सकता है, आगे-पीछे से, उसकी कोई सूचना नहीं होगी।
लड़का बहुत हैरान हुआ, यह तो बड़ी पागलपन की बात थी। लेकिन मजबूरी थी।
वह बुहारी लगाता है, पीछे से आकर गुरु हमला कर देता है लकड़ी से। सिर में चोट आ जाती है। खाना खाता है, पीछे से हमला हो जाता है। किताब पढ़ने बैठता है, हमला हो जाता है। और कभी भी, चौबीस घंटे में कभी भी हमला हो सकता है, दस-बीस दफा हमला हो जाता है। एक दिन, दो दिन भीतर उसके होश रहने लगा। वह सचेत रहने लगा कि पता नहीं कब हमला हो जाए। उसके भीतर एक तरह का निरंतर खयाल रहने लगा। एक स्मृति रहने लगी, एक माइंडफुलनेस पैदा हो गई कि पता नहीं कब हमला हो जाए। चार-छह दिन बीतते-बीतते वह सचेत रहने लगा, गुरु के पैर भी आने शुरू होते कमरे में और वह सजग होकर सीधा खड़ा हो जाता। पैर की आवाज सुनाई पड़ने लगी। जो उसे कभी सुनाई नहीं पड़ी थी। पैर की आवाज मालूम होने लगी। गुरु एकदम छुपे-छुपे आता जैसे बिल्ली चूहे को पकड़ने आती हो। उसके पैर की आवाज भी न होने देता। महीना-डेढ़ महीना बीतते-बीतते गुरु हमला करता और हमले के साथ उसका हाथ उठ जाता। तलवार रोक ली जाती, लकड़ी की तलवार थी।
तीन महीने बीतते-बीतते गुरु के वार असफल जाने लगे। हमला होता और हमला रोक दिया जाता। छह महीने बीतते-बीतते कोई वार सफल नहीं होता था। एक भीतर निरंतर सजगता एहसास होने लगी। तब तो गुरु नींद में भी हमला करने लगा। सोया हुआ है युवक और वह हमला कर देता। अब और मुसीबत हो गई, जागना फिर भी ठीक था, लेकिन नींद में, लेकिन नींद में भी सचेत रहना जरूरी हो गया क्योंकि सोते में रात में दो-चार बार हमला होने लगा। महीना बीतते-बीतते सोते में भी गुरु के कदम पड़ते कमरे में, और उसके माइंड को अहसास होने लगता युवक को कि गुरु आ रहा है, वह उठ कर बैठ जाता। हम सब को भी थोड़ा अहसास होता है, हम यहां इतने लोग हैं अगर हम सारे लोग सोए हों, और मैं आकर बुलाऊं राम, राम, तो जिसका राम नाम होगा उसकी नींद खुल जाएगी, बाकी किसी की नींद नहीं खुलेगी। राम शब्द से उसकी चेतना जुड़ गई है, निरंतर सुनते-सुनते। और किसी की नींद नहीं खुलती, राम उठ जाता है।
यहां एक घर में दस महिलाएं सो रही हों, और एक मां सो रही हो, जिसका बच्चा हो और बच्चा रोएगा, दस महिलाएं सोई रहेंगी; जो मां है वह जग जाएगी। उसके मां होने की चेतना, उस बच्चे के रोने से जुड़ गई है। और बाकी सब सोए रहेंगे, मां उठ जाएगी। नींद में भी वह सूत्र जुड़ा हुआ है। धीरे-धीरे नींद में भी उसे बोध होने लगा, गुरु आता कमरे के बाहर वह उठकर बैठ जाता, नींद में भी वह हमले को रोकने लगा। साल पूरा हो गया, एक सुबह उस युवक को यह खयाल आया, बाहर बैठ कर वह अपनी किताब पढ़ रहा था और गुरु दूर दूसरे बरामदे में बैठा हुआ कुछ लिख रहा था। बूढ़ा आदमी था, कोई नब्बे साल की उसकी उम्र थी। उस युवक को यह खयाल आया कि मुझे तो यह निरंतर हमला करता है, जब चाहे तब मेरे ऊपर हमला कर देता है, सोते-जागते मेरी तो मुसीबत कर दी है, एक क्षण भी मुझे विश्राम में होने का मौका नहीं देता। हमेशा अटेंशन में मुझे रखता है। तो आज मैं भी इस बूढ़े पर हमला करके देखूं यह खुद भी अटेंटिव है यानहीं। यह खुद भी जागरूक रहता है या नहीं? दूर बरामदे में गुरु बैठा था, उसने अपनी किताब जिसमें वह लिख रहा था, आंख उठाई, और इससे कहा, मेरे बेटे! हमला मत कर देना, मैं बूढ़ा आदमी हूं, हड्डी-पसली टूट जा सकती हैं।

यह तो घबड़ा गया। इसने कहा, क्या हुआ? मैंने तो सिर्फ सोचा। उस बूढ़े ने कहाः तू ठहर दो वर्ष पूरे हो जाने दे, अभी तो मेरे पैर की ध्वनि सुनता है, नींद में हमले की खबर तुझे मिल जाती है। जितना-जितना तू जागरूक होगा, विचार की ध्वनि भी तुझे मिलने लगेगी, अभी पैर की ध्वनि सुनाई पड़ती है, फिर मेरे भीतर चलते विचार के पैर भी तुझे सुनाई पड़ने लगेंगे।
जितना भीतर जागरण बढ़ता है, उतनी सूक्ष्म चीजें दिखाई पड़नी शुरू हो जाती हैं। अनुभव में आनी शुरू हो जाती हैं। उसने कहा तू घबड़ा मत, एक साल और रुक जा और हमला कर, उसमें कुछ हर्जा नहीं है। लेकिन मैं बूढ़ा आदमी हूं, और कहीं तुझे सिखाने के पहले ही समाप्त हो गया तो मुश्किल में पड़ जाएगा, इसलिए मैंने रोका, नहीं तो रोकने की कोई बात न थी। विचार भी दूसरे का सुना जा सकता है, जाना जा सकता है, जागरण चाहिए, होश चाहिए भीतर। लेकिन हम तो अपने ही विचार जानने में समर्थ नहीं हैं। दूसरे के विचार की बात तो बहुत दूर, हम तो अपने विचार को ही पूरा नहीं जानते कि क्या-क्या भीतर चल रहा है? आप जानते हैं अपने पूरे विचार को, क्या-क्या भीतर चल रहा है? बिल्कुल नहीं जानते।
किसी दिन बैठ जाएं, अकेले में और एक कागज पर दस मिनट जो भी भीतर चले उसे लिखें, तो आप घबड़ा जाएंगे यह आपने लिखा है या किसी पागल ने लिखा है? यह क्या चल रहा है आपके भीतर। अगर आप अपने किसी मित्र को उसे दिखाने ले जाएं, तो वह कहेगा आप इलाज करवाइए, आपका दिमाग खराब हो गया है। क्या चल रहा है भीतर उसका हमें भी बोध नहीं है। हम उस तरफ ध्यान ही नहीं दे रहे हैं, वह चल रहा है, चल रहा है, चल रहा है। तो दूसरे के विचार तो बहुत दूर हैं, लेकिन अगर अवेयरनेस, निरीक्षण बढ़ता जाए, बढ़ता जाए तो शरीर के प्रति आता है, फिर धीरे- धीरे विचार दिखाई पड़ने शुरू हो जाते हैं। विचार की सूक्ष्म-सूक्ष्म अचेतन पर्तें, वह जो अनकांशस है सब, वह भी उभरना शुरू हो जाता है, और दिखाई पड़ना शुरू हो जाता है।
एक ही बात भीतर चलकर ध्यान में रखनी जरूरी है, बाहर का निरीक्षण, शरीर
का निरीक्षण आसान है। विचार के निरीक्षण में एक बात जरूरी है, जो कि हमारी शिक्षा ने हमें बहुत कठिनाई में डाल दिया है। हम विचारों में फर्क करने लगे हैं, यह अच्छा विचार है, यह बुरा विचार है। इसको पकड़ो, इसको छोड़ो। अगर आपने इस भांति का फर्क किया कि यह अच्छा विचार है, यह बुरा विचार है, अच्छे को पकडूंगा, बुरे को छोडूंगा, तो फिर आप निरीक्षण नहीं कर पाएंगे। फिर आपका ऑब्जर्वेशन सच्चा नहीं हो पाएगा। फिर बुरे विचार आपके डर के कारण बाहर ही न निकलेंगे, भीतर ही छिपे रह जाएंगे। वह अचेतन में दबे रह जाएंगे, फिर बाहर नहीं आएंगे; वह आपसे डर जाएंगे कि ये तो हमारे दुश्मन हैं, इनके सामने मत जाओ। फिर आपका चित्त आपके सामने पूरा नहीं आ सकेगा। और जिसके सामने पूरा चित्त नहीं आएगा, उसका चित्त कभी विसर्जित नहीं होगा, विदा नहीं होगा। और चित्त जब तक विदा न हो जाए, विसर्जित न हो जाए, तब तक आत्मा का कोई अनुभव नहीं हो सकता है।
तो बुरे और भले के, शुभ का और अशुभ का कोई खयाल न रखें, कोई डिसक्रिमिनेशन न रखें। कोई भेद न रखें, जो भी भीतर चल रहा हो, उसे देखें शांति से। जैसे हम बाहर के दरख्तों को देखते हैं, रास्ते पर चलते लोगों को देखते हैं, वैसा ही विचार को भी देखें। बाहर, शरीर और मन, ये तीन घेरे हैं, जिन पर मनुष्य को जागना जरूरी है। और अगर इन तीन घेरों पर जाग जाए, तो एक अदभुत क्रांति घटित हो जाएगी। वह स्वयं को जानने में समर्थ हो जाएगा। जागरण की जो पूरी इंटेंसिटी है, वह जो पूरी तीव्रता है, वही तीव्रता स्वयं का अनुभव है। आत्मा का अर्थ है जाग्रति की पूरी अवस्था। आत्मा का अर्थ है जागरण की पूरी स्थिति। ये तीन तलों पर मनुष्य को जागना जरूरी है, यही ध्यान है, यही योग है।
यही सारे धर्म का सार है कि हम जागे हुए आदमी बन जाएं। सोए हुए नहीं। इसको बाहर से शुरू करना पड़ेगा। वही आसान है। सबसे करीब है। सबसे सुलभ है, वहां से जागना शुरू करें, बाहर के जीवन से, फिर शरीर का जीवन और फिर मन का जीवन। इन तीन सीढ़ियों में जागते हुए आएं और अगर इन तीनों सीढ़ियों पर आप पूरी तरह जाग गए, तो चौथी सीढ़ी अपने आप उपलब्ध हो जाएगी, उसके लिए कुछ करना

नहीं होता है। फिर जागरण शेष रह जाएगा, चैतन्य शेष रह जाएगा, कांशसनेस शेष रह जाएगी, वही आत्मा है, वही सत्य है। उसका स्वयं में अनुभव आत्मा का अनुभव है, उसका सबमें अनुभव परमात्मा का अनुभव है।
जो स्वयं में उसे जान लेता है, वह सबके भीतर उसे जानने में समर्थ हो जाता है। क्योंकि जो एक में है वह सब में है, और जो अणु में है वह विराट में है। और जो यहां है, वह वहां है। एक ज्योति का मुझे अपने भीतर अनुभव हो जाए तो सारा जीवन ज्योति का सागर हो जाता है। एक बिंदु को मैं जान लूं तो मैं पूरे सागर को पहचान लेता हूं। तो उस एक बिंदु को जो हमारे भीतर है, जानने का रास्ता है निरंतर-निरंतर माइंडफुल होते जाना है, होश से भरते जाना है, जागरूक होते जाना है। इसकी शुरुआत करनी होगी बाहर के जगत से और फिर धीरे- धीरे, धीरे-धीरे भीतर डूबना पड़ेगा और भीतर आना पड़ेगा।
जितनी, जितनी क्षमता हो हमारी, जितनी हमारी सामर्थ्य हो, जितना हमारा साहस हो, उस सबको प्रयोग में लगा देना जरूरी है। क्योंकि कल का कोई भरोसा नहीं। आज आप हैं कल हो सकता है न हों। अभी हैं, थोड़ी देर बाद न हों। थोड़े से क्षण आदमी के हाथ में होते हैं, ऐसे तो एक ही क्षण आदमी के हाथ में होता है, ज्यादा क्षण हाथ में नहीं होते। एक मोमेंट आता है, फिर दूसरा आता है, फिर तीसरा आता है। एक क्षण से ज्यादा किसी के हाथ में कुछ होता नहीं, दूसरे क्षण का कोई पक्का नहीं होता कि वह आएगा या नहीं आएगा। इसलिए जो क्षण मेरे हाथ में है, उसे पूरी शक्ति और पूरे साहस से अगर मैं प्रयोग करूं और जागने की कोशिश करूं तो कोई कारण नहीं है कि मैं क्यों न जाग जाऊं? लेकिन न जागने का सिर्फ एक कारण है कि हम सोचते हैं कल कर लेंगे, परसों कर लेंगे, पोस्टपोनमेंट है। कल करेंगे, परसों करेंगे, फिर कर लेंगे। सुन ली है बात, समझ ली है बात, कल देखेंगे। जो आदमी कहता है कल करेंगे, उसे इस बात का पता ही नहीं है कि कल कभी नहीं आता! जो आदमी कहता है कल करेंगे, उसे इस बात का पता ही नहीं है कि जिसने कल पर छोड़ा है, उसने हमेशा के लिए छोड़ दिया। जो आदमी कहता है कल करेंगे, उससे ज्यादा भूल भरी बात और कोई भी नहीं कहता।
एक सुबह एक पहाड़ी निर्जन स्थान में पांचों पांडव एक झोपड़े में बैठे हुए थे। और एक भिखारी आया और उस भिखारी ने कहा, क्या मुझे कुछ मिल जाएगा? युधिष्ठिर कुछ काम में लगे थे, युधिष्ठिर ने कहाः कल आ जाना। वह भिखारी तो लौट गया, लेकिन भीम उठा और जोर से नाचने लगा और एक घंटा लेकर घंटा बजाने लगा और कहा मैं गांव में जाऊं और एक बात खबर कर आऊं। आज एक अदभुत बात हो गई है हमारे घर में! युधिष्ठिर ने पूछाः तुम पागल हो गए हो? क्या हो गया है? उसने कहाः मैं गांव में खबर कर आऊं मेरे बड़े भाई ने समय के ऊपर विजय पा ली है। उन्होंने एक भिखारी को कहा है कि कल आ जाना, कल मैं तुझे दूंगा। क्या कल पर आपने विजय पा ली है? आपको निश्चित है कि कल आएगा? आपको निश्चित है कि कल भिखारी बचेगा? आपको निश्चित है कि कल आप होओगे? आपको निश्चित है कि कल भी आपकी देने की... इकट्ठी हो जाएगी, एकत्रित हो जाएगी, आप दे ही देंगे। मैंने सुना है, न्यूयार्क की एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला में एक खिड़की
के ऊपर कोई छत्तीस इंच के व्यास वाला एक कांच लगा हुआ है। उस कांच में जो सूरज की किरणें पड़ती हैं, छत्तीस इंच के व्यास वाले कांच पर वे सारी इकट्ठी होकर एक बिंदु पर इकट्ठी हो जाती हैं। उस कांच के माध्यम से इकट्ठी हो गई किरणों से कागज तो दूर, स्टील के भीतर भी छेद हो जाता है, लोहे के भीतर छेद करके वे पार निकल जाती हैं। छत्तीस इंच का केवल कांच है, एक साधारण-सी खिड़की पर लगा हुआ है, उस खिड़की में से रोज धूप आती है घर में, लेकिन वही धूप इकट्ठी हो जाती है, एक बिंदु पर और लोहे को फोड़ कर पार निकल जाती है। आदमी के चित्त की भी खिड़की तो छोटी है, लेकिन बड़ी ताकत है उसमें। लेकिन जिंदगी के लंबे फैलाव पर सब बिखर जाती है, उसकी कोई ताकत नहीं रह जाती है।
लेकिन जो आदमी मोमेंट टु मोमेंट जीना शुरू कर देता है, एक-एक क्षण में जीने लगता है, उसकी सारी चित्त की शक्ति एक क्षण में इकट्ठी हो जाती है।
मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, वह शक्ति फौलाद को भी पार कर सकती है। वह चित्त इकट्ठा हुआ चित्त एक क्षण में सारी बाधाओं को पार करता है और परमात्मा को उपलब्ध हो जाता है।

इसलिए एक ही निवेदन है आज।। कल पर छोड़ने की भूल छोड़ दें। और कुछ प्रयोग करना हो तो अभी और यहीं, यहां से चलते वक्त रास्ते पर थोड़े जागरण का प्रयोग करते हुए लौटना। घर जाकर भोजन करते वक्त, सोते वक्त, बात करते वक्त थोड़े होश की कोशिश करना, रुक-रुक कर देखने की कोशिश करना। जो आज शुरू हो जाए बात, तो कोई भी नहीं कह सकता कि किसी की बात आज ही पूरी हो जाए। एक बात तय है, जो इतनी हिम्मत रखता है कि अभी शुरू कर सके, और एक क्षण में कुछ प्रयोग करने का साहस दिखा सके, एक बात तय है उसके जीवन में वह क्षण दूर नहीं होगा, जब जो सबसे बड़ी संपदा है, जो सबसे बड़ा आनंद है, जो सबसे बड़ा सत्य है, वह उसे उपलब्ध न हो जाए। सूत्र है।। जागरण, तीन बिंदु।। बाहर, शरीर और मन। वस्तुओं का जगत, शरीर का जगत और विचार का जगत। इन तीन सीढ़ियों पर उसका प्रयोग करना है।

मेरी बातों को इतने प्रेम और शांति से सुना है, उससे बहुत-बहुत आनंदित हूं। कल संध्या जो आपके प्रश्न होंगे इस संबंध में उनके उत्तर दूंगा। अंत में सबके भीतर बैठे हुए परमात्मा के प्रति मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

क्या मनुष्य एक यंत्र है?
चौथा प्रवचन

जाग जाना धर्म है

मेरे प्रिय आत्मन्!
बीते तीन दिनों में जीवन में जागरण की संभावना कैसे वास्तविक बन सके,
इस संबंध में थोड़ी सी बातें मैंने आपसे कहीं।
मनुष्य एक सोती हुई दशा में है, लेकिन जागरण संभव है। अंधेरा कितना ही घना क्यों न हो, दीया जल सकता है। और अंधेरे का घनापन दीये के जलने में न तो कभी बाधा बना है और न बन सकता है। अंधेरे की कोई शक्ति नहीं होती है कि दीये के जलने में बाधा बन जाए। अंधेरा कितना ही हो और कितना ही पुराना। छोटे से दीये की ज्योति के सामने एकदम न हो जाता है, एकदम समाप्त हो जाता है। जीवन में बहुत निद्रा है, बहुत अंधकार है। जीवन भर शायद हम निद्रा का और अंधकार का ही संग्रह करते हैं। लेकिन इससे निराश हो जाने की कोई भी बात नहीं है। एक छोटी सी किरण जागरण की उस सारे अंधकार को समाप्त कर देगी। असल में अंधकार तो होता नहीं, केवल प्रकाश का अभाव होता है, प्रकाश की अनुपस्थिति होती है और प्रकाश के आते ही अंधकार नहीं पाया जाता। इस खोज में ही कि वह प्रकाश भीतर कैसे जग जाए, वह ज्योति कैसे उपलब्ध हो जाए, कुछ बातें मैंने कहीं। स्वभावतः बहुत से प्रश्न उस संबंध में पैदा हुए हैं। उनमें से बहुत से प्रश्न तो वैसे हैं जैसे कि मैं अपेक्षा करता हूं, जो कि नींद में सोए हुए आदमी अक्सर पूछेंगे। जो कि बहुत जरूरी हैं। वे प्रश्न न केवल उनके पूछने की जिज्ञासा को जाहिर करते हैं, बल्कि उनकी नींद की भी घोषणा करते हैं।
एक मित्र ने पूछा हैः कल मैं उतरा ही था मंच से कि उन्होंने पूछा, फिर कृपा करके उन्होंने लिख कर भी भेज दिया। उन्होंने मुझसे कहा कि आपने कहा कि जीवन को कल पर नहीं छोड़ना चाहिए, जीवन है अभी और आज, लेकिन अंत में आपने कहा कि मैं प्रश्नों के उत्तर कल दूंगा। यह तो बड़ी विरोधी बात है। और मुझे बड़ा संदेह पैदा हो गया है।
तीन दिन की मेरी चर्चाओं के बाद यह संदेह केवल उनके मन में पैदा हुआ है। एक जरूरी बात जो मैंने कही वह यही कही, बाकी तीन दिन में मैंने और कुछ कहा नहीं जो संदेह पैदा करता। और यह संदेह भी बड़े आनंद का है। और ऐसे संदेह नींद में जरूर पैदा होते हैं, इसमें कोई आश्चर्य भी नहीं है।
मैंने कहा, जिंदा होना और जीवन जितना अभी और यहां इस क्षण में गहरा होगा, उतना हमारे भीतर जागरण विकसित होगा। हम सत्य को जानने में समर्थ हो सकेंगे और स्वयं को जानने में। मैंने यह नहीं कहा कि आप कल दफ्तर जाना है, इसका विचार छोड़ देना। मैंने यह भी नहीं कहा कि कल आपको ट्रेन पकड़नी है तो उसका टाइमटेबल मत देखना। मैंने आपसे यह भी नहीं कहा कि परसों किसी की शादी में जाना है तो उसके लिए समय तय मत करना। यह मैंने आपसे नहीं कहा। तो मैं तो उत्तर कल दे सकता हूं, लेकिन जीवन की जिसे खोज करनी है, उसे अभी और यहीं करनी होगी। उत्तर जीवन की खोज नहीं है। और फिर हम शब्दों को किस पागलों की भांति पकड़ते हैं, यह भी बड़ी हैरानी की बात है।
एक छोटी सी कहानी मुझे स्मरण आती है, उससे ही इस बात का उत्तर देना चाहूंगा।
एक बहुत बड़े धनपति के घर में एक नये-नये आदमी को नौकर रखा गया। लेकिन दो-चार दिन में ही पाया गया कि नौकर में कुछ खूबियां हैं। और खूबियां ऐसी हैं कि अगर वे चलें तो नौकरी चलनी बहुत कठिन है। मालिक ने उसे कहाः बड़े आश्चर्य की बात है कि तीन अंडे खरीदने तुम्हें बाजार तीन बार जाना पड़ता है! तीन अंडे एक ही बार में खरीद कर लाए जा सकते हैं, एक-एक अंडे को बार-बार जाकर खरीदने की कोई जरूरत नहीं है। इस भांति काम नहीं चल सकेगा, अपना सुधार कर लो और या विदा ले लो। उस नौकर ने कहाः मालिक, मैंने सुधार कर लिया और ऐसी भूल अब दुबारा नहीं होगी। कोई आठ दिन बाद ही वह मालिक बीमार पड़ गया और उसने कहा कि जाओ डाक्टर को बुला लाओ। वह नौकर गया, डाक्टर को अपने साथ लाया और साथ में एक पूरी भीड़ भी ले आया। और उसने आकर अपने मालिक को कहाः

मैं डाक्टर को भी लिवा लाया हूं, और बाकी लोगों को भी लिवा लाया हूं। उसके मालिक ने पूछाः ये बाकी लोग और कौन हैं? तो उसने कहाः डाक्टर निश्चित ही निरीक्षण करेगा और दवाई के लिए कहेगा, तो मैं दवा वाले दुकानदार को भी बुला लाया हूं। और हो सकता है डाक्टर की दवा काम न कर सके, तो मैं कब्र खोदने वाले लोगों को भी बुला लाया हूं। मैं सबको लिवा लाया हूं एक ही बार में, और अब बार-बार जाने की कोई भी जरूरत नहीं है।
जहां तक शब्दों को समझने का अर्थ है, उस नौकर ने कोई गलती नहीं की। और जहां तक मैंने दो दफा यह कहा, मैंने कहा कि कल पर जीवन को मत छोड़ना और मैंने यह कहा कि कल मैं उत्तर दूंगा; आपने भी शब्दों को समझने में कोई भूल नहीं की। लेकिन जिस भांति वह नौकर ने शब्दों को समझा, उसी भांति आपने भी समझा। हमारा चित्त बहुत अजीब है। अक्सर हम शब्दों से खेलना शुरू कर देते हैं, शब्दों को समझना नहीं। और अक्सर शब्दों में जो इशारे होते हैं, उनको भी जानने की हमारी कोई खोज नहीं होती। हम शब्दों को पकड़ लेते हैं और उनसे चिपक जाते हैं। और जो आदमी जितना शब्दों में चिपकने में समर्थ हो जाता है, उतना बड़ा ज्ञानी हो जाता है, उतना समझदार हो जाता है। सच्चाई यह है कि शब्दों को पकड़ने और शब्दों से चिपके रहने वाले लोगों से ज्यादा नासमझ इस जमीन पर कोई और दूसरे नहीं हैं। शब्दों का अर्थ नहीं है, शब्द तो इशारे हैं। और जो इशारों को पकड़ लेगा, मैं आपको अंगुली उठाऊं और दिखाऊं कि वह चांद है, और आप मेरी अंगुली पकड़ लें और कहें कि कहां है इसमें चांद? तो मैं मुश्किल में पड़ जाऊंगा। अंगुली में चांद बिल्कुल नहीं है। अंगुली जिस ओर इशारा कर रही है, वहां है चांद और जो अंगुली को पकड़ लेगा, उसे चांद तक देखने की कोई गुंजाइश नहीं रह जाएगी। शब्द इशारे हैं, शब्दों में कुछ भी नहीं है। लेकिन किस तरफ वे इशारे कर रहे हैं, उस तरफ देखने की बात है और अगर उस तरफ न देखा और शब्दों को पकड़ कर हिसाब-किताब लगाया, तो न तो कुछ समझ पैदा हो सकती है और न आंखें उस तरफ उठ सकती हैं, जो शब्दों के बिल्कुल बाहर है। जीवन शब्दों के बिल्कुल बाहर है।
शब्द इशारे कर सकते हैं, लेकिन शब्द जीवन नहीं हैं। मैंने आपसे यह नहीं कहा है कि कल के बाबत आप सब भांति से सोचना-विचारना, योजना करना बंद कर दें। मैंने आपसे यह कहा है कि जीवन में जो पोस्टपोनमेंट की जो हमारी आदत है, जो स्थगित कर देने की हमारी आदत है, और हम बड़े अदभुत हैं, अगर अभी मैं आपको गाली दूंगा तो आप यह नहीं कहेंगे कि कल मैं इसका उत्तर दूंगा, आप अभी इसी वक्त गाली देंगे। और अगर मैं आपको धक्का दूं और आपको क्रोध आ जाए, तो आप यह नहीं कहेंगे कि ठहरिए, दो दिन बाद जब मुझे फुरसत होगी, तब मैं क्रोध करूंगा। अभी मुझे फुरसत नहीं है, अभी मैं काम से जा रहा हूं। नहीं गाली का उत्तर आप अभी देंगे, उसे स्थगित नहीं करेंगे, पोस्टपोन नहीं करेंगे। लेकिन अगर आपको एक अच्छे काम करने का खयाल आ जाए तो आप कहेंगे कल कर लूंगा, परसों कर लूंगा।
असल में जिन चीजों से हम बचना चाहते हैं उन्हें हम कल पर छोड़ देते हैं। और वे हमेशा के लिए छूट जाती हैं। अच्छे काम को आदमी हमेशा कल पर छोड़ देता है, बुरे काम को अभी कर लेता है, इसी वक्त। इसीलिए जिंदगी बुरे कामों में जीने में नष्ट हो जाती है और अच्छे काम के फूल उसमें कभी नहीं लग पाते। तो मैंने यह नहीं कहा है कि कल के केलेंडर को आप घर जाकर आग लगा दें और कल के संबंध में सारी योजना और विचार बंद कर दें। यह मैंने नहीं कहा है, मैं आपको जड़ होने की सलाह नहीं दे रहा हूं। मैं आपको सचेतन जीवन जीने की सलाह दे रहा हूं। और उसका मतलब यह है कि हमारे हाथ में क्षण से ज्यादा कभी उपलब्ध नहीं होता, एक क्षण, एक मोमेंट, एक बार वह उपलब्ध होता है। दो क्षण भी एक साथ उपलब्ध नहीं होते। जब एक क्षण हाथ से गुजर जाता है तो दूसरा क्षण हाथ में आता है।
जो आदमी जीने को, सत्य को, स्वयं की खोज को, आनंद की खोज को हमेशा आगे वाले क्षण पर छोड़ता चला जाएगा, तो जहां वह मिल सकता था इसी क्षण में, वह उससे वंचित रह जाएगा। और उसकी अगर यह आदत बन गई है, अगले क्षण पर छोड़ने की, तो आने वाले क्षण में भी यही आदत काम करेगी, और वह कहेगा आगे वाले क्षण में देखूंगा। यह जीवन भर की कथा हो जाएगी। जो क्षण हाथ में होगा जीवंत उसे हम

छोड़ देंगे आगे वाले क्षण के लिए, जो अभी नहीं है। और जब वह हाथ में आएगा तो हमारी आदत के हिसाब से उसको हम छोड़ेंगे उस क्षण के लिए जो अभी नहीं है। और इस भांति निरंतर छोड़ते-छोड़ते एक दिन हम हाथ में पाएंगे कि कोई क्षण नहीं रह गया, मौत सामने खड़ी हो गई। यह जो, यह जो पोस्टपोनमेंट है, जीवन की खोज के लिए स्थगन है, उसके लिए मैंने कहा। मेरे उत्तर कल दिए जाएं या न दिए जाएं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, मैं न भी बचूं और उत्तर न दूं तो कोई फर्क नहीं पड़ता; क्योंकि मैं उत्तर भी दूंगा तो आपको उत्तर मिल जाएंगे, इस खयाल में आप मत रहना। मैं न भी दूं तो कोई फर्क नहीं पड़ता है, मैं न भी रहूं तो कोई फर्क नहीं पड़ता है।
मेरे उत्तर कल भी हो सकते हैं, और परसों भी और बिल्कुल भी न हों तो कोई फर्क नहीं पड़ता है। लेकिन अगर आपके जीवन की यह दृष्टि और आदत बन गई, खुद के जीने को आपने अगर कल पर छोड़ दिया और हमेशा कल पर छोड़ते गए तो आप पाएंगे कि आप कभी जी ही नहीं पाए। जीवन तो अस्तित्व है और अस्तित्व उस क्षण में है, जो मौजूद है। जो बीत गया वह जा चुका, अब नहीं है और जो आने को है वह अभी आया नहीं है। तो जो हाथ में है उसे पूरा जो निचोड़ लेता है, और जो हाथ में है उसे पूरी तरह जी लेता है, जो हाथ में है उसके सारी की सारी सत्ता को जो अनुभव कर लेता है, उसके भीतर जीवन का जागरण शुरू होता है। फिर जब उसे अनुभव हो जाता है कि जीवित क्षण में मैंने कुछ जाना, अगले क्षण में वह फिर डूबता है और जानता है।
एक रोमन सम्राट ने अपने एक वजीर को दोपहर के समय खबर भेजी कि तुम अपने महल में ही कैद कर लिए गए हो। तुम्हारे महल पर चारों तरफ सैनिक खड़े कर दिए गए हैं। अब तुम वजीर नहीं हो, और न ही तुम स्वतंत्र हो, और यह भी तुम जान रखो कि सांझ सूरज होने के पहले तुम्हारा सिर कटवा कर, तुम्हारी लाश रोम के चौरस्ते पर लटका दी जाएगी। कुछ बात हो गई थी वजीर से और राजा नाराज हो गया था। खाने को जाने को था वजीर, तब यह खबर मिली। उसने अपने कुछ मित्रों को आमंत्रित किया था। उसने उन मित्रों से कहा कि चलो, यह खबर उसने सुनी और उसने अपने मित्रों से कहा कि चलो हम भोजन पर बैठें और भोजन करें।
उसके मित्र तो एकदम उदास हो गए थे। यह खबर इतनी अनहोनी, इतनी खतरनाक, इतनी बड़ी दुर्घटना होने की, इतने बड़े दुर्भाग्य की। उसके मित्रों की आंखों में आंसू आ गए, लेकिन उसने कहा कि चलो, अभी सांझ को बहुत देर है। और जो भोजन सामने लग गया है, उसे छोड़ना नासमझी होगी, अभी हम भोजन करें। वे गए और सारे मित्र तो उदास थे, लेकिन वह उसी भांति भोजन कर रहा था वजीर, जैसे रोज करता था। उसके मित्रों ने उससे कहा, हमें बड़ी हैरानी है! सांझ मृत्यु होने को है और आप अभी भी जी रहे हैं, अभी भी भोजन कर रहे हैं। उस वजीर ने कहाः मौत एक दफा आती है, लेकिन जो आदमी पहले से ही भयभीत होता है उसे कई बार मरना पड़ता है। तो मैं अभी से नहीं मरना चाहता, सांझ को इकट्ठा मर जाएंगे, अभी जब तक जिंदा हूं, तब तक जिंदा हूं। और जो क्षण मेरे हाथ में हैं, उन्हें मैं जीऊं। भोजन के बाद वह सोने चला गया, उसके मित्र तो हैरान थे। वह जाकर सो गया जैसे रोज सोता था, सोने के बाद उठा और उसने कुछ संगीतज्ञों को आमंत्रित कर रखा था, उस दिन के लिए वे आए थे। और वह उनके गीत सुनने बैठ गया। राजा को यह खबर मिली कि वह भोजन कर रहा है, सो रहा है और गीत सुन रहा है। और उसकी आंखें उदास नहीं हैं। और उसके ओंठों की मुस्कुराहट समाप्त नहीं हुई है। और वह अभी भी जी रहा है, और सूरज ढल रहा है और सांझ करीब आ रही है। राजा उसे देखने आया। वह देख कर हैरान हुआ, वह बैठा हुआ संगीत सुन रहा था। और संगीत की तारीफ कर रहा था। उस राजा ने कहाः तुम पागल हो! सांझ करीब आ रही है, सूरज ढलने को है। उसने कहाः सांझ आएगी, चाहे मैं जीऊं और चाहे मैं जीना बंद कर दूं। और मौत आएगी चाहे मैं जीऊं और चाहे मैं जीना बंद कर दूं। तो जितने क्षण मेरे हाथ में हैं, मैं उन्हें खोने को राजी नहीं हूं, जो मेरे हाथ में हैं उन्हें मैं जीऊंगा।
राजा ने कहाः तुम्हारी फांसी की सजा मैंने समाप्त कर दी। क्योंकि जो आदमी मौत से डरता नहीं है, उसे मारने से कोई फायदा नहीं है। और जो आदमी आखिरी क्षण तक जीने में समर्थ है, उसकी मृत्यु से कोई मतलब नहीं होता, उसे कोई मतलब नहीं होता, उसे कोई प्रयोजन नहीं उसको मारने से।

एक-एक क्षण जो हमारे हाथ में है, आगे के क्षण का कोई पक्का नहीं है। जो क्षण हमारे हाथ में है उसे जीना है। उसमें जागना! यह मैंने कहा। लेकिन कल शब्द का प्रयोग दो जगह किया, इससे मुसीबत हो गई। हो जानी बिल्कुल स्वाभाविक है, इसमें कोई कसूर नहीं है। शब्दों के साथ हमेशा से मुसीबत हुई है। इसीलिए तो कुछ लोग गीता को पकड़ कर बैठे हुए हैं, कुछ लोग बाइबिल को, और कुछ लोग बुद्ध को और कुछ लोग महावीर को। एक ही बात, एक ही सत्य लेकिन इशारे अलग-अलग हैं। और जिन लोगों ने इशारे पकड़ लिए, वे एक-दूसरे के हत्यारे हो गए हैं, उनको यह पता ही नहीं है कि जो बुद्ध कहते हैं, वही महावीर, वही क्राइस्ट। लेकिन क्राइस्ट के शब्द को पकड़ने वाला बुद्ध की हत्या कर सकता है, बुद्ध के शब्द को मानने वाले की। और हिंदू के शब्द को पकड़ने वाला मुसलमान के शब्द के विरोध में खड़ा हो सकता है। और यह पता नहीं कि जो इशारे हैं, वे एक ही चांद की तरफ हैं, अंगुलियां हजार होंगी। अलग-अलग रंगों की होंगी, लेकिन जिस तरफ इशारा है वह एक तरफ इशारा है। लेकिन इशारों को पकड़ लेने वाले लोग हमेशा से खतरा सिद्ध करते रहे हैं। मुझे भी स्वभावतः निरंतर यह खयाल होता है कि शब्द पकड़ लिए न जाएं। हमारा मन शब्दों को पकड़ता है। मैं आपसे निवेदन करता हूं शब्दों को पकड़ने की कोई जरूरत नहीं है। जितनी जल्दी हो सके शब्द को हटा दें और उसके भीतर जो अर्थ हो, उसकी तरफ आंख उठाएं, कहीं देर न हो जाए, नहीं शब्द आपके ऊपर बैठ जाए और फिर अर्थ देखना मुश्किल हो जाए।
शब्दों के संबंध में और भी कुछ शंकाएं हैं। उनकी मैं चर्चा नहीं करूंगा। शब्द के बाबत मुझे जो कहना है, वह यह है कि जो शब्द को पकड़ता है, वह नासमझ है। शब्द का उपयोग करें, शब्द साधन है, इशारा है, लेकिन शब्द सत्य नहीं है। और जब कोई बहुत जोर से शब्द को पकड़ लेता है, उसके सारे प्राण निकल जाते हैं, उसके सारे अर्थ निकल जाते हैं। मुर्दा शब्द हाथ में रह जाता है, और वह मुर्दा शब्द हमें लड़ाता है और परेशान करता है और हैरान करता है।
ये बार-बार कुछ प्रश्न पूछे हैं कि आप जो कहते हैं क्या यही गीता में लिखा हुआ है? क्या आप जो कहते हैं यही बाइबिल में लिखा हुआ है, आप जो कहते हैं यही कृष्ण कहते हैं, यही बुद्ध कहते हैं? इस बात को तौलने की जरूरत क्या है? इस बात को कंपेयर करने की जरूरत क्या है? क्या आपको पक्का पता है कि कृष्ण क्या कहते हैं? क्या आपको पता है इस बात का कि क्राइस्ट क्या कहते हैं? क्या आपको पक्का भरोसा है कि यहां जो मैं कह रहा हूं, वही आप समझ रहे होंगे? क्या आपको इस बात का विश्वास आता है कि मैं जो कह रहा हूं, जितने लोग यहां मौजूद हैं वह एक सा ही समझ रहे होंगे या अलग-अलग समझ रहे होंगे!
कृष्ण की गीता पर एक हजार टीकाएं हैं; क्या कृष्ण के एक हजार अर्थ रहे होंगे? एक हजार अर्थ अगर रहे होंगे तो दिमाग उनका खराब रहा होगा। कृष्ण का अर्थ तो एक ही रहा होगा, लेकिन हर पढ़ने वाला अपना अर्थ निकाल लेता है, और कृष्ण के ऊपर थोपता है कि यह तुम्हारा अर्थ है। मैं जो कह रहा हूं उसका भी अर्थ निकाल लेता है और थोपता है मेरे ऊपर कि यह तुम्हारा अर्थ है। और फिर दोनों के बीच कंपेयर करता है कि क्या दोनों एक हैं, या अलग हैं, या क्या हैं? आप कृपा करें, कृष्ण पर कृपा करें, क्राइस्ट पर कृपा करें, उनको क्षमा कर दें, उनको ज्यादा परेशान न करें। क्योंकि वे जिंदा हों तो आपसे बचने की भी कोशिश करें, वे अब नहीं हैं, आपसे बच भी नहीं सकते, आप उनको बहुत परेशान कर सकते हैं।
आप इसकी फिकर छोड़ दें कि कृष्ण क्या कहते हैं, आपको पता नहीं चल सकता। कृष्ण क्या कहते हैं।। इसे जानने के लिए कृष्ण जैसी ही चेतना चाहिए। वैसी ही कांशसनेस चाहिए। क्राइस्ट क्या कहते हैं।। इसे जानने के लिए वैसी ही कांशसनेस चाहिए, उसके पहले आप नहीं जान सकते कि वे क्या कहते हैं। इसलिए इस निर्णय में और विवाद में न पड़ें कि कौन क्या कहता है? इस बात की फिकर करें कि क्राइस्ट ने जो कुछ कहा, वह किस चेतना में कहा। कृष्ण ने जो कुछ कहा, वह किस चेतना में कहा, वह कौन सी कांशसनेस की स्टेट थी जिसमें उन्होंने ये बातें कहीं। छोड़ दें फिकर उन्होंने क्या कहा, इसकी फिकर करें

कि कब कहा, किस स्टेट ऑफ माइंड में कहा। और क्या वह स्टेट ऑफ माइंड मुझे भी उपलब्ध हो सकती है?
और अगर आपको वह स्टेट ऑफ माइंड मिल जाए, जिसकी मैं तीन दिन से चर्चा कर रहा हूं, वह होश, वह जागरण मिल जाए, तो ही आप समझ पाएंगे कि उन्होंने क्या कहाः उसके पहले कोई भी कुछ नहीं समझ सकता है। अगर उसके पहले हम समझ लेते तो सारी दुनिया के धर्मों के झगड़े कभी के समाप्त न हो गए होते! दुनिया के धर्मों के बीच झगड़ों की क्या जरूरत थी? लेकिन झगड़े हैं, रोज बढ़ते जाते हैं; आदमी एक-दूसरे से टूटता जाता है। आदमी, आदमी का दुश्मन होता जाता है। और धर्मों के नाम पर जिनकी शिक्षा है प्रेम की, धर्मों के नाम पर जिनकी शिक्षा है परमात्मा की, धर्मों के नाम पर जो सारे जीवन को जोड़ देना चाहते हैं, क्या वजह है? शब्दों को हमने बहुत जोर दे दिया है, और चेतना की स्थिति की कोई फिक्र नहीं की।
चेतना की स्थिति का सवाल है, इसलिए न गीता का सवाल है, न बाइबिल का; आपकी बड़ी कृपा होगी अगर इन किताबों को आप आराम से विश्राम करने दें। इनको परेशान न करें। बजाए इसके कि इनकी पेरशानी में पड़ें, उस तलाश में लगें कि क्राइस्ट के भीतर कौन सी चीज जाग गई? कौन सी चीज पैदा हो गई? जो क्राइस्ट के मन में संभव हो सका, वह आपके मन में भी संभव हो सकता है। क्योंकि आपके भीतर भी वही बीज है, जो उनके भीतर था। आपके भीतर भी वही आदमी है जो उनके भीतर था, लेकिन आप एक सोए हुए आदमी हैं, और दूसरा एक जागा हुआ आदमी है। एक आदमी नींद में सोया हो और जागे हुए आदमी क्या विचार कर रहे हैं, इसको समझने की कोशिश करें! सपने में उसे न मालूम क्या-क्या सुनाई पड़ेगा, वह न मालूम क्या-क्या अर्थ ले लेगा? और न मालूम क्या-क्या उपद्रव करेगा? अच्छा होगा, वह जागते हुए लोगों की बातचीत का अर्थ निकालने की कोशिश न करे, खुद जाग जाए। इसकी बिल्कुल फिकर न करें कि मैं जो कह रहा हूं वह किससे मेल खाता है, और किससे मेल नहीं खाता?

एक मित्र ने चिंता व्यक्त की है कि किसी मेरी किताब पर किन्हीं मित्रों ने छाप दिया है कि मैं आत्म-ज्ञानी हूं, आत्म-द्रष्टा हूं। एक मित्र ने लिखा है कि हमें तो शक होता है कि आप आत्म-ज्ञानी हैं, आत्म-द्रष्टा हैं।

जिन्होंने लिखा है वह और जिनको शक हुआ है, एक ही कोटि के लोग होंगे, दोनों में कोई फर्क नहीं है। क्योंकि किसको कैसे पता चल गया कि मैं आत्म-द्रष्टा हूं और किसी को कैसे शक हो गया कि मैं आत्म-द्रष्टा नहीं हूं। बड़े मजे की बात यह है कि मेरे बाबत चिंता करने की जरूरत ही क्या है। मैं आत्म-द्रष्टा हूं, यह चिंता करने की भी कोई जरूरत नहीं, इस बात को सिद्ध करने के लिए प्रयास करने की भी कोई जरूरत नहीं, इस पर शक करने की भी कोई जरूरत नहीं है। दोनों बातें फिजूल हैं। असल में मेरे बाबत चिंता करना फिजूल है। सोया हुआ आदमी दूसरों के बाबत चिंता करता है, जागा हुआ आदमी अपने बाबत। ये सोए हुए आदमी के सब लक्षण हैं। जब वह विचार भी करता है तो दूसरों के बाबत। और दूसरों के संबंध में क्यों विचार करता है, अपने से बचना चाहता है, कहीं अपने बाबत विचार न करना पड़े, इससे बचने की एक तरकीब, एक रास्ता दूसरों के बाबत सोचने लगो कि कौन कैसा है, कौन क्या है? मैं कौन हूं, मैं कहां आता हूं आपके बीच में? मैं अगर निपट अज्ञानी हूं, तो कहां आपको तकलीफ होने की जरूरत है। मैं किस जगह आपके बीच में आता हूं। मेरे संबंध में सोचने की आवश्यकता क्या है। बड़ी कृपा होगी, अपने संबंध में सोचें। बड़ी कृपा होगी अपने संबंध में संदेह करें, बड़ी कृपा होगी अपने संबंध में चिंतन करें। क्योंकि जो अपने संबंध में सोचेगा उसका सोच-विचार उसे बताएगा कि वह बिल्कुल मशीन की भांति जी रहा है। उसका विचार उसे बताएगा कि वह सोया हुआ है, उसका विचार उसे बताएगा कि वह एक यंत्र से ज्यादा नहीं है। और यह विचार अगर उसे खयाल में आ जाए तो इससे इतनी पीड़ा होगी, इस विचार से कि इस स्थिति को बदलने का एक उपक्रम पैदा हो जाएगा, एक क्रांति उसके भीतर पैदा हो जाएगी। लेकिन मेरे संबंध में निर्णय करने से क्या होगा?

मेरे पास लोग आते हैं, वे पूछते हैं कि क्राइस्ट को ज्ञान मिला था या नहीं? महावीर सर्वज्ञ थे या नहीं? रामकृष्ण परमहंस परमहंस थे या नहीं? मैं बड़ा हैरान हूं! आपने किस भांति और कब यह ठेका ले लिया है, इन सारे लोगों पर विचार करने का? और किसने आपको यह ठेका दिया है? और आप कैसे निर्णायक बन सकेंगे? जिन्हें अपना कोई होश भी नहीं, वे भी क्राइस्ट और कृष्ण का निर्णायक बनने की हिम्मत करते हैं, कि वे निर्णय करें कि उनको मिला कि नहीं। इसी पागलपन ने तो सारी दुनिया में उपद्रव पैदा किए हैं। जिन लोगों ने क्राइस्ट को सूली लगाई उनको शक हो गया कि इस आदमी को ज्ञान हुआ है कि नहीं। फांसी पर लटका दिया। निर्णायक बन गए लोग, और निर्णय लेने में हम इतनी जल्दी करते हैं, दूसरे के बाबत निर्णय लेने में, अपने बाबत निर्णय तो हम कभी लेते ही नहीं, जल्दी का कोई सवाल ही नहीं।
पूरी जिंदगी बीत जाती है, कोई अपने बाबत निर्णय नहीं लेता कि मैं क्या हूं, और कहां हूं? लेकिन दूसरे के संबंध में एक क्षण नहीं खोते हम। और भी एक मजा है, अगर मैं आपसे कहूं कि फलां आदमी बहुत अच्छा है, तो आप पच्चीस दलीलें करेंगे मुझसे कि नहीं मुझे तो शक है, क्योंकि उस पर एक दफा मुकदमा चला था। और मुझे तो शक है, वह पड़ोसी की स्त्री से बातें करता हुआ देखा गया था। और मुझे तो शक है कि उसने नया मकान बनाया है, उसमें ब्लैक का रुपया जरूर लगाया होगा। लेकिन अगर मैं आपसे कहूं कि फलां आदमी चोर है, आप कहेंगे बिल्कुल निश्चित, कोई शक आप नहीं करेंगे। बड़ी हैरानी की बात, अगर किसी की बुराई हम करें तो हम कभी शक नहीं करते। लेकिन हम किसी के बाबत बताएं, उसकी कोई भलाई की चर्चा करें; हम फौरन शक करते हैं, क्यों? यह ऐसा क्यों होता है? किसी की निंदा पर आपने कभी शक किया है? किसी ने किसी की बुराई बताई तो आपने खोज-बीन की है कि यह कहां तक सच है? नहीं, आपने बड़े सरल मन से विश्वास कर लिया है कि बिल्कुल ठीक कह रहे हैं, क्यों?
असल में हम जब भी किसी के बाबत सुनते हैं कि वह आदमी गलत है, तो हमें दो फायदे होते हैं। एक फायदा तो यह कि हमें खुद गलत होने की छूट मिल जाती है कि जब सभी लोग गलत हैं तो फिर खुद गलत होने में क्या अड़चन? इसलिए हम बिल्कुल चुपचाप मान लेते हैं कि दूसरे आदमी के बाबत जो गलत बात कही गई है, वह ठीक होगी। कोई के भी बाबत हम मान लेते हैं कि ठीक होगी। हमें सुविधा मिल जाती है गलत होने की। फिर हमें बेचैनी नहीं रह जाती, जब सभी लोग गलत हैं तो खुद के गलत होने में कोई बेचैनी, कोई परेशानी नहीं रह जाती।
दूसरी बात दूसरे को गलत जान कर हमें खुद को बड़ा रस आता है कि हम, हम तो
इन सबसे बेहतर हैं, अच्छे हैं। एक अहंकार की तृप्ति होती है। लेकिन अगर कोई किसी की प्रशंसा करता हो, तो हमें अड़चन होती है क्योंकि किसी दूसरे का बेहतर होना हमारे अहंकार को चोट लगती है, तो हम पच्चीस छान-बीन करते हैं, खोज-बीन करते हैं। और जिंदगी इतनी अदभुत है कि क्राइस्ट और कृष्ण को जानना तो दूर, आपके पड़ोस में जो आदमी रहता है, उसको जानना भी आसान नहीं है। क्योंकि वह आदमी आपसे बहुत दूर है, खुद को जानना ही कठिन है, जो आप अपने बिल्कुल निकट हैं। जिंदगी इतनी मिस्टीरियस है, जिंदगी इतनी रहस्यपूर्ण है कि जो आदमी समझदार है, वह कभी किसी दूसरे के बाबत कोई निर्णय नहीं लेता। एक रात एक घटना घटी। एक शादी में कोई दो सौ, उस नगर के सारे प्रतिष्ठित लोग इकट्ठे थे। और एक मित्र आया और उसने अपनी जेब से एक सिक्का निकाला जो कोई तीन हजार वर्ष पुराना इजिप्त का सिक्का था। और उसने कहा कि इस तरह के दो ही सिक्के हैं दुनिया में, एक यह है और एक और किसी आदमी के पास। इस सिक्के को मैंने बीस हजार रुपये खर्च करके खरीदा है। तीन हजार वर्ष पुराना सिक्का है, बस ऐसे दो ही सिक्के हैं इतने पुराने। तो मैंने सोचा कि आप शायद देख कर खुश होंगे इसलिए मैं ले आया, कोई दो सौ लोग थे, सिक्का एक हाथ से दूसरे हाथ में चला गया, लोग देखने लगे। और अनेक लोगों ने उसे घेर लिया। और लोग पूछने लगे बीस हजार में खरीदा है, ऐसी इसमें क्या खूबी है? कितना पुराना है, किस राजा के वक्त का है? और किस सन का है? ये सारी बातें होने लगीं। आधा घंटे बाद उसने फिकर की कि वह सिक्का कहां है? सिक्का मिलना मुश्किल हो गया। जिससे भी पूछा गया, उसने कहा, मैंने देखा तो जरूर, मैंने किसी और को दे दिया। वह सिक्का भीड़ में भटक कर खो गया और मिलना कठिन हो

गया। अब सिवाय... परेशानी खड़ी हो गई। शादी का काम तो स्थगित हो गया और सिक्के को खोजना जरूरी हो गया। लोगों ने सलाह दी कि सारे लोग अपनी जेबों की तलाशी दे दें, अब तो और कोई रास्ता नहीं है। सभी लोग राजी हो गए कि हमारी जेबें देख ली जाएं, हमने तो लिया नहीं। लेकिन एक आदमी ने इनकार कर दिया। उसने कहा कि मैं चोर नहीं हूं यह मैं कहे देता हूं, मैंने सिक्का नहीं लिया, यह मैं बता देता हूं, मैं यहां शादी में सम्मिलित होने आया हूं, अपनी जेबों की तलाशी देने नहीं। मैंने आपसे कहा भी नहीं था कि सिक्का दिखलाइए, तो मैं चोर नहीं हूं, यह मैं कहे देता हूं, लेकिन मेरी जेब में हाथ डालने की कोई कोशिश न करें।
अगर आप वहां मौजूद होते तो क्या करते? क्या सोचते? जो लोग मौजूद होते थे, वहां उन्होंने भी यही सोचा कि इस आदमी में जरूर कोई गड़बड़ है। सिक्का अगर इसने नहीं चुराया है तो इतनी जिद्द की क्या बात है कि मैं अपनी जेब नहीं दिखलाऊंगा। आखिर लोगों ने तय किया कि जबरदस्ती करनी पड़ेगी। उस आदमी ने अपनी जेब से पिस्तोल निकाल ली और उसने कहा कि क्षमा करिए, जबरदस्ती का परिणाम खतरनाक हो सकता है।
अब बात बहुत बिगड़ गई। सिवाय इसके कि पुलिस को खबर की जाए, कोई मार्ग न रहा। पुलिस को फोन करके खबर की गई। दरवाजे मकान के बंद कर दिए गए ताकि कोई निकल न सके, और सबसे कहा गया कि जो जहां है, वह वहीं खड़ा रहे। पुलिस आने को ही थी एक नौकर ने मेज पर से कोई बर्तन उठाया और हैरानी हुई वह सिक्का उस बर्तन के नीचे रखा हुआ था। वह सिक्का मिल गया तो सारे लागों ने उस सज्जन को कहा कि तुम कैसे पागल हो? जब तुमने सिक्का नहीं लिया था, तो इनकार करने और पिस्तोल निकालने की क्या जरूरत थी? उसने अपने खीसे में हाथ डाला और दूसरा सिक्का निकाल कर बाहर रख दिया और उसने कहा कि दूसरे सिक्के का मालिक मैं हूं, जिसकी ये चर्चा कर रहे थे। मैं भी यह सोच कर आया था कि दिखा दूंगा अपना सिक्का, लेकिन उन्होंने पहले दिखा दिया, तो फिर मैंने सोचा, अब कोई मतलब नहीं है, मैं चुप रह गया। लेकिन पांच मिनट पहले कौन मेरा विश्वास कर सकता था कि मैं इस सिक्के का मालिक मैं हूं। मैं चोर था। पांच मिनट पहले कौन विश्वास कर सकता था कि मैं इसका मालिक हूं। आपमें से कोई विश्वास कर सकता था पांच मिनट पहले? आपमें से कोई पांच मिनट पहले संदेह करने से बच सकता था कि यह आदमी चोर है?
अगर ऐसा कोई आदमी आपके भीतर हो तो वह समझ ले कि वह जागा हुआ आदमी है, सोया हुआ आदमी नहीं है। लेकिन नहीं! हम सभी शक कर जाते कि यह आदमी चोर है। और अगर सिक्का उसके खींसे से मिल जाता तब तो बात पक्की हो जाती कि यह आदमी चोर है। कोई दुनिया में मानने को राजी नहीं होता कि यह सिक्का इसका है। लेकिन वह सिक्का उसका था। जिंदगी इतनी ही मिस्टीरियस है। जिदंगी इतनी ही रहस्यपूर्ण है। इसलिए जो जानते हैं वे निर्णय नहीं लेते।
सामान्य आदमी के बाबत भी निर्णय लेना अधार्मिक कृत्य है। पाप है। तो किसी और के बाबत निर्णय लेने का तो कोई अर्थ नहीं, कोई प्रयोजन नहीं। फिकर छोड़ दें, रामकृष्ण की, अरविंद की, रमन की, किसको क्या हुआ, किसको नहीं हुआ? कृपा करें मुझ पर भी दया करें और मेरी भी फिकर छोड़ दें। इससे आपका कोई संबंध नहीं है, कोई वास्ता नहीं है। क्यों यह जानना चाहते हैं? शायद एक कारण जो हम जानना चाहते हैं; इस तरह की बात कि आपको आत्म-ज्ञान हुआ या नहीं? आपको ईश्वर की उपलब्धि हुई या नहीं, इस तरह के प्रश्न हैं, आपको आत्मसाक्षात्कार हुआ या नहीं? आपको अभी सत्य मिल गया है? यह क्यों जानना चाहते हैं? शायद इसलिए कि अगर मैं कह दूं कि हां, मुझे सत्य मिल गया है, मैंने ईश्वर को पा लिया है, तो शायद आप मेरे पैर पड़ने लगें और मुझसे कान फुंकवाने के लिए प्रार्थना करने लगें कि आप हमारा कान भी फूंक दें, हमको भी सत्य मिलने की राह बता दें। और भगवान आपको मिल गया है तो थोड़ा बहुत, छटाक-आधी छटाक हमको भी देने की कृपा करें। किसलिए? क्यों यह चिंता है? क्यों यह विचार है? मैं आपको कहूं सत्य कोई किसी को दे नहीं सकता, और परमात्मा किसी को मिला हो, न मिला हो, आपको देने में असमर्थ है।
सत्य की और परमात्मा की खोज अत्यंत निजी और व्यैक्तिक है। इसलिए इसकी चिंता ही छोड़ दें कि किसको मिला और किसको नहीं मिला है। एक बात जान

लें कि आपको मिला है या नहीं मिला है, यह सोच लें। मुझे मिला है या नहीं यह मैं सोच लूं, न मिला हो तो खोज पर निकल जाऊं, मिल गया हो तो बात समाप्त हो गई। लेकिन किसी दूसरे के विचार से कोई अर्थ नहीं, कोई प्रयोजन नहीं। हम यह विचार इसीलिए करते रहे हैं आज तक कि हमको यह खयाल है कि किसी दूसरे से हमको मिल सकेगा। किसी दूसरे से कभी किसी को नहीं मिलता। और इस जमीन पर करोड़ों लोगों को नहीं मिल सका, उसका एक कारण यह है कि अधिकतम लोग यह सोच रहे हैं कि कोई हमें दे देगा। हम किसी के पैर पड़ेंगे और किसी को आदर देंगे, और किसी को गुरु मान लेंगे तो वह हमको दे देगा। सत्य ऐसी कोई वस्तु नहीं है कि दी जा सके।
सत्य अनुभव है। और परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है कि मैं आपको ले जाऊं
और दिखा दूं कि देखिए ये परमात्मा बैठे हुए हैं। परमात्मा एक अनुभूति है जो आपके प्राणों के प्राण में उदित होगी। वह कहीं आपके बाहर नहीं है कि कोई बता सके कि यह है आ जाओ और इसे ले लो। अगर ऐसा होता तो हमने अब तक जरूर दुकानें खोल दी होतीं जहां हम परमात्मा को बेचते। ऐसे कुछ समझदार लोगों ने खोल दी हैं। मंदिर हैं, मस्जिद हैं, पोप हैं, पादरी हैं, वे क्या कर रहे हैं? वे दुकानें खोले हुए बैठे हैं। जरूर उनसे आप पूछें, तो वे आपके पूछने के पहले खुद ही बताते हैं कि हां मैं ईश्वर का प्रतिनिधि हूं जमीन पर। मैं पैगंबर हूं, मैं ईश्वर का पुत्र हूं। मैं तीर्थंकर हूं। मैं ही हूं ईश्वर का अधिकारी जमीन पर, वह आपके पूछने के पहले ही आपको बता देते हैं। और उनके इस बताने से ही उनका सारा शोषण चलता है। या तो वे लोग इस बात की घोषणा करते हैं कि हां मुझे मिल गया है, आओ, जो आपका किसी भांति शोषण करना चाहते हैं, या वे लोग इस तरह की घोषणा करते हैं जिनके दिमाग खराब हो जाते हैं, और जो पागल हो जाते हैं।
बगदाद में एक खलीफा ने एक आदमी को पकड़वाया जो सड़कों पर यह घोषणा कर रहा था कि मैं पैगंबर हूं। और मोहम्मद के बाद मुझे परमात्मा ने भेजा है कि मैं जाऊं और दुनिया का सुधार कर दूं। दुनिया का सुधार का खयाल जिनको पैदा होता है, उनके दिमागों में जरूर कुछ खराबी होती है। क्योंकि आदमी अपना सुधार कर ले यह काफी है, बहुत काफी है। और अगर उसका सुधार हो जाए तो उससे जो सुगंध फैलनी शुरू होगी वह जरूर दूसरों को सहयोगी होगी। लेकिन दूसरे के सुधार का खयाल अहंकार से ज्यादा और कुछ भी नहीं है। उस आदमी ने घोषणा कर दी सड़कों पर कि मैं पैगंबर हूं। अब मुसलमान यह बरदाश्त नहीं कर सकते हैं कि कोई कहे कि मैं पैगंबर हूं। और न हिंदू यह बरदाश्त कर सकते हैं कि कोई कहे कि मैं अवतार हूं। न जैन यह बरदाश्त कर सकते हैं कि मैं आ गया पच्चीसवां तीर्थंकर। कोई यह बरदाश्त नहीं कर सकता। क्यों? क्योंकि मुर्दा तीर्थंकर और पैगंबर बहुत अच्छे होते हैं, वे कोई गड़बड़ नहीं करते, कोई क्रांति नहीं करते, कोई परेशानी नहीं करते। जिंदा पैगंबर और तीर्थंकर बहुत खतरनाक भी हो सकते हैं। पहला खतरा तो यह होता है कि वह पुराने तीर्थंकरों को और पैगंबरों को उखाड़ना शुरू कर देते हैं कि वे सब गलत थे, सही मैं हूं।
तो मुसलमान खलीफा ने उसको पकड़वा कर बुलवा लिया कि तुम पागल हो गए हो क्या? मोहम्मद के बाद अब कोई पैगंबर होने वाला नहीं है। लास्ट प्रॉफेट परमात्मा भेज चुका अपना अंतिम आदमी। बार-बार भेजने की जरूरत क्या है? परमात्मा कोई भूल-चूक थोड़े ही करता है कि फिर आदमी भेजे कि अब सुधार कर आओ। उसने अपनी फाइनल किताब भेज दी, खबर उसने भेज दी कि मेरी आखिरी किताब है, अब इसके अनुसार जीओ, अब कोई पैगंबरों के आने की जरूरत नहीं है। कल तक विचार कर लो, उसे कैद खाने में बंद करवा दिया। दूसरे दिन सुबह वह गया और हथकड़ियों में बंधे हुए खंभे से, उस पैगंबर से उसने कहा कि मित्र! कुछ समझ आई। छोड़ दो यह खयाल नहीं तो हत्या के सिवाय कोई रास्ता नहीं है। गर्दन कटवा दी जाएगी, मुफ्त मर जाओगे। सोच लो एक दफा और, कह दो यह बात कि मुझसे गलती हो गई।।
मैंने कहा कि मैं पैगंबर हूं।
वह आदमी हंसा, और उसने कहाः मैं तुम्हारी मानूं या भगवान की मानूं? भगवान ने मुझसे कहा कि तुम पैगंबर हो, मैं तुम्हारी मानूं! और रही इस बात की फिकर मत करो कि तुम मुझे फांसी लगा दोगे, पैगंबरों को हमेशा फांसियां लगती रही हैं, कोई नई खबर है? यह तो सबूत होगा मेरा कि मैं पैगम्बर था, कि

मुझ पर मुसीबतें आईं। मुसीबतें आती रही हैं पैगंबरों पर। यह कोई नई बात नहीं।। मोहम्मद सताए गए, क्राइस्ट सताए गए, सब पैगंबर सताए गए, मैं भी सताया जाऊंगा, यह तो पहले से पता है। तो तुम इसकी फिकर मत करो, लेकिन मैं पैगंबर हूं। यह बात ही चल रही थी कि पीछे सींखचों के बंद, सींखचों के भीतर से एक आदमी चिल्लाया कि यह आदमी बिल्कुल गलत कह रहा है, खलीफा इसकी बात मत मानना। मैंने मोहम्मद के बाद किसी को पैगंबर बना कर भेजा ही नहीं। वह आदमी एक महीने पहले पकड़ा गया था। उस आदमी को यह खयाल थाः मैं स्वयं परमात्मा हूं, पैगंबर-वैगंबर नहीं।। स्वयं परमात्मा। उसने कहाः यह आदमी बिल्कुल गलत कह रहा है, मोहम्मद के बाद चौदह सौ साल हो गए, मैंने किसी को भेजा ही नहीं। और भेजूंगा क्यों? मोहम्मद ने सब ठीक काम किया है।
ये लोग इस तरह की घोषणाएं करने वाले लोग, विक्षिप्त हैं। जिसको परमात्मा का अनुभव होगा, उसे सबके भीतर परमात्मा दिखाई पड़ने लगेगा। उसे ऐसा नहीं दिखाई पड़ेगा कि मैं परमात्मा हूं, क्योंकि यह खयाल कि मैं परमात्मा हूं किस बात पर खड़ा है? इस बात पर कि तुम परमात्मा नहीं हो। अगर सभी कुछ परमात्मा है तो मैं कहां रह जाता हूं, मैं कहां ठहरता हूं! ये घोषणाएं कि मुझे आत्म-ज्ञान हो गया, यह घोषणा कि मुझे ज्ञान उपलब्ध हो गया, नासमझी की घोषणाएं हैं। क्योंकि जो आदमी जितना गहरा जाएगा, वह पाएगा जीवन इतना रहस्यपूर्ण है कि उसे जाना ही नहीं जा सकता। जो आदमी पूरी गहराई में स्वयं में प्रविष्ट होगा, वह पाएगा कि जानना नासमझी के सिवाय और कुछ भी नहीं है। जीवन का रहस्य अत्यंत अगम है। सत्य का कोई ओर-छोर नहीं है। परमात्मा की कोई सीमा नहीं है कि मैं उसे जान सकूं। मैं केवल उसमें मिट सकता हूं। और उसके साथ एक हो सकता हूं, लेकिन जान नहीं सकता। जानने का भ्रम अज्ञान के सिवाय और कुछ भी नहीं है।
एक बूंद सागर में गिर जाती है तो सागर हो जाती है, लेकिन सागर को जान थोड़े लेती है। सागर हो जाती है। एक व्यक्ति जब अपने अहंकार से मुक्त हो जाता है, तो परमात्मा के साथ एक हो जाता है, परमात्मा को जान लेने का क्या मतलब? जान तो हम उसे सकते हैं जो हमसे दूर हो और अलग हो, वह तो हमारे प्राणों का प्राण है। और जान हम उसे सकते हैं जिसकी सीमा हो, जान हम उसे सकते हैं जो क्षुद्र हो। जान हम उसे सकते हैं जो हमसे छोटा हो। हमारी बुद्धि जिससे बड़ी हो, उसको हम जान सकते हैं।
परमात्मा को जानने की घोषणा नासमझी और पागलपन के सिवाय और कुछ भी नहीं है। जो व्यक्ति जैसे-जैसे जागता है और भीतर जाता है, और वह पाता है कि जीवन तो है अननोन। अननोन ही नहीं, अज्ञात ही नहीं, अननोएबल, अज्ञेय। और वह जानता है कि जीवन है अज्ञेय। और सत्य है अज्ञेय। और मैं हूं ना-कुछ। नहीं, ना-कुछ, शून्य। कौन जाने, मिट जाता है व्यक्ति। और उस मिटने में हो जाता है एक किसी जीवन के केंद्र के साथ। लेकिन तब वह घोषणा करने, चिल्लाने आता नहीं कि मैंने जान लिया है।
रामकृष्ण कहा करते थे, एक बार समुद्र के किनारे मेला भरा था। उसमें आदमी भी गए देखने और कुछ नमक के पुतले और पुतलियां भी गए। सच तो यह है कि मेलों में आदमी तो शायद ही जाते हों, पुतले-पुतलियां ही ज्यादा जाते हैं। तो नमक के पुतले भी उसको देखने चले गए। और नदी के किनारे, समुद्र के किनारे खड़े होकर विचार करने लगे कि कितना गहरा है यह समुद्र। एक नमक के पुतले ने कहा तुम ठहरो, मैं जाता हूं और अभी थाह का पता लगा कर आता हूं। वह नमक का पुतला उसी तरह का आदमी रहा होगा, जिस तरह आदमियों में नेतागण होते हैं। आगे चलने वाले लोग। वह भी एक लीडर एक नेता रहा होगा पुतलियों का, वह कूद पड़ा। लेकिन मेला उजड़ गया, दिन आए और गए, और वह पुतला वापस नहीं लौटा। बाकी पुतले थक गए और लौट गए। वह पुतला वापस नहीं आया बताने कि समुद्र कितना गहरा है? नमक का पुतला था समुद्र में गया तो खो गया। नमक पिघल गया और समुद्र के साथ एक हो गया। कौन लौटे और कहे कि मैंने जान ली समुद्र की गहराई, कि यह है गहराई!
जो लोग परमात्मा को खोजने जाते हैं, वे परमात्मा को तो नहीं पाते, खुद
को जरूर खो देते हैं। और वह जो खो देना है, वही परमात्मा का पा लेना है, लेकिन तब घोषणा करने वाला कोई अहंकार नहीं रह जाता कि मैंने पा लिया है।

लेकिन हम इसकी तलाश करते हैं कि कोई कहे, दावे के साथ कि मैंने पा लिया है। हम हैं इतने कमजोर लोग कि जब कोई जोर से टेबल ठोक कर कहता है कि मैंने पा लिया है तो हमारी हिम्मत नहीं पड़ती, हम सोचते हैं जब इतने जोर से कहता है, तो जरूर पा लिया होगा। इसलिए जिसको पा लेने की घोषणा करनी हो उसे धीरे- धीरे नहीं करनी पड़ती, बहुत जोर से करनी पड़ती है। और जब हमें लगता है कि यह आदमी इतने जोर से कह रहा है, तो इसने जरूर पा लिया होगा तो हम उसके पैर पकड़ते हैं और सोचते हैं कि शायद हमको भी दिलवा दे। भगवान से दोस्ताना है इसका, जैसे मिनिस्टरों से किसी का दोस्ताना होता है। कुछ न कुछ रास्ता बना देगा, कुछ रिश्वत की जरूरत होगी, तो हम करेंगे इंतजाम। भगवान की स्तुति करेंगे, प्रार्थना करेंगे कि हे पतित पावन! तुम महान हो, हम छोटे हैं, दया करो, कृपा करो। और इसकी बीच में दलाली होगी, यह बीच में रहेगा, कुछ इंतजाम हो जाएगा; कुछ करवा देगा। सारी गुरुडम हमारी इसी पागलपन पर खड़ी हुई है, सारे गुरुओं का धंधा हमारे इसी पागलपन पर खड़ा हुआ है।
मैं आपका गुरु नहीं हूं इसलिए मुझे यह दावा करने की कोई जरूरत नहीं है
कि मैंने आत्मा को पा लिया है, या ज्ञान को पा लिया। और न मैं आपका गुरु होना चाहता हूं। इसलिए आप बिल्कुल फिकर छोड़ दें कि मैंने पाया कि नहीं पाया। इसकी कोई भी खोज की जरूरत नहीं है। खोजें इस बात को कि आप कहां खड़े हैं? आप कहां हैं, किस चित्त की दशा में हैं? और उसे तोड़ें। और उसका प्रयास करें। नींद की स्थिति में हम हैं। और नींद टूटनी जरूरी है। बेहोश हम हैं, होश आना जरूरी है। उस संबंध में कुछ प्रश्न पूछे गए हैं।
कैसे यह होश आ जाए? कल मैंने इस संबंध में कुछ बातें आपसे कहीं हैं, शायद वे पूरी तरह स्पष्ट न हुई हों, तो दो बातें और अंत में आपसे कहूंगा। मैंने कहा, जाग्रत चित्त जीवन के प्रतिपल बाहर और भीतर सब तरफ होश से भरा हुआ चित्त चाहिए। कैसे हम होश से भरें? शुरुआत करें तो समझ में आएगा।
एक आदमी से हम कहें कि तैरना सीखना है, वह कहे कि तैरना मुझे सीखना
है। और हम उसे बताएं कि पानी में उतरना पड़ेगा तो वह कहेगा कि पहले मुझे यह बता दें कि तैरना है क्या? फिर मैं पानी में उतरूं। क्योंकि बिना तैरे पानी में मैं न उतरूंगा, खतरनाक है। पहले मैं तैरना सीख लूं फिर मैं पानी में उतरूंगा। तो हम उसको कहेंगे, तब तो बहुत कठिनाई हो गई। तैरना सीखने के लिए भी पानी में उतरना पड़ेगा। अगर कोई यह तय कर ले कि पहले मैं तैरना सीखूंगा फिर पानी में उतरूंगा, तो वह कभी तैरना नहीं सीख सकेगा। तैरना सीखने के लिए पहली जरूरत है कि पानी में उतरे। जरूरी नहीं है कि जाकर समुद्र में उतर जाए एकदम, उथले पानी में ही उतरे, लेकिन पानी में उतरे। जागरूकता क्या है? इसे बिना जागरूकता के प्रयोग किए ठीक-ठीक नहीं जाना जा सकता। थोड़ा उतरना पड़ेगा। मैं कितना ही कहूं उससे कुछ भी नहीं जाना जा सकता। लेकिन आप थोड़े से प्रयोग करेंगे, तो जरूर आप खुद जान सकेंगे। पहली बात, जीवन के सामान्य व्यवहार में जो भी कर रहे हैं, जो भी कर रहे हैं, सवाल नहीं है कि माला फेर रहे हैं, या पूजा कर रहे हैं, जो भी कर रहे हैं, उसे सोए-सोए न करें। उसे बेहोश-बेहोश न करें। उसे सचेत, जागते हुए, देखते हुए अत्यंत सावधानीपूर्वक, अटेंटिवली, स्मृतिपूर्वक कि मैं यह कर रहा हूं, यह हो रहा है, उसे इस भांति करें।
जैसे ही इसके प्रयोग करेंगे, छोटे-छोटे प्रयोग हैं, कोई हिमालय पर तो जाना नहीं है, रास्ते पर बंबई के चलते हैं तो होशपूर्वक चलें। इस बात का ध्यान रख कर चलें कि मैं चल रहा हूं। इस बात का बोध रख कर चलें कि मुझे खयाल है चलने का या नहीं, या कि मैं चला जा रहा हूं और मुझे पता ही नहीं है कि मैं चल रहा हूं। इसका बोध कि मैं चल रहा हूं, मेरा पैर उठ रहा है, मैं आगे बढ़ रहा हूं, इसका एक भीतरी बोध, इसका एक स्मरण, इसका एक खयाल, इसकी एक रिमेंबरिंग। भोजन कर रहे हैं तो इसका एक बोध कि मैं भोजन कर रहा हूं। कपड़े पहन रहे हैं तो इसका एक बोध कि मैं कपड़े पहन रहा हूं। शब्द नहीं देना है इसको कि आप कपड़े पहनते वक्त कहते रहें अपने मन में कि मैं कपड़े पहन रहा हूं, मैं कपड़े पहन रहा हूं, यह सवाल नहीं है। इस फीलिंग, इस भाव की, इस अनुभूति की कि मैं अब खाना खा रहा हूं, स्नान कर रहा हूं, इसका बोध, यह मुझे भूल न जाए। यह मेरी स्मृति में हो, यह मेरे खयाल में हो।

एक छोटी सी कहानी से समझ में आ सके शायद।
एक राजकुमार भिक्षु हो गया। उसने बुद्ध से दीक्षा ले ली। दीक्षा के दूसरे ही दिन वह नगर में भिक्षा मांगने को निकला। बुद्ध ने उससे कहा कि तू सदा राजकुमार रहा है, भीख मांगने की तुझे कोई आदत नहीं, थोड़े दिन रुक जा, फिर भीख मांगना, अभी तो मैंने एक परिवार में कह रखा है, तू वहां चले जाना, और वहां भोजन कर आना। मेरी एक श्राविका है, एक महिला है, जिसका मेरे प्रति आदर और प्रेम है, उससे मैंने कह रखा है, तू वहां जाना।
वह भिक्षु वहां गया। वह भोजन करने बैठा, भोजन करने जैसे ही बैठा, उसे खयाल आया, यह तो बड़े आश्चर्य की बात है, रास्ते में उसने सोचा था कि आज तो मैं भिखारी हो गया, पता नहीं क्या भोजन मिलेगा? उसे जो भोजन प्रिय थे उनकी याद आई थी। जैसे ही भोजन करने बैठा, देखा थाली में वे ही भोजन हैं, जो उसे प्रीतिकर थे, वह बहुत हैरान हो गया। सोचा शायद संयोग है। कोइंसीडेंस हो सकता है। मैंने सोचा वही भोजन बने होंगे। वह भोजन करके उठने को ही था कि तब उसे खयाल आया कि रोज तो मैं भोजन के बाद थोड़ा विश्राम करता था, आज विश्राम नहीं कर सकूंगा। आज तो फिर उठना है और जाना है, धूप में वापस आश्रम की ओर। वह महिला जिसने भोजन कराया था, सामने खड़ी थी, उसने कहा, भिक्षु जी अगर भोजन के बाद दो क्षण विश्राम कर लेंगे, तो मुझे बहुत आनंद होगा। फिर उसे थोड़ी सी हैरानी हुई, यही उसके मन में खयाल चलता था। लेकिन सोचा, संयोग की बात होगी, शिष्टाचारवश उसने कहा। वह लेट गया, चटाई डाल दी गई, वह लेटा ही था कि उसे खयाल आया कि आज न तो मेरा कोई घर है, न कोई शय्या है, न कोई साया है। अब सब पराया हो गया, कल तक सब मेरा था। वह श्राविका, वह महिला जाती थी, उसने लौट कर कहाः भंते, अगर बुरा न माने तो निवेदन करूं। न शय्या आपकी है, न मेरी है; न मकान आपका है, न मेरा है। हम मेहमानों से ज्यादा नहीं हैं इस जमीन पर। अब संयोग मानना बहुत कठिन था। अब तो बात सीधी हो गई थी, वह भिक्षु उठ
कर बैठ गया और उसने कहा क्या मेरे विचार तुम तक पहुंच जाते हैं? क्या मैं जो सोचता हूं, उसे तुम पढ़ लेती हो? उस श्राविका ने कहा, जब अपने विचारों को देखने की निरंतर कोशिश की, निरंतर-निरंतर अपने विचारों के प्रति जागी, तो बड़ी हैरानी हुई। खुद के विचार तो जागने और देखने के कारण धीरे-धीरे समाप्त हो गए और अब मन इतना ज्यादा संवेदनशील हो गया है कि पास में कोई भी कुछ विचार करता है तो उसके विचार पकड़ में आ जाते हैं। वह भिक्षु उठ कर, घबड़ा कर खड़ा हो गया। श्राविका ने कहाः लेटिए, विश्राम करिए, उसने कहा कि नहीं, उसने आंखें नीचे झुका लीं और वह दरवाजे से एकदम निकल भागा। समझ में भी न पड़ा कि बात क्या हो गई? श्राविका ने उसे कहा भी कि आप कैसे चले? लेकिन वह लौटा भी नहीं, उसने लौट कर धन्यवाद भी नहीं दिया।
उसने बुद्ध के पास जाकर कहा कि क्षमा करें, अब उस द्वार पर कल मैं भोजन करने न जा सकूंगा। बुद्ध ने कहा, क्यों? कोई भूल हुई। भोजन ठीक नहीं था? जिसके घर भेजा था, उन्होंने आतिथ्य नहीं किया? स्वागत नहीं किया? उसने कहाः नहीं, स्वागत पूरा हुआ। जो मुझे प्रिय था, वह मुझे मिला। बहुत भले लोग हैं वे, और जिस महिला ने मेरी वहां सेवा की वह अदभुत है, लेकिन वहां मैं दुबारा नहीं जा सकूंगा। बुद्ध ने कहाः कारण? उस भिक्षु ने कहाः कारण यह है कि वह महिला तो दूसरों के विचार पढ़ लेती है। और उस सुंदरी युवती को देख कर मेरे मन में तो और विकार उठे थे, वासना भी उठी थी, वह भी उसने पढ़ ली होगी। मैं कैसे उसको मुंह दिखाऊंगा? उसकी आंख में आंसू आ गए। उसने कहा कि क्षमा करें, उसने तो मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया, लेकिन मुझे क्या पता था कि वह विचार भी पढ़ लेती है? वह क्या सोच रही होगी कि मैंने उसके साथ कैसा व्यवहार किया? मन में तो मैंने न मालूम क्या-क्या सोचा? वह सब पढ़ लिया गया है, मैंने उसके साथ बहुत दुर्व्यवहार किया है। काश! मुझे पता होता कि वह विचार पढ़ती है, तो शायद मैं सचेत रहता। लेकिन मुझे तो यह कोई पता भी नहीं था।
बुद्ध ने कहाः तुम्हें कल भी वहीं जाना होगा, मैंने जान कर तुम्हें वहां भेजा है। नये भिक्षुओं को वहां भेजने की मेरी आदत है, पुरानी। और इसीलिए भेजता हूं वहां, ताकि तुम अपने भीतर सचेत होना सीख सको। तुम कल भी वहां जाना, घबड़ाओ मत। लेकिन आज तुम सोए हुए गए थे भीतर कि भीतर क्या हो रहा

है, तुम कोई खयाल ही नहीं कर रहे थे। कल तुम भीतर देखते हुए जाना कि भीतर कौन से विचार उठ रहे हैं? लेकिन जाना वहीं।
मजबूरी में उस भिक्षु को कल भी वहीं जाना पड़ा। उस भिक्षु की जगह थोड़ा अपने को रख कर सोच लेंगे तो आसानी होगी। आपको जाना पड़ रहा है। उस घर की तरफ जहां एक सुंदरी युवती आपके विचार पढ़ सकती है? आप कैसे जाएंगे उस घर की तरफ, सोए हुए जा सकते हैं? नहीं। भीतर एक चेतना होगी कि कौन सा विचार सरक रहा है, वह कहीं पढ़ न लिया जाए। जैसे-जैसे वह भिक्षु उस घर के पास पहुंचने लगा, भीतर जैसे रीढ़ सीधी हो गई। भीतर जैसे चित्त जग गया, भीतर जैसे सब नींद टूट गई। जैसे एक दीया जल गया। जब वह उसकी सीढ़ियों पर पहुंचा तो भीतर एकदम शांत और जागा हुआ था। एक-एक कदम उठा रहा था, तो उसे पता था। हृदय की धड़कन उसे सुनाई पड़ रही थी। कोई विचार सरकता था तो वह जागा हुआ था कि कहीं फिर कोई वैसा विचार खड़ा न हो जाए, देखूं क्या हो रहा है? वह भीतर प्रविष्ट हुआ, बैठा, उसने भोजन किया, उसने विदा ली। वह कल भागता हुआ, पीठ दिखा कर भागा था, आज वह नाचता हुआ वापस आया।
वह बुद्ध के पैरों पर आकर गिर पड़ा, बुद्ध ने पूछा क्या हुआ? उसने कहा
कि एक अदभुत घटना घट गई। मैं जानता ही नहीं था कि जागना क्या है? मुझे पता ही नहीं था, आप बार-बार कहते थे भीतर जागो, भीतर जागो, मेरी कुछ समझ में नहीं आता था कि यह भीतर जागो क्या है? आज मैंने पहली दफा देखा कि भीतर जागना क्या है? और न केवल मैंने यह जाना कि जागना क्या है, बल्कि मैंने यह भी देखा कि जब मैं भीतर बिल्कुल जाग गया, उसकी सीढ़ियों पर पहुंचा तो जैसे ही मैं जागता गया, वैसे ही विचार विलीन होते गए, समाप्त होते गए। और जब मैं पूरी तरह जागा हुआ था तो मेरे मन में कोई विचार नहीं था। एकदम शांति थी, एकदम साइलेंस था। और उस शांति में मैंने जो आनंद और अमृत अनुभव किया है, वह अकल्पनीय है, उसे शब्दों में कहना कठिन है।
बुद्ध ने कहा, मेरे मित्र जो सोता है, उसके मन में ही विचार चलते हैं,
जो जागता है उसके मन से विचार विदा हो जाते हैं। सोना ही विचार में होना है, जागना विचार के बाहर हो जाना है। जैसे एक घर हो, उस घर में कोई दीया न जलता हो भीतर, तो चोर उस घर की तरफ आकर्षित होते हैं, और एक घर हो जिसके भीतर दीया जलता हो तो चोर उस घर के प्रति आकर्षित नहीं होते।
बुद्ध ने कहाः जिस चित्त में जागरण का दीया जलता है, उसकी तरफ विचार
और वासनाएं आकर्षित नहीं होते और जिस चित्त में कोई दीया नहीं जलता और सब अंधेरा होता है और सोया हुआ होता है, तो वहां सब कुछ आकर्षित होता है और घर में न मालूम कौन-कौन से मेहमान, अनचाहे मेहमान निवास करने लगते हैं। हमारे भीतर भी अनचाहा बहुत कुछ निवास कर रहा है क्योंकि हम सोए हैं और हमारे भीतर का दीया बुझा हुआ है। यह दीया जग सकता है, लेकिन कोई और इसे नहीं जगाएगा। प्रत्येक को स्वयं उसे जगाना है। और प्रत्येक समर्थ है उसे जगाने में। और प्रत्येक की क्षमता है और प्रत्येक की संभावना है, जो भी श्रम करेगा, वह उस संभावना को वास्तविक बना लेता है।
इन तीन दिनों में इस छोटी सी बात को कहने के लिए ही मैंने सारी बातें कहीं कि आपके भीतर का दीया जल सकता है। एक मित्र ने अंतिम प्रश्न पूछा है कि मैं एक शब्द में कह दूं कि मेरा पूरा विचार क्या है? आप खुद भी वह शब्द सोच ले सकते हैं कि मैं क्या कहूंगा?
एक फकीर के पास जाकर किसी ने पूछा कि बहुत संक्षिप्त में बता दें कि आपका विचार क्या है, पूरा? तो उस फकीर ने कहाः जागो! उस व्यक्ति ने कहाः अभी मैं ठीक से नहीं समझा। आप एक शब्द और जोड़ें इसमें ताकि मैं समझ जाऊं। उसने दुबारा कहाः जागो! उस व्यक्ति ने कहाः मैं हैरान हूं, इससे मैं कुछ भी नहीं समझ रहा, आप एक शब्द, कुछ और थोड़ी व्याख्या कर दें। और उस फकीर ने तीसरी बार कहाः जागो! उसने कहाः इसमें और कोई व्याख्या की गुंजाइश नहीं है, इसमें कुछ जोड़ा नहीं जा सकता, बस यह एक शब्द है। बी अवेक! जागे हुए हो जाओ!
एक सूत्र में पूछा है, तो मैं आपसे यही कहता हूं, जागें। सोए हुए होना दुख है, जाग जाना आनंद है। सोए हुए होना नास्तिक होना है, जाग जाना आस्तिक होना है। सोए हुए कोई आस्तिक नहीं हो सकता। और जाग कर आज तक कोई नास्तिक

नहीं हुआ है। सोए हुए कोई सुखी नहीं हो सकता, और जागा हुआ आदमी आज तक दुखी नहीं देखा गया है। सोए हुए किसी के जीवन में संगीत नहीं हो सकता, सुगंध नहीं हो सकती, शांति नहीं हो सकती। जागा हुआ कोई आदमी बिना सुगंध के और बिना संगीत के और सौंदर्य के नहीं देखा गया है।
इतना ही निवेदन करता हूं, सोए हुए होना पाप है, किसी और के प्रति नहीं, अपने प्रति। और जो अपने प्रति पाप करता है, सोने का, उससे रोज सबके प्रति पाप होते हैं। जागना पुण्य है, धर्म है, किसी और के प्रति नहीं, अपने प्रति। और जो अपने प्रति धर्म से भर जाता है, उसका जीवन सबके प्रति धर्म से भर जाता है।
परमात्मा करे, और परमात्मा कहां से करेगा? आपके भीतर से, क्योंकि वहीं
वह है। जागने की एक लहर, एक अभीप्सा, एक प्यास पैदा हो जाए। वही प्यास प्रार्थना है, वही प्यास खोज है, इसकी प्रार्थना करता हूं।

मेरी बातों को चार दिनों तक बड़े प्रेम और शांति से सुना, जिसकी मैं कोई अपेक्षा नहीं करता हूं, आप प्रेम और शांति से सुनेंगे क्योंकि बहुत सी ऐसी बातें हो सकती हैं जो आपको अशांत करती हों और परेशान करती हों। और बहुत सी ऐसी बातें होती हैं जिनमें आपका मन होता है बजाय प्रेम से सुनने के पत्थर मार कर सुनें; लेकिन फिर भी इतने प्रेम और शांति से उन बातों को सुना, उससे बहुत-बहुत अनुगृहीत हूं। और अंत में सबके भीतर बैठे परमात्मा को प्रणाम करता हूं। मेरे प्रणाम स्वीकार करें।